



₹ 40.00

ISBN 978-81-237-5925-8

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया



# अजूबे

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'

चित्रांकन  
फजरुद्दीन



# अजूबे

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'

चित्रांकन  
फजरुद्दीन



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 978-81-237-5925-8

पहला संस्करण : 2010

दूसरी आवृत्ति : 2012 (शक 1933)

© लक्ष्मी खन्ना 'सुमन', 2010

Aajube (Hindi)

₹ 40.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

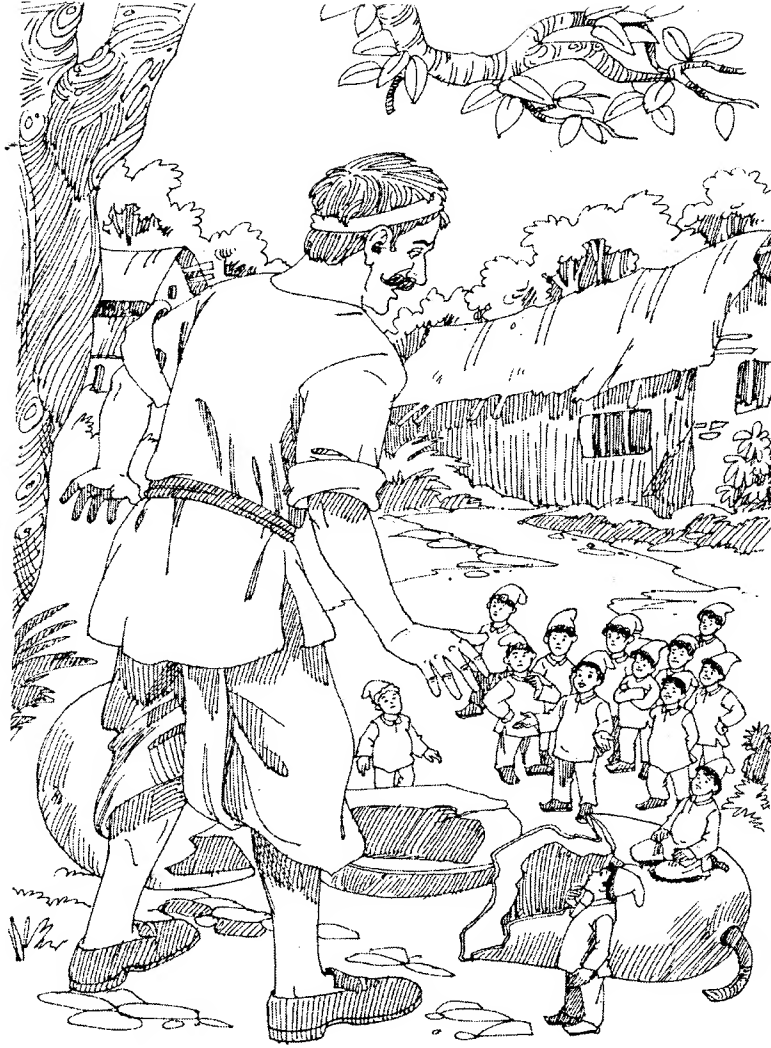
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

बात ज्यादा पुरानी नहीं है। एक किसान था—भोलू। भोलू के आलू के खेत में एक पौधा बहुत बड़े कद का हो गया। वह पौधा दिन पर दिन और बड़ा होता जा रहा था। भोलू की समझ में नहीं आ रहा था कि आलू के खेत में ऐसा पौधा कहां से आ गया और वह क्यों वैसा लंबा-चौड़ा होता जा रहा है। कुछ दिन बाद उस पौधे पर खूब बड़े-बड़े फूल आए, फिर वह पौधा पक कर सूख गया। भोलू ने उसे उखाड़ना चाहा तो वह उखड़ा ही नहीं। भोलू ने उसकी जड़ खोदी तो आलू की बजाय वहां एक बहुत बड़ा कद्दू निकला।

भोलू हैरान! आलू के खेत में इतना बड़ा कद्दू!! कैसे निकल आया? खैर उसने कद्दू को सावधानी से खोद कर बाहर निकाला। उसकी मिट्टी झाड़ी, फिर उसे उसने दोनों बांहों में उठा लिया और घर चल पड़ा। उसका घर खेत के पास ही था। शाम हो गई थी, जरा-जरा अंधेरा था। रास्ते में उसे एक पत्थर की हल्की-सी ठोकर लगी और उसके हाथ से कद्दू छूट कर नीचे गिर पड़ा। नीचे गिरते ही कद्दू टूट गया, परंतु नीचे तो अजीब नजारा था? कद्दू में से तेरह छोटे-छोटे, परंतु जरा मोटे, गिलहरी जितने बौने निकल आए। भोलू सहम कर पीछे हट गया।

उन बौनों में से एक जो कुछ बड़ा-सा लग रहा था, भोलू से बोला, “आप ही हमारे मालिक हो। आप जो भी हमें कहेंगे, हम वही करेंगे।”

भोलू उनको देख कर हैरान था, वह कुछ घबरा भी गया था।



“हटो, जाओ! जाओ!! कहीं और जाओ! तुम तो इतने छोटे-छोटे बच्चे हो। तुम लोग मेरा क्या काम करोगे?”

“परंतु हमारा घर तो आप का घर ही है। हम और कहां जाएं?”

भोलू चल पड़ा, तो उसके पीछे-पीछे वे बौने भी चलने लगे। वह

अपने घर के पास पहुंचा तो उसकी बीवी उन छोटे-छोटे गिलहरी जितने बच्चों को भोलू के पीछे-पीछे आते हुए देख कर हैरान रह गई।

“अरे-अरे! ये जीव कौन हैं? कहां से आए हैं? तुम्हारे पीछे-पीछे क्यों आ रहे हैं?” उसने भोलू से पूछा। भोलू ने उसको सारी बात बताई, कि कैसे ये सभी उसके खेत के एक कद्दू से निकले हैं।

भोलू के कोई बाल-बच्चा तो था नहीं! उसकी बीवी उन्हें देख कर खुश हो गई—

“वाह! कैसा संयोग है, कि ये तुम्हारे खेत के कद्दू से निकले हैं! मैं इन्हें अपने बच्चों जैसा ही रखूंगी। मेरा मन भी लगा रहेगा।”

तभी एक बौना बोला, “मालकिन! आप जो भी काम हमें कहेंगी, हम सभी वह काम करेंगे और आपके कहे बगैर भी कई काम, जो भी हमारे बस के होंगे, बहुत अच्छे ढंग से करेंगे, परंतु अभी तो हमें बहुत भूख लगी है।”

भोलू की बीवी ने उसे कहा, “नहीं, मुझे मालकिन मत बुलाओ। मेरा नाम गौरी है। तुम लोग मुझे गौरी मां कह कर ही बुलाओ तो मुझे अच्छा लगेगा।”

बौने भाई बोले, “गौरी मां! हमें भूख लगी है, कुछ खाने को दो।”

गौरी ने तेरह पत्ते तोड़ कर जमीन पर बिछा दिए, फिर हर पत्ते पर थोड़ा-थोड़ा दाल-भात रख दिया। पत्तों की ही छोटी कटोरियां बना कर उनमें पानी भर दिया।

“लो खाओ।”

सभी बौनों ने पहले हाथ-मुंह धोए, फिर सभी मजे से दाल-भात खाने लगे।

“और लोगे?”



“हां! हां!! जरा और दो ना गौरी मां! बहुत दिनों से हम ने कुछ नहीं खाया है।”

गौरी मां ने थोड़ा-थोड़ा दाल-भात और सब को दिया। सब ने पेट भर कर खाया। फिर गौरी मां ने सब को गुड़ के छोटे-छोटे टुकड़े दिए। सभी ने मजे से गुड़ खाया और सभी हाथ धोकर भोलू की चारपाई के नीचे सोने चल दिए। कुछ देर बाद भोलू और गौरी भी खाना खाकर सोने चले गए।

सवेरे जब जरा-सी रोशनी हुई और भोलू की आंख खुली, तो उसने चारपाई के नीचे देखा। वहां कोई भी नहीं था, “बौने भाई कहां चले गए?” वह सोचने लगा।

सभी बौने भाई पहले तो गौशाला गए। वहां उन्होंने बैलों के ऊपर चढ़ कर उनकी खूब मालिश की। बैलों को अच्छा लगा। गाय को भी अच्छी तरह सहलाया। सब ने मिल कर उनको अच्छा-सा गाना भी सुनाया। गाय ने खुश होकर जरा ज्यादा दूध दिया। बैलों ने भी अच्छा काम किया और मजे-मजे से बैलगाड़ी चलाई।

अगले दिन भी गाय-बैलों की सेवा करने के बाद बौने भाई बैलों के पीछे-पीछे चुपचाप भोलू के खेतों में पहुंच गए। उन्होंने चुन-चुन कर खेतों की घास निकाल दी और फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीड़े भी मार दिए। तीसरे-चौथे दिन उन्होंने गन्ने के पौधों के अंदर घुस कर, उनकी अच्छी तरह निराई-गुड़ाई कर दी और उन खेतों के चूहों को भी भगा दिया।

एक सप्ताह के अंदर ही भोलू की फसलें और सभी किसानों की फसलों से कुछ अलग ही दिखाई देने लगीं। बिल्कुल साफ-सुथरी फसलें! न कहीं घास-पात न कोई कीड़ा या चूहा। फसलों के नीचे गुड़ाई की हुई साफ जमीन!

गौरी बहुत खुश थी। उसने भोलू से कहा, “इन बौने भाइयों के बारे में किसी को भी कुछ मत बताना, वरना लोग इन्हें ले जाएंगे और न जाने इनके साथ क्या सलूक हो। ये तो अजूबे ही ठहरे।”

“हां! हां!! फिर कहां ये हमारा काम कर पाएंगे? तुम ठीक कहती हो! ये खुद भी तो सबसे छुप-छुप कर ही सारा काम करते हैं।” भोलू बोला।

गौरी ने बड़े प्यार से सबके लिये एक जैसे कपड़े तैयार किए। जब उसने उनको वे कपड़े पहनाए तो सभी एक जैसे दिखाई देने लगे। तब गौरी ने हर एक की जेब पर अलग रंग के धागे से निशान बना दिए, कि सभी अलग-अलग पहचाने जा सकें। फिर उसने सब को एक कतार में खड़ा करके सबके नाम रख दिए—

एकू, दोकू, तीकू, चारू, पांचू, छेकू, सातू, आठू, नौवू, दससू, ग्यारहू, बारहू, तेरहू।

इस तरह सभी अपना-अपना नाम पहचान गए और जिसको बुलाया जाता, वही जवाब देता।

जब भोलू की फसल पकी तो सभी बौने भाइयों ने मिल कर रात-रात में सारी फसल काट कर छोटे-छोटे गट्ठर बना दिए। फिर जब गट्ठर सूख गए और भोलू उन्हें खलिहान में ले आया तो बौनों ने रात-दिन लगा कर गट्ठरों से दानें अलग कर ढेर लगा दिया।

दूसरे किसानों की फसल तब तक पूरी कट भी नहीं पाई थी और भोलू की फसल कट कर, साफ होकर घर पहुंच गई। उसकी उपज भी सबसे अच्छी थी, क्योंकि खरपतवार, कीड़े, चूहों से कोई नुकसान नहीं हुआ था।

भोलू की फसल सबसे पहले मंडी पहुंची तो उसे फसल के दाम भी अच्छे मिले। गौरी भी बहुत खुश हुई। वह बौने भाइयों की सुविधा



का और भी ख्याल रखने लगी। उसने इस बात की भी एहतियात बरती कि बौने भाइयों के बारे में किसी और को पता न चले।

पड़ौसी किसानों की समझ में नहीं आ रहा था कि भोलू के घर में ऐसा क्या जादू हो गया है कि दिन पर दिन वह खुशहाल होता

जा रहा है, क्योंकि बौने भाई भोलू का सारा काम छुप-छुप कर या अंधेरे में ही करते थे और किसी को भी अपनी भनक तक नहीं लगने देते थे।

अब भोलू को कोई खास काम नहीं करना पड़ता था, फिर भी खुशहाली उसके घर अपने आप आ रही थी। धीरे-धीरे भोलू आलसी होता गया। दिन-रात खाता-पीता और सोता रहता।

गौरी को चिंता होने लगी कि ऐसे तो भोलू बिलकुल निकम्मा होता जाएगा और खा-खाकर मोटा होता जाएगा। उसे कई बीमारियां भी लग जाएंगी। उसने भोलू को समझाया कि वह कुछ कसरत वगैरह किया करे या खुद ही खेती का काम करे, परंतु बौने भाइयों के होते हुए वह क्यों काम करने लगा? कसरत से तो उसे नफरत थी। गौरी उसे समझा-समझा कर थक गई।

एक दिन गौरी मां ने सभी बौने भाइयों को बुलाया और कहा, “तुम सब लोग बहुत अच्छे हो। सभी मेहनत और लगन से काम करते हो। मुझे भी तुम बच्चों से बहुत लगाव हो गया है, लेकिन क्या करूं? तुम सभी के इतना अच्छा काम करने से भोलू तो दिन पर दिन निकम्मा और आलसी होता जा रहा है। मैं मानती हूं कि हम लोग खुशहाल हो रहे हैं, परंतु सभी को अपनी मेहनत की कमाई से ही खुशहाल होना चाहिए। अब भोलू काम करना पसंद ही नहीं करता है। इसलिए तुम सब को चुपचाप कहीं और चले जाना चाहिए।”

आगे वाला बौना भाई बोला, “अगर आप यही चाहती हैं, तो हमें जाना ही पड़ेगा। शायद आप लोगों का इतना ही साथ हमारी किस्मत में था, लेकिन हम खुद तो कहीं जा नहीं सकते हैं। आप ऐसा करें कि एक बड़े कदू में हमें बैठा कर दूर किसी और किसान के खेत में गाड़ दें। ईश्वर ने चाहा तो उसके खेत में भी जो पौधा

हमारे ऊपर उगेगा, वह बहुत बड़ा हो जाएगा। जब वह किसान कद्दू को खोद कर हमें निकालेगा तो इसी प्रकार हम उसके बन जाएंगे और उसी का काम करेंगे।”

गौरी उसकी बात सुन कर समझ गई कि भोलू के खेत में वह कद्दू कैसे आया होगा। अगले दिन गौरी मां ने एक बड़ा-सा कद्दू मंगवा लिया, फिर बीज निकाल कर सभी बौने भाइयों को उसमें बैठा कर ऊपर से अच्छी तरह बंद करके कद्दू को बैलगाड़ी पर रखवा दिया।

रात को जब भोलू सो गया, तो वह चुपके से गाड़ी हांक कर ले गई। उसने सोचा कि काफी दूर जाकर ही इस कद्दू को किसी के खेत में गाड़ना चाहिए, ताकि उन बौने भाइयों की खबर उसके गांव तक न पहुंचे।

वह चलती गई। करीब तीन घंटे चलने के बाद उसे एक नहर दिखाई दी। उसने बैलों को पानी पिलाने के लिए उस नहर के पुल के पास ही गाड़ी रोक दी। फिर उसने सोचा कि वहीं कहीं, आस-पास किसी के खेत में कद्दू को भी गाड़ दे। उसने उतर कर गाड़ी के पीछे से वह भारी कद्दू उठा लिया। घना अंधेरा था! जरा आगे बढ़ी कि उसका पांव एक खूंटे से टकराया और वह धड़ाम से मुंह के बल गिर पड़ी। हाथों से कद्दू छूट कर न जाने कहां नहर की ढलान में लुढ़क गया। गौरी बड़ी मुश्किल से उठी। यह अच्छा था कि उसे ज्यादा चोट नहीं लगी थी। वह अंधेरे में टटोलती हुई गाड़ी तक पहुंच गई। कद्दू और उसमें बैठे बौने भाइयों को उनकी किस्मत पर छोड़ कर वह वापस चल दी।

सुबह भोलू ने पूछा कि बौने भाई कहां हैं? तो गौरी बोली, “मैं भी सवेरे से उन्हीं को ढूंढ रही हूं! आस-पास तो कहीं भी दिखाई

नहीं दे रहे हैं! पता नहीं रात को बाहर कहां निकल गए। रात में मुझे कुछ अजीब-सी चीखने की आवाजें आ रही थीं! शायद आवारा कुत्ते उन्हें खा गए हैं।”

यह सुन कर भोलू को दुःख तो बहुत हुआ, परंतु वह क्या कर सकता था। झख मार कर उसको फिर से अपना सभी काम करना पड़ा। थोड़े दिनों में ही उसे फिर से काम करने की आदत पड़ गई और उसका स्वास्थ्य भी ठीक हो चला। यह देख कर गौरी को कुछ तसल्ली हुई। हालांकि उसे भी बौने बच्चों से बिछुड़ने का दुःख बहुत दिनों तक रहा।

इधर कद्दू लुढ़क कर एक पेड़ से टकराया जो उस कच्ची नहर के किनारे पर था। कद्दू टूटा तो उससे बौने भाई छिटक कर कुछ तो पानी में बह गए और कुछ शायद इधर-उधर चले गए। किसी को कुछ भी पता नहीं चला कि वे कहां पहुंच गए।

एक बौना भाई कुछ दूर बहने के बाद नहर के किनारे पर लगा। बड़ी मुश्किल से वह बाहर निकला। उसे दूर रोशनी दिखाई दी। वह उधर ही चल पड़ा। करीब एक घंटा चलने के बाद वह किसी छोटे शहर की एक गली में पहुंच गया। उसने एक सुंदर-से घर में पनाह लेने की सोची। थकान और भूख के मारे उसका बुरा हाल था। उसे घर के एक तरफ नाली दिखाई दी। उसी से होकर वह आंगन में पहुंच गया, फिर उसने सोचा कि रसोई में जाकर कुछ खा ले।

रसोई का दरवाजा उड़का हुआ था। वह दरार से होकर अंदर घुस गया। वहां कई तरह के खाने की चीजों की खुशबू तो आ रही थी, परंतु हर चीज अच्छी तरह प्लास्टिक के डिब्बों में या फ्रिज में बंद थी। उसने सारी रसोई घूम ली, परंतु नमक, मिर्च, चाय पत्ती

आदि के अलावा कुछ भी खाने की चीज खुली नहीं मिली। वह बाहर आ गया।

फिर वह एक कमरे में घुस गया। यह कमरा एक छोटी लड़की का था। लड़की मजे से सो रही थी। उसकी बगल में पानी का गिलास था। दूसरी ओर टेबल पर मिठाई का डिब्बा पड़ा था। “वाह! मजा आ गया!” उसने सोचा। वह टेबल पर चढ़ गया और गते का डिब्बा खोल कर मजे से मिठाई खाने लगा।



उसे प्यास भी लग आई। वह दूसरी तरफ पानी के गिलास के पास पहुंचा, लेकिन गिलास से आधा-पौना इंच नीचे तक ही उसका सिर रह गया। पानी पीए तो कैसे? अगर पानी पीने की ज्यादा कोशिश की तो कहीं गिलास गिर ही न जाए और सारा पानी बिखर जाए।

वह दूसरे कमरे में गया। वहां लड़की के मम्मी-पापा सो रहे थे। पापा की बगल में माचिस और सिगरेट की डिब्बी पड़ी थी। वह माचिस और सिगरेट की डिब्बी बारी-बारी उठा लाया। फिर उसने गिलास के पास पहले मिठाई के डिब्बे का ढक्कन उलटा करके रखा, फिर उसके ऊपर सिगरेट की डिब्बी और उसके ऊपर माचिस की डिब्बी रख कर सीढ़ी-सी बना ली। फिर वह माचिस के ऊपर चढ़ गया। अब उसका सिर तो गिलास से जरा ऊपर था, परंतु गिलास में पानी कुछ नीचे था। कैसे पीए? वह नीचे उतरा और उस लड़की का रूमाल उठा लाया, फिर माचिस पर चढ़ कर गिलास में रूमाल को लटका दिया। रूमाल भीग गया तो उसने उसे खींच कर बाहर निकाला और मुंह से निचोड़ कर पानी पीया। इस तरह उसने चार-पांच बार ऐसा ही किया, तब जाकर उसकी प्यास बुझी! फिर वह छोटी लड़की के पैरों की तरफ जरा-सा कंबल हटा कर सो गया।

सुबह लड़की उठी। वह उठ कर पहले पानी पीती थी। जैसे ही उसने गिलास की तरफ हाथ बढ़ाया, तो देख कर हैरान रह गई, कि गिलास के पास मिठाई के डिब्बे का ढक्कन और उसके ऊपर सिगरेट की डिब्बी तथा माचिस रखी थी। साथ ही उसका थोड़ा भीगा हुआ रूमाल भी था।

लड़की की समझ में कुछ नहीं आया कि ऐसा कैसे हो गया। उसने सोचा कि जाकर पापा से पूछती है, तभी पापा की बाहर से



आवाज आई। अरे भाई! मेरी सिगरेट-माचिस कौन ले गया है?

लड़की ने जैसे ही कंबल हटाया तो उसे पैरों की तरफ एक छोटा-सा बौना सोता हुआ दिखाई दिया। वह घबरा कर नीचे कूदी। तभी बौने भाई की नींद खुल गई। उसने होंठों पर उंगली रख कर लड़की को चुप रहने का इशारा किया। फिर उसने उठ कर उस लड़की को पास बैठने के लिए कहा। लड़की हैरान-सी उसके पास बैठ गई। तब बौने भाई ने अपने बारे में उसे बताया।

वह फिर बोला, “हम सभी भाई बहुत मुसीबत में हैं। आप हमारी मदद करो और हमें एक-दूसरे से मिलवाओ। हम पर आपका बहुत एहसान होगा, परंतु हमारे बारे में प्लीज! किसी और को मत बताना, नहीं तो हमारा न जाने क्या हाल होगा?”

लड़की ने सोचा कि यह ठीक ही कह रहा है। इतने छोटे-से बौनों को तो कोई 'लैब' में ले जाकर रिसर्च करना चाहेगा, कोई चिड़ियाघर में रखना चाहेगा या कोई इनके साथ कुछ और तमाशा करना चाहेगा। इतना तो तय है कि फिर ये लोग आराम से नहीं रह पाएंगे।

वह फिर बोला, “मुझे अपने साथ ही रख लो! मैं आपकी बहुत सेवा करूंगा।”

“अरे, तुम इतने छोटे हो! तुम भला मेरी क्या सेवा कर सकते हो? और तुम लोग कितने भाई हो?”

“हम लोग तेरह भाई हैं और एक हादसे में बिछड़ गए हैं। मैं आपके सिर की मालिश कर सकता हूँ। अगर आपके सिर में जुएं हों, तो उन्हें भी निकाल सकता हूँ। आपके हाथ-पैर दबा सकता हूँ।”

लड़की हैरानी से उसकी बातें सुनती रही।

वह फिर बोला, “आपका ड्रेसिंग टेबल जो ऐसा बिखरा-सा है,

उसकी हर चीज करीने से लगा दूंगा। आपकी सभी कॉपी, किताबें ठीक तरह से लगा दूंगा।”

लड़की को उसकी बातें सुनकर पर मजा आ रहा था। वह बोली, “अच्छा और क्या-क्या कर सकते हो?”

“इसी तरह साफ-सफाई के और भी कई काम कर सकता हूँ। आपके घर के गमलों के पौधों की गुड़ाई, सफाई भी कर सकता हूँ। पहले भी हम एक किसान दादा के घर उसकी खेती-बाड़ी का काम चुपके-चुपके किया करते थे। पहले तो वे लोग बहुत खुश थे। उन्होंने हमारे बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। फिर न जाने क्यों किसान की बीवी को जिसे हम गौरी मां कहते थे, यह अच्छा नहीं लगा कि हम किसान का सारा काम करें। इससे वह निकम्मा और आलसी हो जाएगा। तब वह हमारे ही कहने पर हमें एक कद्दू में भर कर किसी और किसान के खेत में गाड़ने के लिए ले जा रही थी कि कद्दू उसके हाथ से छूट कर टूट गया। पास ही पानी की नहर बह रही थी। कद्दू टूटा तो रात के अंधेरे में हम सब भाई बिखर गए। ऐसे ही मैं भी नहर में बह कर किनारे लगा और चल कर इधर आ पहुंचा।”

लड़की हैरानी से उसकी बातें सुनती रही, फिर उसने सोचा कि यह बौना भाई तो उसका एक अच्छा साथी बन सकता है! उसका और कोई भाई-बहन तो था नहीं। वह बोली—

“ठीक है, तुम यहीं रहो। मैं अपनी तरफ से किसी को कुछ नहीं कहूंगी, परंतु तुम अपना ख्याल रखना।”

उसने चुपके से सिगरेट और माचिस की डिब्बी को पापा के कोट की जेब में डाल दिया। फिर वह बाथरूम चली गई। उसने बौने भाई को भी बाथरूम भेजा।



कुछ देर बाद वह स्टोर में गई, जहां उसके पुराने खिलौने तब भी पड़े थे। वह ढूंढ कर एक गुड़िया का घर और उसके छोटे-छोटे बरतन ले आई और कमरे की अलमारी के निचले खाने में वे जमा करके रख दिए। वह गुड़डे-गुड़ियों के छोटे-छोटे कपड़े, रजाई-चादर आदि भी ले आई। फिर उसने बौने भाई से कहा—

“अब तुम्हारा घर इस अलमारी में ही रहेगा। मैं कभी भी अलमारी पूरी तरह बंद नहीं करूंगी, जब भी कोई मेरे कमरे में आए तो तुम इसी में छुप कर बैठ जाया करना। वैसे मेरे कमरे में जहां भी तुम चाहो घूम सकते हो।”

“ठीक है दीदी!”

“अभी थोड़ी देर में मैं स्कूल चली जाऊंगी। फिर शाम को चार बजे तक वापस आऊंगी, तुम्हारे खाने-पीने का सामान यहीं रख दूंगी।”

बौने भाई को तो मन चाही मुराद मिल गई थी। वह बोला, “दीदी! आप मेरे खाने-पीने की फिक्र मत करो। मैं चुपके से रसोई में जाकर अपने खाने का इंतजाम कर लूंगा। आप तो बस यह बताओ कि यहां कोई कुत्ता या बिल्ली तो नहीं है?”

“खैर कुत्ता तो हमारे घर में नहीं है! हां! बिल्ली जरूर कभी-कभी आ जाती है। तुम अपना ध्यान रखना।”

वह फिर बोली, “हां! मेरा नाम रीमा है। तुम मुझे रीमा दीदी कह कर बुला सकते हो। मुझे अच्छा लगेगा, परंतु मैं तुम्हें क्या कह कर बुलाऊं?”

“मेरा नाम गौरी मां ने तीकू रखा है। तुम वही बुलाओ तो ठीक रहेगा।”

“तीकू! अच्छा मैं तुम्हें तीकू ही बुलाऊंगी। तुम्हारे लिए कुछ बिस्कुट, नमकीन और एक केला रख जाऊंगी। बाकी जैसा तुम ठीक समझो! अच्छा बाय।”

यह कह कर रीमा चली गई।

स्कूल में भी रीमा, तीकू के बारे में ही सोचती रही। उसे अपने में ही इस तरह खोई हुई देख कर उसकी सबसे करीबी सहेली राधा ने पूछा—

“क्या बात है रीमा! तुम कुछ खोई-खोई सी लग रही हो। क्या सोच रही हो?”

“नहीं कोई बात नहीं! बस ऐसे ही।”

रीमा के मन में बार-बार यह बात आ रही थी कि वह किसी को अपना राजदार बनाए और उसे तीकू की बात बताए, परंतु फिर तीकू की बात याद आ जाती कि उसका राज हर किसी पर खोलना ठीक नहीं रहेगा। कुछ देर तो वह कशमकश में रही। फिर वह अपने को रोक नहीं पाई और उसने राधा को तीकू के बारे में बता ही दिया।

राधा भी पूरा किस्सा सुन कर हैरान रह गई। वह अपनी आंखों से तीकू को देखना चाहती थी। उसने रीमा से कहा कि वह शाम को ही उसके घर आएगी। रीमा भी यही चाहती थी। उसने कहा, “जरूर आना।”

शाम को राधा एक चॉकलेट लेकर रीमा के घर गई। राधा के वहां आते ही दोनों रीमा के कमरे में घुस गईं। तीकू झट से अलमारी में छुप गया। रीमा ने उसे बुलाया, “अरे तीकू! बाहर आ जाओ। यह मेरी पक्की सहेली राधा है। उसको मैंने तुम्हारे बारे में सब बता दिया है और वह भी तुम्हारी बात किसी को नहीं बताएगी। आओ, बाहर आ जाओ।”

तीकू झिझकता-झिझकता बाहर आ गया। उसे देख कर राधा के मुंह से निकला—

“हाय मां! इतना नन्हा-सा, प्यारा-सा बच्चा! मैं तो तुम्हारी बात पर यकीन ही नहीं कर सकी थी।”

“जब तक खुद देख न ले, कोई भी इस बात पर यकीन नहीं कर पाएगा।”

“आओ! आओ!! क्या नाम बताया? तीकू...हां तीकू भाई! इधर आओ। मैं तुम्हारे लिए चॉकलेट लाई हूं।”

तीकू आगे बढ़ आया। राधा ने चॉकलेट का एक नन्हा-सा टुकड़ा तीकू को दिया। बाकी चॉकलेट दोनों सहेलियों ने खा ली।



“क्या तुम मेरे पास आना चाहोगे?” राधा ने पूछा।

तीकू चुप रहा तो रीमा बोली, “हां-हां क्यों नहीं आएगा।”

“आओ तीकू!”

राधा ने तीकू को हाथ में उठा लिया और उसके नैन-नक्श देखने लगी, “अरे! सब कुछ तो छोटे-से बच्चे जैसे हैं।”

“तभी रीमा की मम्मी कुछ खाने के लिए लेकर अंदर आ गई।

राधा ने झट से तीकू को अपने कोट की जेब में डाल लिया। रीमा की मम्मी ने उनकी चुप्पी देख कर पूछा, “आज क्या पक रहा है दोनों सहेलियों में?”

“कुछ भी तो नहीं मम्मी! बस यूं ही स्कूल की बातें चल रही थीं।”

“अच्छा, अच्छा! तो यह खाओ।”

रीमा की मम्मी वापस चली गई तो राधा ने फिर से तीकू को बाहर निकाल कर खेलने के लिए छोड़ दिया। फिर थोड़ी देर में राधा अपने घर चली गई।

इस तरह तीकू रीमा के साथ घुल-मिल कर रहने लगा। रीमा भी उसके साथ खुश थी। वह उसके कमरे का हर छोटा-मोटा सामान भी करीने से रख देता था।

एक शाम रीमा कहीं बाहर जाने के लिए बहुत अच्छी तरह तैयार हो रही थी, तो तीकू ने पूछा, “क्या बात है दीदी! आज कहां की तैयारी है?”

“आज मेरी एक सहेली के जन्मदिन की पार्टी है। वहीं जा रही हूं।”

“क्या राधा दीदी का जन्मदिन है?”

“नहीं! नहीं!! एक और सहेली का है। तू उसे नहीं जानता।”

“दीदी! मुझे भी पार्टी में ले चलो ना! मैं आपकी जेब में ही रहूंगा। बस जरा-सा झांक कर देखता रहूंगा। कितने दिन हो गए, यहीं बंद हूं! कहीं गया ही नहीं!”

“चल तू भी क्या याद करेगा! तुझे ले चलती हूं, परंतु तुझे ले जाने के लिए इस अच्छी ड्रेस के ऊपर कोट पहनना पड़ेगा।”

“कोट भी अच्छा लगेगा दीदी!”

“अच्छा! अच्छा!! ज्यादा चापलूसी मत कर! हां! भूल कर भी बाहर मत निकलना।”

“इतना पागल नहीं हूं मैं!”

रीमा ने उसे कोट की बाहर की जेब में रखा और पार्टी में पहुंच गई।

पार्टी में पहले तो गपशप हुई, उसके बाद केक कटा, कुछ खाना पीना हुआ, फिर म्यूजिक के साथ डांस का दौर शुरू हो गया।

रीमा भी झूम-झूम कर नाचने लगी। तीकू ने जरा बाहर झांकने की कोशिश की, कि उसी समय रीमा डांस करते-करते जरा नीचे झुकी तो तीकू महाराज नीचे गिर पड़े। यह तो अच्छा रहा कि सभी अपने नाचने की धुन में थे। किसी को कुछ भी पता न चला, परंतु इतनी सारी नाचती-कूदती टांगों के बीच से गुजर कर जाना कोई हंसी-खेल नहीं था। बड़ी मुश्किल से तीकू बचता-बचाता एक तरफ अंधेरे में चला गया। उसने सोचा, दीदी को आवाज देना ठीक नहीं है। दीदी को जब पता चलेगा कि वह उसकी जेब में नहीं है, तो वे खुद ही उसे ढूँढ लेंगी। रीमा तो डांस में ऐसी मस्त थी कि उसे कुछ पता ही नहीं चला।

रात, रीमा को याद ही नहीं रहा कि तीकू उसकी जेब में था। वह एक सहेली की कार में बैठ कर घर चली गई।

घर आकर जब वह कमरे में पहुंची और उसने अपनी जेब में हाथ डाला, तब उसे पता चला कि तीकू तो जेब में है ही नहीं। उसका दिल धक से रह गया। न जाने तीकू पर क्या बीत रही होगी। अब क्या करे? उतनी रात में वापस उस सहेली के घर जा भी नहीं सकती थी और न ही टेलीफोन कर सकती थी, कि टेलीफोन से तो तीकू का सभी को पता चल जाएगा। क्या करे?

सारी रात उसने इसी उधेड़बुन में काटी। सवेरे आठ बजे उसने अपनी सहेली को फोन किया, “हेलो! मैं रीमा बोल रही हूं।”

“हां! हां!! क्या बात है?” उस सहेली ने पूछा

“अरे मेरी एक चीज तुम्हारे घर रह गई है।”

“क्या रह गया? हमें तो कुछ नहीं मिला!”

यह सुन कर रीमा की जान में जान आई कि किसी को तीकू का पता नहीं चला।

“मैंने अपने ‘इयरिंग’ तुम्हारे घर, एक जगह छुपा कर रखे हैं। मैं नौ बजे आकर ले लेती हूं।”

“ठीक है!” उसकी सहेली ने कहा। “कहां रखे हैं? मैं ढूंढ लेती हूं।”

“नहीं तुम्हें नहीं मिलेंगे।”

यह कह कर उसने टेलीफोन रख दिया।

उधर तीकू का बुरा हाल था। जब पार्टी खत्म हो गई और एक-एक कर सभी चले गए, तो उसकी रुलाई फूट पड़ी। क्या करे, कैसे रीमा दीदी के पास पहुंचे? वह चुपचाप उसी दीदी के कमरे में चला गया और उसके पलंग के नीचे, आंखें बंद करके बैठा ऊंघता रहा। उसकी रात भी सोते-जागते ही कटी।

सुबह ही एक महिला उसके कमरे में झाड़ू देने आ गई। पहले तो वह दूसरी जगह झाड़ू देती रही, फिर पलंग के नीचे झाड़ू देने वाली थी कि बड़ी मुश्किल से उसकी नजर बचा कर तीकू मेज के नीचे चला गया, जहां वह महिला झाड़ू दे चुकी थी। वह वहीं बैठा-बैठा ऊंघने लगा। कुछ देर बाद उसे रीमा दीदी की आवाज सुनाई दी। वह उस सहेली से बातें कर रही थी। उसका दिल बल्लियों उछलने लगा।

जरा देर बाद रीमा अपनी सहेली के साथ उसके कमरे में आ गई और वह झूठ-मूठ, किताबों में से अपने इयरिंग, जो पहले ही उसके हाथ में थे, निकाल कर उस सहेली को दिखाने लगी कि रात उसने उसी जगह अपने इयरिंग रख दिए थे, क्योंकि उसके कान दर्द कर रहे थे। फिर वे पलंग पर बैठ गईं।

तभी तीकू मेज के नीचे से निकल कर चुपके से रीमा के पास आ गया और उसने रीमा की टांग में चिकोटी काटी। रीमा समझ गई, कि वह तीकू ही होगा। उसने झट से खुजली करने के बहाने उसे उठा कर अपनी जेब में रख लिया। उसकी सहेली को कुछ पता नहीं चला।

“अच्छा, चलती हूं! स्कूल के लिए देर हो रही है।” रीमा बोली, “रात पार्टी में खूब इन्जॉय किया! थैंक्स।”

फिर रीमा ने घर जाकर तीकू को अपने कमरे में छोड़ दिया और स्कूल चली गई। शाम को राधा फिर रीमा के घर तीकू से मिलने आई। दोनों सहेलियों ने तीकू से फिर से उसकी पुरानी बातें पूछीं।

“हाय बेचारा! कहां-कहां से भटक कर इतनी दूर मेरे घर पहुंचा है! शायद ईश्वर की यही मर्जी होगी, तभी तो यह मुझे इतना अच्छा लगता है।”





“हां मुझे भी उससे मिलना बहुत अच्छा लगता है। कभी-कभी मैं भी इसे अपने घर ले जाऊंगी।”

“नहीं, तुम्हारे घर नहीं। ऐसे तो किसी और को भी उसके बारे में पता चल सकता है। इसका यहीं रहना ठीक है। तुम जब चाहो आकर इससे मिलो, खेलो, परंतु हमें इसके भाइयों को भी तो ढूंढना

है। कैसे ढूंढा जाए?” रीमा बोली।

“और हां, इसके लिए कपड़े भी तो बनवाने हैं।”

“चल, कल स्कूल के बाद इसके कपड़े सिलवाने के लिए पास वाले दर्जी के पास चलेंगे।”

“और दर्जी से कहेंगे क्या?”

“अपना एक गुड़डा ले जाएंगे, जो इसके बराबर ही है! फिर दर्जी से कहेंगे कि हमें इसका ब्याह एक सुंदर गुड़िया से करना है, इसलिए इसके सुंदर-सुंदर कपड़े बना दे। उसे क्या पता चलेगा कि हम किसके लिए कपड़े बनवा रहे हैं।

“हां! हां!! यही ठीक रहेगा।”

“तो ठीक है! कल स्कूल से आने के बाद तुम मेरे घर आ जाना।”

“अच्छा!”

फिर राधा अपने घर चली गई।

अगले दिन इतवार था। राधा दस बजे ही रीमा के घर पहुंच गई। रीमा और राधा अपना एक गुड़डा लेकर पास वाले दर्जी के पास गईं और बोलीं—

“चचा! हमने कपड़े सिलवाने हैं।”

“अरे बेटी! मैं लड़कियों के कपड़े नहीं सिलता।”

“नहीं! नहीं!! हमने अपने लिए नहीं, इस गुड़डे के लिए अच्छे-अच्छे कपड़े सिलवाने हैं। इसका ब्याह एक सुंदर गुड़िया से अगले हफ्ते होगा।”

यह सुन कर दर्जी चचा हंस पड़े, “अच्छा! अच्छा!! यह बात है, परंतु ढूँढे के कपड़े सिलाने के लिए तो मैं बहुत ज्यादा पैसे लेता हूं।”

“चचा! आप कपड़े तो सिलें। आप जो कहेंगे, हम देंगी।”

“तो यह समझ लो, हम सभी को बाराती बनाना होगा और सबकी खूब खातिरदारी करनी होगी।”

“चचा! खातिरदारी तो लड़की वाले करेंगे, हां...अगर आप लोग बारातियों जैसे जचे तो अपने गुड्डे की बारात में जरूर ले जाऊंगी।” रीमा बोली।

यह सुन कर दुकान के सभी वर्कर हंस पड़े।

“अरे भाई! फिर तो सभी के नये-नये अच्छे कपड़े बनवाने पड़ेंगे। यह सौदा तो बहुत महंगा पड़ेगा।” चचा बोले, “परंतु तुम्हारे गुड्डे के लिए अच्छी ड्रेसें तो सिलनी ही पड़ेंगी। तुम परसों आकर कपड़े ले जाना। मेरे पास अच्छी-अच्छी कतरने पड़ी हैं। बहुत अच्छी ड्रेस बनेगी।”

“चचा! कम-से-कम तीन ड्रेसें तो जरूर चाहिए।”

“बिटिया! मैं चार ड्रेसें बना दूंगा। मुहल्ले की इज्जत का सवाल है।”

यह सुन कर सभी मुस्करा दिए।

“ठीक है चचा! बहुत-बहुत शुक्रिया।”

तीसरे दिन ही वे दर्जी चचा से तीकू की ड्रेसें ले आईं। तीकू तो उन्हें पहन कर इतना खुश हुआ कि इधर-उधर नाचता रहा। दोनों सहेलियां भी खुश थीं। फिर दोनों बातें करने लगीं कि कैसे तीकू के और भाइयों को ढूंढा जाए। तभी राधा बोली, “मुझे एक आइडिया सूझा है।”

“क्या...क्या! बताओ?”

“देखो, जैसे हम लोग तीकू के लिए दर्जी चचा से कपड़े सिलवा कर लाई हैं, वैसे ही इसका कोई और भाई अगर किसी और के



पास यहीं कहीं होगा और वह भी उसके लिए किसी दर्जी के पास उसके कपड़े सिलवाने गया होगा, तो और दर्जियों से पूछ कर शायद हमें उसका पता चल जाए।”

“आइडिया तो कुछ ठीकठाक ही है, परंतु ट्राई करने में हर्ज ही क्या है?”

“तो ठीक है, इतवार को यही करते हैं। आस-पास के दर्जियों से पूछ लेते हैं।”

इतवार के दिन रीमा और राधा ने तीकू के भाई को ढूँढने के लिए पास वाले बाजार के कई दर्जियों की दुकानों पर गईं। एक दर्जी से बोलीं, “हमारी गुड़िया बहुत सुंदर है, हम उसका विवाह ऐसे गुड्डे से करना चाहती हैं, जो अच्छी सुंदर ड्रेस पहनता हो और जरा सोबर पढ़ा-लिखा लगे। अंकल! आप हमें यह बताएं कि आपके पास कोई लड़की अपने गुड्डे की ड्रेस बनवाने तो नहीं आई थी?”

बूढ़े दर्जी ने उनकी मासूमियत पर हंसते हुए कहा, “नहीं तो हमसे ड्रेस बनवाने तो कोई लड़की नहीं आई, परंतु जब गुड़िया की शादी करो तो हमें जरूर बताना। हम तुम्हारी गुड़िया के लिए अच्छी ड्रेस बनवा कर तोहफे में देंगे।”

वे दोनों भी मुस्करा कर दूसरे दर्जी के पास चल दीं, “अंकल! हमें अपनी गुड़िया की ड्रेस सिलवानी है। क्या आप गुड्डे-गुड़ियों की ड्रेस भी सिलते हैं?”

“क्यों मुन्नी! क्या तुम्हारे जन्मदिन का ‘फंक्शन’ है? हमने आज तक तो नहीं सिली, परंतु तुम्हारे लिए सिल सकते हैं, अगर तुम अपने जन्मदिन का केक खिलाओ।”

“नहीं! नहीं!! मेरा जन्मदिन नहीं है। अच्छा, मैं अपनी गुड़िया को लेकर आऊंगी।”

फिर वे आगे चल दीं।

“भाई! यह काम तो बहुत अजीब है! सभी हमारा मजाक बनाते हैं।”

“अरे, तो क्या हो गया? जरा वे भी अपनी बोरियत दूर कर लेते हैं।”

“बस दो और दर्जियों से पूछेंगे।”

अगले दर्जी ने बताया, “हां! हां!! बिटिया! एक मुन्नी आई तो थी, हमारे पास अपने गुड्डे की ड्रेस बनवाने। कहने लगी कि इस गुड्डे का जन्मदिन मनाना है। अच्छी-सी चार ड्रेसें सिल दें।”

“अच्छा, फिर?” रीमा ने उत्सुकता से पूछा, “तो क्या आपने ड्रेसें बना दी थीं? कौन थी वह लड़की? हम अपनी गुड़िया की उसके गुड्डे से शादी की बात चलाना चाहती हैं।”

“हां! हमने बहुत अच्छा पजामा-कुरता, पैंट और कमीजें बना दी थीं।”

“अच्छा, परंतु वह लड़की रहती कहां है?”

“उधर बाजार के कोने वाले मकान की पहली मंजिल पर। क्या नाम है उसके पापा का...? हां! हां!! सुदर्शन साहब।”

“ठीक है चचा! अगर बात पक्की हो गई तो आपको भी दावत में बुलाएंगे।” हंस कर रीमा ने कहा तो सभी हंसने लगे।

रीमा ने राधा से कहा, “अभी दिन के बारह बजे हैं। आज इतवार को ही तीकू के भाई को ढूँढ लेना चाहिए।”

जल्द ही वे उस मकान पर पहुंच गईं, जहां वह गुड्डे वाली लड़की रहती थी। उन्होंने घंटी बजाई तो एक आंटी ने दरवाजा खोला।

“नमस्ते आंटी! क्या हमारी सहेली अंदर है?”

“कौन सुकन्या?”

“हां! हां!! नहीं तो और कौन?”

“अरे बेटी! उसके पांव तो घर में टिकते ही नहीं हैं! कह कर

तो गई थी, कि बाजार जा रही है, परंतु मैं जानती हूं किसी सहेली के घर से खाना-वाना खाकर ही शाम को लौटेगी। आओ, आओ! भीतर आओ। मैंने तुम लोगों को पहचाना नहीं।”

“नहीं! नहीं!! हम चलती हैं। सुकन्या से कहिएगा कि उसकी दो पुरानी सहेलियां आई थीं। वे शाम को छह बजे फिर आएंगी।”

“कौन सहेलियां? अपना नाम तो बताओ। मैं उसे क्या बताऊंगी?”

“नहीं! नहीं!! आंटी! हम उसे 'सरप्राइज' देना चाहती हैं। आप उसे बस यह कह दें कि शाम छह घर पर ही रहे।”

“ठीक है।”

फिर दोनों रीमा के घर चल दीं। राधा ने अपने घर टेलीफोन कर दिया कि वह रीमा के साथ उसके घर पर ही पढ़ाई करेगी और रात को ही वापस आएगी।

घर आते ही दोनों रीमा के कमरे में घुस गईं। अपना खाना भी उन्होंने वहीं मंगवा लिया।

उन्हें देख कर तीकू भी चहकता हुआ बाहर आ गया। उसे देख कर राधा बोली, “तुम्हारे लिए एक खुशखबरी है।”

तीकू कुछ-कुछ तो समझ गया कि उसके भाई के मिलने के अलावा उसके लिए और खुशखबरी क्या हो सकती है, फिर भी उत्सुकता से बोला, “हां, हां! बताओ दीदी!”

“शाम तक शायद हम लोग तुम्हारे एक भाई से तो मिल ही लेंगे।”

“अरे वाह! मुझे भी साथ ले चलना।”

“नहीं, नहीं! अभी नहीं। न जाने वह लड़की कैसी हो? हमारे साथ कैसा व्यवहार करे? कहीं तुम्हारे बारे में भी सभी को बता न



दे। पहले हम तुम्हारे भाई को मिल लें, फिर तुम्हें भी उससे जरूर मिलवाएंगे।”

“बस अपनी 'फिंगर्स क्रॉस' रखना।” रीमा बोली।

“आपने कैसे उसका पता लगाया?” तीकू ने फिर उत्सुकता दिखाई।

“अरे भाई! तुम्हारी रीमा दीदी तो बड़ी जासूस हो गई हैं और मैं उसकी 'असिस्टेंट'।” राधा बोली, “देखना, हम तुम्हारे सभी भाइयों का ऐसे पता लगाएंगे कि किसी और को जरा भी खबर न होगी तुम लोगों के बारे में!”

“वाह दीदी! फिर तो मैं आप लोगों को जासूस दीदी बुलाऊंगा।”

“चल हट, जासूस दीदी नहीं, 'मैडम अगाथा क्रिस्टी'।”

“क्या, क्या?”

“अच्छा जाने दे, बस दीदी ही ठीक है।”

तीकू का मन आशा-निराशा में झूलता रहा। वह चुपचाप अपनी अलमारी में जाकर लेट गया और अपने भाइयों के साथ बीते हुए समय के बारे में सोचने लगा।

इधर इन दोनों सहेलियों का टाइम भी नहीं कट रहा था। दोनों ने टीवी पर एक पिकचर देखी और गप्पें लगाती रहीं। तभी पांच बजे मम्मी ने दोनों के लिए चाय-नाश्ता भिजवाया।

“तीकू! चाय पियोगे?”

“हां! हां!! आज तो थोड़ी चाय पिला ही दो दीदी! उस भाई के बारे में सोच-सोच कर मेरा सिर दर्द कर रहा है।”

रीमा ने उसके नन्हे कप-प्लेट में थोड़ी चाय दे दी तथा एक-चौथाई बिस्कुट भी दिया।

तीकू सुड़प-सुड़प कर चाय पीने लगा। दोनों उसे ऐसे चाय पीते देख कर मुस्कराने लगीं।

फिर रीमा ने राधा से कहा, “जल्दी चाय पियो। तैयार होकर चलते हैं, अपनी उस पुरानी सहेली सुकन्या देवी जी के घर।”

दोनों हंसने लगीं। दोनों को एक अच्छी जासूसी कहानी का मजा आ रहा था।

ठीक समय दोनों चल पड़ीं। रिक्शा को सुकन्या के घर के नीचे रोका गया, फिर उसे पैसे देकर ऊपर जाने में दोनों को धुकधुकी-सी हो रही थी कि न जाने उस सुकन्या का क्या रिएक्शन हो? ऊपर जाकर रीमा ने घंटी का बटन दबाया। दरवाजा एक लड़की ने खोला। वे दोनों समझ गईं कि वह सुकन्या ही होगी, परंतु सुकन्या उन्हें प्रश्नसूचक दृष्टि से देखती रही। तभी रीमा बोली, “तुम सुकन्या ही हो ना?”

“हां! मैं सुकन्या हूं, परंतु तुम लोग कौन हो? मम्मी तो कह रही थीं कि मेरी दो पुरानी सहेलियां छह बजे आएंगी।”

“हां! हां!! हमने उन्हें यही बताया। हमें अंदर आने दो, तो पूरी बात हो। तुम्हारे घर में तुम्हारा अलग कमरा तो होगा ही।”

“हां, अलग कमरा है। आओ।”

“मम्मी! आप शायद इन्हें नहीं जानती। ये दोनों मेरी पुरानी सहेलियां हैं। हम लोग अपने कमरे में ही गपशप करने जा रही हैं। आप वहीं कुछ नाश्ता भिजवा देना।” अंदर आकर सुकन्या ने मम्मी से कहा।

“अच्छा।”

सभी सुकन्या के कमरे में आ गईं। रीमा और राधा बारीकी से पूरे कमरे में इधर-उधर नजरें दौड़ाती रहीं कि कहीं तीकू के भाई के वहां होने का कुछ सुराग मिल जाए, परंतु वहां तो कुछ भी नहीं था। अलमारी भी पूरी तरह बंद थी।

“क्यों क्या बात है? तुम लोग मेरे कमरे में ऐसे क्या देख रही हो?”

तभी रीमा ने उसे इशारा दिया कि वे लोग दर्जी अंकल से उसका पता पूछ कर आई हैं।



“अच्छा, लेकिन बात क्या है?”

“हमें पता चला है कि तुम्हारे पास कोई अच्छा-सा गुड्डा है, जिसकी चार ड्रेस तुमने दर्जी अंकल से बनवाई हैं।”

“हां! हां!! बनवाई हैं। तो फिर?”

“हमारी गुड़िया बहुत सुंदर और सुघड़ है। हम लोग उसी के रिश्ते की बात तुम्हारे गुड्डे से करने आई हैं।”

“अरे यार! काम की बात करो। तुम लोग यहां क्यों आई हो? मुझे ऐसी बचकानी बातों से मत बहकाओ।”

अब दोनों सोच में पड़ गई कि उसे क्या कहें। अगर सीधी तरह तीकू के भाई के बारे में पूछें, तो तीकू का राज खुल जाएगा। पता नहीं सुकन्या के पास उसका भाई है भी या नहीं।

तभी शरबत नाश्ता लेकर एक लड़की अंदर आ गई और उन्हें कुछ सोचने का मौका मिल गया। शरबत पीते-पीते रीमा की नजर कोने में पड़े एक छोटे गिलास पर गई। वह समझ गई कि हो न हो, वह तीकू के भाई का ही होगा। उसने इशारे से वह गिलास राधा को दिखाया।

राधा उठ कर वह गिलास उठा लाई। उसने उसे गौर से देखा तो उसकी तलहटी पर थोड़ा-सा सूखा दूध लगा था।

“अरे यह गिलास किसका है?” राधा ने पूछा।

अब सुकन्या चौंक गई, “कुछ नहीं, मेरे गुड्डे का है।”

“क्या तुम्हारा गुड्डा दूध भी पीता है?” यह कह कर राधा हंस पड़ी।

तब रीमा ने राज खोल देना ही ठीक समझा और बोली, “अरे यार! हम एक बौने बच्चे की तलाश में यहां आई हैं। ठीक-ठीक बताओ, तुम्हारे घर में कोई नन्हा-सा बौना है, गुड्डे जितना?”



“हम जानती हैं कि यह राज की बात है। हम वादा करती हैं, कि किसी को कुछ पता नहीं चलेगा।” राधा ने कहा।

तब सुकन्या बोली, “अच्छा, तो तुम्हारे घर में उसका भाई है। अब समझी!”

“हां! हां!! बिल्कुल ठीक समझा तुमने।”

“तो पहले ही बता दिया होता! ऐसे पहेलियां क्यों बुझा रही थीं, तुम लोग?” सुकन्या बोली, “मेरे पास तो नहीं, हां! मेरी एक सहेली जो स्वरूप नगर में रहती है, उसके घर एक बौना भाई कहीं से आ गया था। मुझे बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैं कभी-कभी उसे यहां ले आती हूं। दिन भर उसके साथ खेलती हूं, बातें करती हूं। उसे इसी गिलास में दूध भी देती हूं, फिर शाम को उसे उसके घर छोड़ देती हूं या मेरी वह सहेली आकर उसे ले जाती है। उसके बारे में मैं और मेरी सहेली के अलावा और कोई नहीं जानता।”

“अच्छा, तो वह बौना भाई तुम्हारी सहेली के घर है।”

“हां, वहीं है। कुछ दिन पहले ही मेरी उस सहेली ने उसके लिए कपड़े बनवाने को कहा था, तो मैंने दर्जी से अपने गुड्डे के लिए कह कर उसके कपड़े बनवाए। वाह भाई! यह तो बहुत अच्छा रहा। हमारे एकू का भाई मिल गया।”

“हां! हां!! दोनों एकू और तीकू मिल कर कितने खुश होंगे!”

“लेकिन वे तो तेरह भाई हैं।”

“हां, हैं तो तेरह भाई! आज दो मिल गए तो कोशिश करने पर और भी मिल जाएंगे।”

“हे भगवान! सभी जिंदा और सलामत हों।”

“अब आगे क्या किया जाए?”

“कल स्कूल से छुट्टी होते ही तुम मेरे घर आ जाना। यहीं से रिक्शा लेकर रुखसाना के घर चलेंगे।”

“रुखसाना?”

“अरे हां! मैं तो बताना ही भूल गई, कि मेरी उस सहेली का नाम रुखसाना है, जिसके घर में एकू है।”

“तो क्या तीकू को भी साथ ले चलें।”

“नहीं, अभी नहीं।”

“तो ठीक है, हम चलते हैं।”

राधा और रीमा दोनों खुशी-खुशी अपने-अपने घर चली गईं।

घर आकर रीमा ने तीकू को सारी बताई। तीकू खुश तो हुआ, परंतु थोड़ा उदास भी था कि अब भी उसके भाई के मिलने में काफी देर थी। तभी उसने पूछा, “कौन सा भाई था?”

“उसका नाम एकू बताया सुकन्या ने।”

“अच्छा उस दीदी का नाम सुकन्या है।”

रीमा को अगले दिन के बारे में सोच-सोच कर नींद नहीं आ रही थी, तभी तीकू ने कहा, “चलो दीदी! मैं आप के सिर की मालिश कर देता हूं। आप को अच्छी नींद आएगी। आप अपने सिर के नीचे तौलिया रख कर लेट जाएं।”

रीमा ने वैसा ही किया। तीकू ने पूरे जोश के साथ रीमा के सिर की मालिश इतनी बढ़िया की, कि उसे थोड़ी देर में ही नींद आ गई और वह सो गई।

सुबह उठी तो तीकू ने उसका ड्रेसिंग टेबल साफ-सुथरा करके सभी चीजें करीने से लगा दी थीं। उसकी कॉपियां-किताबें भी सही ढंग से एक स्थान पर रख दी थीं। सभी बिखरी चीजें कागज वगैरह साफ कर दिए थे। रीमा को बहुत अच्छा लगा। वह बाथरूम में ही थी कि उसकी मम्मी कमरे में आई। सब कुछ ऐसे करीने से लगा हुआ देख कर उन्होंने खुश होकर बाहर से ही आवाज देकर कमरे को साफ-सुथरा रखने पर रीमा को शाबाशी दी।

सुन कर रीमा बाथरूम में ही मुस्कुरा दी, परंतु बोली कुछ नहीं।

रीमा मम्मी से यह कह कर स्कूल चल दी कि उस दिन वह घर

लेट आएगी। वह स्कूल से राधा के घर चली जाएगी और रात को ही वापस लौटेगी।

इधर राधा ने भी अपनी मां से कहा कि वह भी रात को देर से लौटेगी। स्कूल से सीधे रीमा के घर चली जाएगी।

जैसे ही स्कूल की छुट्टी हुई, रीमा और राधा ने रिक्शा पकड़ा और सीधे सुकन्या के घर पहुंच गईं। सुकन्या भी घर आकर नाश्ता कर रही थी। उसकी मम्मी ने सभी को नाश्ता करवाया। फिर सुकन्या ने मां से कहा, वे तीनों रुखसाना के घर जा रही हैं। उसने स्कूल में ही रुखसाना को बता दिया था कि वे तीनों उसके घर एकू से मिलने आएंगी।

रुखसाना गेट पर ही उनका इंतजार कर रही थी। “हैलो!” उसने सुकन्या को देख कर कहा।

“इन दोनों से मिलो!” सुकन्या बोली, “यह राधा है और यह रीमा, और यह मेरी सबसे अच्छी सहेली रुखसाना!”

सभी ने मुस्करा कर हैलो कहा।

“तो तुम लोगों के घर ही हमारे एकू का भाई तीकू है।”

“हां! हां!! रीमा के घर ही तीकू रहता है।” सुकन्या बोली।

“इसने भी उसके बारे में किसी को नहीं बताया है। बस इन दोनों सहेलियों को ही उसका पता है।”

चारों भीतर गईं और उसकी अम्मी को आदाब कहा।

अम्मी ने भी “जीती रहो!” कहा।

फिर बिना किसी और देखे वे रुखसाना के कमरे में घुस गईं।

रुखसाना की बहुत बड़ी, पुरानी कोठी थी, बड़ा आंगन था, जिसके चारों ओर कमरे थे। भीतर जाकर रुखसाना ने दरवाजा बंद



कर लिया, फिर एकू को आवाज लगाई। एकू झट से निकल आया।

“वाह! भाई वाह!! यह तो बिल्कुल हमारे तीकू जैसा है।”

“क्यों नहीं होऊंगा दीदी! वह मेरा भाई जो है! मुझे रुखसाना दीदी ने सब बता दिया है।”

उसकी बात सुन कर सभी मुस्करा दीं।

“आप सब कितनी अच्छी हैं! मुझे मेरे एक भाई की खबर तो दे दी, अब मुझे यकीन है कि हम सब भाई एक बार जरूर मिलेंगे।” एकू फिर बोला।

उसकी ऐसी चतुराई भरी बातें सुन कर राधा ने मुस्करा कर कहा, “तुम्हारे यकीन से हमारा यकीन मिल कर पक्का यकीन बन गया है।”

यह सुन कर सभी हंस पड़ीं।

“तुम्हें यहां अच्छा लग रहा है?”

“अच्छा क्यों नहीं लगेगा? रुखसाना दीदी मेरा कितना ख्याल रखती हैं! देखो तो मेरी नई ड्रेस, परंतु हां अपने भाइयों की कमी जरूर खलती है।”

“अरे वाह! कितनी सुंदर ड्रेस है तुम्हारी!”

“ठीक है, हम सब लोग मिल कर तुम्हारे भाइयों को जरूर ढूंढ लेंगे, परंतु अब यह तो बताओ कि तुम हमारे साथ अपने भाई तीकू से मिलने चलोगे?”

“रुखसाना दीदी कहेंगी तो जरूर चलूंगा।”

तभी दरवाजे पर खट-खट हुई। एकू जल्दी से पलंग के नीचे छुप गया।

“क्यों बीबी! दरवाजा क्यों भेड़ रखा है।” ट्रे लेकर आने वाली खानसामा की बीबी बोली।

“हम लोग आने वाले सालाना जलसे में ड्रामा कैसा होगा और यह रीमा उसमें कैसी एक्टिंग करेगी यही देख रहे थे।”

“अच्छा, अच्छा! हम भी देख सकते हैं क्या?”

“नहीं, तुम अभी देखोगी तो जब हम तुम्हें ड्रामा दिखाने ले जाएंगे तो तुम्हें मजा नहीं आएगा।”

“तो क्या बीबी! हमें भी ड्रामा दिखाने ले चलोगी?”

“तुम भी क्या याद करोगी! इस बार तुम्हें भी ले चलेंगे।”

“वाह! फिर तो मजा आ जाएगा!”

“अच्छा, अच्छा! अब तुम बाहर जाओ। हमें अपना काम करने दो।”

वह खुशी-खुशी, बाहर चली गई तो सभी की ‘कॉन्फ्रेंस’ फिर चालू हो गई। साथ-साथ नाश्ता-पानी भी चलता रहा।

“ठीक है, आज मैं एकू को अपने साथ ले चलती हूं। दोनों भाई मिल कर कितने खुश होंगे।” रीमा बोली।

“परंतु कल शाम मैं इसे तुम्हारे घर से ले आऊंगी।” सुकन्या बोली। “तुम्हें क्या पता एकू सिर की कितनी अच्छी चंपी करता है।”

“अच्छा, अब मैं चलती हूं। आओ एकू! क्या तुम अपने भाई से मिलने मेरे साथ चलोगे?”

“क्यों नहीं दीदी! यह तो मेरी दिली ख्वाहिश है।”

“वाह! वाह!! कितनी बड़ी-बड़ी बातें करने लगे हो।”

“दीदी! आप लोगों से ही तो सीखी हैं।”

यह सुन कर सब हंस पड़ीं।

फिर रीमा ने एकू को अपनी कोट की जेब में डाल लिया और बाहर आ गई। राधा और सुकन्या भी अपने-अपने घर चल दीं।

रीमा जैसे ही अपने घर पहुंची तो देखा कि सामने ही मम्मी के साथ बुआ बैठी हैं।

“नमस्ते बुआ! आप कब आईं? आपने तो आने की खबर ही नहीं दी।”

“तुम्हें कुछ दुनिया-जहान की खबर भी है! जाने किस दुनिया



में रहती हो! पापा ने परसों ही तो कहा था कि बुआ आ रही हैं।”  
मम्मी बोलीं।

“शायद मैंने सुना नहीं।”

“सुना नहीं कि ध्यान ही नहीं दिया।”

“अरे, अरे! तुम तो इसके पीछे ही पड़ गई हो! बच्ची है! पढ़ने

के साथ और भी काम रहते हैं इसे सहेलियों के साथ! क्यों रीमा?”

“अरे, नहीं बुआ! बस यों ही।”

“अच्छा-अच्छा पास तो आ! जरा गले तो मिल! कितनी सुंदर है मेरी भतीजी!” बुआ ने कहा।

रीमा पास आकर बड़े एहतियात के साथ बुआ के गले लगी, कि कहीं एकू का पता उन्हें न लग जाए। फिर बोली, “बुआ! मैं अभी आई।”

यह कह कर जैसे ही वह अपने कमरे में घुसी तो देखा कि बुआ की अटैची और बैग उसी के कमरे में रखे थे। तो क्या बुआ उसी के कमरे में सोएंगी? वह कैसे तीकू, एकू को बुआ से छुपा पाएगी। अब क्या करे?

बाहर आकर बोली, “अच्छा बुआ! आप भी मेरे कमरे में ही सोओगी ना?”

“बिलकुल! मैं अपनी बिटिया के पास नहीं तो और कहाँ सोऊंगी? हम लोग खूब बातें करेंगे। फिर तू अपनी पढ़ाई करना। मुझे कोई ‘डिस्टर्बेंस’ नहीं होता।”

“हां! हां!! बहुत मजा रहेगा। अब तो आप ढेर दिन रहेंगी न यहां।”

“हां, एक सप्ताह तो रहूंगी ही।”

अब रीमा चिंता में पड़ गई कि क्या करे? बुआ की नजरों से तीकू और एकू को कैसे बचाए? वह फिर अपने कमरे में गई और अलमारी से तीकू को निकाल कर बोली, “तुम्हारे भाई एकू को तो लाई हूं, परंतु अभी तुम लोगों को नहीं मिला सकती। मेरा ख्याल है, अभी तुम लोगों को सुकन्या के घर छोड़ना पड़ेगा, वरना बुआ को सब पता चल जाएगा। चलो जल्दी तैयार हो जाओ।”



“मैं तो तैयार ही हूँ।”

रीमा ने तीकू को कोट की दूसरी जेब में डाल लिया और बाहर आकर मम्मी से बोली, “मम्मी कल स्कूल में टेस्ट है और मुझे अभी एक कॉपी राधा के घर से लानी है। गलती से वह मेरी कॉपी ले गई है। बस मैं अभी गई और अभी आई।”

यह कह कर बगैर मम्मी की बात सुने वह बाहर निकल गई।

रिक्शे पर सुकन्या के घर पहुंची। दरवाजा खुला तो सामने सुकन्या की मम्मी थीं।

“अरी तू! इतनी लेट?”

“जरा सुकन्या से जरूरी काम था।”

“हां! हां!! वह अपने कमरे में ही है।”

“थैंक गॉड!” उसने मन ही मन कहा। “कहीं गई नहीं है।”

रीमा सीधे सुकन्या के कमरे में घुस गई। “जरा दरवाजा बंद करो सुकन्या! फिर बताती हूँ, इतनी रात क्यों आई हूँ।”

सुकन्या ने दरवाजा बंद कर दिया, फिर रीमा ने दोनों जेबों से तीकू और ऐकू को बाहर निकाल कर कालीन पर खड़ा कर दिया। दोनों भाई बहुत दिनों बाद एक-दूसरे से मिले। दोनों गले लग कर सुबकने लगे। रीमा और सुकन्या की आंखें भी भीग गईं।

“अब तुम दोनों अलमारी में बैठ कर बातें करो। कहीं कोई आ न जाए।”

“हां, तुम कैसे दोनों को लेकर यहां आई रीमा?”

“उफ! जब मैं घर पहुंची तो बुआ आई हुई थीं और उन्होंने मेरे कमरे में ही डेरा डाला था। क्या करती? बुआ की तेज नजरों से उन्हें कैसे बचाती। इसलिए दोनों को लेकर तुम्हारे घर आना ही ठीक लगा।”

“हां, हां! ठीक किया, परंतु कल इन दोनों को रुखसाना के घर छोड़ना होगा। उसका घर बहुत बड़ा है और उसके कमरे में कोई आता-जाता भी नहीं है।”

“ठीक है, परंतु कल स्कूल से आने तक तो ये दोनों तुम्हारे घर में रह सकते हैं।”

“हां! हां!! स्कूल जाने से पहले मैं दोनों को अलमारी में बंद करके ताला लगा दूंगी।”

“अच्छा मैं चलती हूँ। बहुत देर हो गई है।”

रीमा झटपट बाहर निकल कर सीढ़ियां उतर गई। रिक्शा वाले को आवाज दी ही थी कि उसे याद आया कि मम्मी से कॉपी लाने का बहाना करके निकली थी। रिक्शा वाले को वहीं ठहरने के लिए कह कर वह फिर सीढ़ियां चढ़ गई।

“क्यों, फिर कैसे? सुकन्या ने पूछा।”

“अरे कोई एक कॉपी अंदर से लाकर दे दो। मम्मी से एक कॉपी लाने का बहाना करके आई हूँ।”

सुकन्या ने एक कॉपी लाकर रीमा को दी। रीमा नीचे उतर कर झटपट रिक्शा पर बैठ कर वापस चल दी।

रात को बुआ के होते हुए भी तीकू के बिना उसे अजीब-सा खालीपन लगा। तीकू तो जैसे उसकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया था।

तभी बुआ ने सोचा कि कुछ कपड़े रीमा की अलमारी में टांग दे। “अरी रीमा! तू अब तक इन खिलौनों से खेलती है?” बुआ ने छोटा-सा गुड़िया का घर और छोटे-छोटे बरतन देख कर रीमा से पूछा।

रीमा झंपने की 'एक्टिंग' करते हुए बोली, "हां बुआ! मुझे अच्छे लगते हैं ये पुराने खिलौने।"

बुआ हंस पड़ीं, "तू तो बच्ची की बच्ची ही रहेगी।"

फिर दोनों देर तक पुरानी बातें करती रहीं।

अगले दिन भी रीमा मम्मी से लेट आने का कह कर स्कूल चल दी। स्कूल से छुट्टी होते ही राधा के साथ वह सुकन्या के घर पहुंची। सुकन्या तो तैयार ही बैठी थी। तीकू को रीमा ने अपनी जेब में डाल लिया। एकू सुकन्या की जेब में था। फिर तीनों एक ही रिक्शा पर बैठ कर रुखसाना के घर पहुंच गईं।

रुखसाना तीनों का इंतजार ही कर रही थी। सुकन्या ने स्कूल में ही उसे सब बता दिया था। वे सीधे रुखसाना के कमरे में गईं और कमरा बंद कर लिया। उन्होंने तीकू और एकू को बाहर निकाला। वे दोनों बहुत खुश थे और अलमारी में बैठ कर बातें करने लगे।

इधर ये सहेलियां सोचने लगी कि इनके और भाइयों का कैसे पता लगाया जाए।

तभी रुखसाना ने कहा, "कल मेरा भाई शमीम मुझसे पूछ रहा था कि मैंने कभी बौनों के बारे में सुना है। मैंने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों पूछ रहा है, तो वह बोला कि उसका एक दोस्त कह रहा था कि उसे अकसर दो छोटे-छोटे बौने सपने में दिखाई देते हैं। मैंने उसे टाल दिया कि सचमुच के बौने नहीं होते हैं। बस गुलीवर और बौनों की कहानी बहुत प्रचलित है। उसी को सुन कर उसके दोस्त को वैसा सपना आया होगा।"

"अच्छा, फिर?"

"लेकिन बाद में मैंने सोचा कि कहीं शमीम के दोस्त के घर



इनके दो भाई तो नहीं हैं और वह ऐसे सपने की बात कह कर औरों को टटोल रहा होगा कि कहीं उनके घर तो कोई और उन बौनों का भाई नहीं है।"

"हां! हां!! हो सकता है। शमीम का वह दोस्त रहता कहां है?" रीमा ने पूछा।

“यहीं इसी शहर के जरा बाहर उसका ‘फार्म हाउस’ है। वहीं रहता है।”

“बहुत अमीर होगा!”

“हो सकता है, परंतु जरूरी नहीं। उसका फार्म बहुत पहले का भी हो सकता है।”

“तो तुम अपने भाई से कह कर कुछ और पता लगाओ।”

“कोशिश करती हूं।”

रीमा, राधा और सुकन्या अपने घर चल दीं।

रुखसाना देर तक सोचती रही कि कैसे और बौने भाइयों का पता लगाया जाए, फिर वह इस नतीजे पर पहुंची कि शमीम को भी राजदार बनाना ही चाहिए और उसी के मदद से उसके दोस्त से बात करनी चाहिए।

इधर दोनों भाई न जाने क्या-क्या बातें करते रहे। उनकी आंखों में नींद नहीं थी।

रुखसाना की पढ़ते-पढ़ते ही आंख लग गई। दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को सहारा देकर और नीचे किताबें रख कर बड़ी मुश्किल से बैड स्विच ऑफ किया। फिर वे भी सो गए।

दोनों भाई सवेरे जल्दी ही उठ गए। अभी रुखसाना सो ही रही थी और दोनों ने सारा कमरा अच्छी तरह संभाल दिया था। रुखसाना के ड्रेसिंग टेबल की सभी चीजें करीने से लगा दीं। कॉपियां-किताबें भी ठीक रख दीं। बाथरूम की चीजें भी उनकी जगह पर रख दीं।

सवेरे जब रुखसाना की अम्मी उसे उठाने आई तो उसका साफ-सुथरा कमरा देख कर खुश हो गई। वाह! मेरी बेटी कितने

सलीके वाली हो गई है। सभी कुछ करीने से रखने लगी है। उन्होंने रुखसाना को आवाज देकर उठाया और उसका माथा चूम लिया। रुखसाना ने अपने कमरे की सभी चीजें करीने से रखी देखीं तो सब समझ गई और खुश होकर अम्मी से बोली,

“अम्मी! देखना अब से मेरी सभी चीजें तरतीब से ही रखी मिलेंगी।” यह कह कर वह मुस्करा दी। अम्मी भी मुस्करा कर चली गई।

इतवार के दिन रीमा, राधा और सुकन्या तीनों रुखसाना के घर दस बजे ही पहुंच गईं।

“हैलो! तीकू, एकू! कैसे हो?” रीमा ने पूछा।

“दीदी! आज तो बहुत अच्छा रहा। आज हम दोनों आप लोगों को एक डांस के साथ गाना सुनाएंगे, जो हम लोग पहले गाया करते थे।”

उन्होंने मिल कर एक गांव के गीत के साथ बहुत मजे का डांस करके दिखाया, तो सभी हंसती-हंसती दोहरी होती रहीं। उनके ठुमके, उनके घूमने का अंदाज, उनके हाव-भाव बहुत मजेदार थे। गाने के बोल तो ज्यादा समझ में नहीं आए, परंतु उनका सुर बढ़िया था।

अच्छा, अब तुम दोनों खेलो। हम लोग तुम्हारे और भाइयों को कैसे ढूंढा जाए, इस बारे में सलाह करती हैं।

दोनों दूसरी तरफ चले गए। फिर सभी सहेलियां संजीदा होकर सलाह-मशविरा करने लगीं। रुखसाना ने कहा, “शमीम को उसके दोस्त से बौनों के बारे में पूछताछ के लिए कहना ही होगा।”

“परंतु वह क्यों उससे ऐसी पूछताछ करने के लिए राजी होगा,

जब तक उसे विश्वास न हो कि ऐसे बौने भी होते हैं।”

“हां, ठीक है! उसे भी तीकू, एकू से मिलवा देते हैं, और उसे हिदायत भी दे देते हैं कि उनका राज किसी और को नहीं कहेगा। उसे विश्वास में लेना ही होगा तभी बात आगे बढ़ेगी।”

“हां, यही करना चाहिए। उसके दोस्त का नाम क्या है?”

“उसका नाम युवराज बता रहा था शमीम। तो क्या बुलाऊं शमीम को?”

“अभी?”

“और क्या! जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा है।”

“ठीक है, बुलवा लो।”

“अच्छा, मैं बाहर जाकर देखती हूं।” रुखसाना बोली और बाहर आकर उसने शमीम से कहा, “भाई! जरा मेरे कमरे में तो आओ! कुछ जरूरी काम है।”

“मैं अभी नहीं आ सकता, देखती नहीं ‘क्रिकेट शू’ पहन कर क्रिकेट खेलने जा रहा हूं।”

“बस पांच मिनट को आ जाओ।”

“अच्छा, आता हूं।”

जब शमीम कमरे में पहुंचा तो रीमा, राधा और सुकन्या को बड़ी उत्सुकता से अपनी ओर देखते हुए देख कर झेंप-सा गया।

“अच्छा, कहो! क्या काम है? तुम लोग क्या कुछ मंगवाना चाहती हो मुझसे?”

“नहीं-नहीं हम लोग तुम्हें एक बहुत राज की बात बताने जा रही हैं, परंतु तुम्हें प्रॉमिस करना होगा कि इस बात को किसी और को नहीं बताओगे और न किसी से कोई जिक्र करोगे।”

“ठीक है, परंतु बताओ तो” वह भी उत्सुक हो उठा। “मैं



प्रॉमिस करता हूं कि तुम लोगों की सलाह के बगैर किसी को कुछ नहीं बताऊंगा।”

तभी रुखसाना ने एकू, तीकू को आवाज दी। वे दोनों अलमारी से निकल कर बाहर आ गए।

“आदाब बड़े भाई!” वे दोनों सभी की बातें सुन रहे थे।

उन्हें देख कर शमीम का मुंह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

“अरी आपा! तुम तो कहती थी कि बौने सिर्फ कहानियों में होते हैं, फिर ये दोनों यहां कैसे आ गए?”

“खैर यह तो एक लंबी कहानी है। तुम्हें बाद में बताऊंगी सब कुछ, परंतु हम इनका राज अभी नहीं खोलना चाहते, और लोगों को इनके बारे में पता लगने पर न जाने क्या सलूक हो इनके साथ। कई देशों की प्रयोगशालाएं भी इन्हें तरह-तरह के प्रयोगों के लिए ले जा सकती हैं। इन्हें चिड़ियाघर में भी रखा जा सकता है। पता नहीं क्या करें वे इनके साथ। इतना तो तय है कि ये सभी भाई एक साथ नहीं रह पाएंगे।”

“क्या कह रही हो आपा? ये कितने भाई हैं?”

“जहां तक मुझे इनसे जानकारी मिली है, ये तेरह भाई हैं। किसी एक्सीडेंट से नहर में बह कर एक-दूसरे से बिछड़ गए हैं। संयोग से एक रीमा को और एक मुझे मिल गया है। फिर रीमा ने बहुत सूझ-बूझ से अपनी सहेली राधा के साथ मिल कर मेरे वाले एकू को ढूंढा।”

“यह तो बहुत मजेदार कहानी जैसी बात लग रही है। अच्छा यह तो बताओ, तुम लोग मुझसे क्या चाहती हो?”

“हमें शक है कि इनके दो और भाई तुम्हारे उस दोस्त...क्या नाम है उसका...हां, युवराज के फार्म हाउस में हो सकते हैं, तभी तो वह तुमसे कह रहा था कि उसके सपने में दो बौने आते हैं। तुम्हें सब पता लगाना है और इन दोनों भाइयों को उनसे मिलवाना है।”

“हां! हां!! वह ये कह कर कि उसने दो बौनों को सपने में

देखा है, शायद मुझे टटोल रहा होगा कि कहीं मुझे और बौनों के बारे में पता तो नहीं है।”

“हो सकता है।”

“ठीक है, कल स्कूल में मैं उससे बात करूंगा।”

“अच्छा, यह तो तुम्हें पता होगा कि फार्म हाउस में उसके साथ और कौन-कौन रहते हैं?”

“आजकल तो वह अकेला ही रहता है। उसके मम्मी-पापा तीन महीने के लिए विदेश गए हुए हैं। बस एक माली और एक नौकर है, जो उसका काम करता है।”

“तब तो इनके भाइयों का वहां होने का और भी ज्यादा चांस है। ठीक है, अब तुम क्रिकेट खेलने जाओ। कल जो भी पता चले, मुझे बताना।”

“ठीक है आपा!”

“हां, उसे अभी तीकू, एकू के बारे में मत बताना। अगर हो सके तो किसी बहाने से उसके फार्म हाउस हो आना।”

“मैं कोशिश करूंगा।”

शमीम और युवराज पढ़ते तो एक ही क्लास में थे, परंतु दोनों के डेस्क जरा दूर थे। दूसरे दिन खाने की छुट्टी में शमीम ने युवराज से मुलाकात की। “यार! तुम तो संडे को भी नहीं मिलते। कल क्रिकेट का बहुत अच्छा मैच रहा, परंतु हम लोग तुम्हें मिस करते रहे। हमारी टीम में कोई भी तुम्हारी तरह का फास्ट बॉलर होता तो हम जरूर जीत जाते।”

“तो क्या तुम्हारी टीम हार गई?”

“हां, परंतु सिर्फ ग्यारह रनों से।”





“चलो, अगले संडे मैं भी आऊंगा तुम्हारी टीम में खेलने के लिए।”

“हां! हां!! यही तो हम चाहते हैं। अच्छा, एक बात तो बताओ। तुमने जो बौनों वाला सपना देखा था, उसमें बौने क्या-क्या करते थे?”

“क्यों तुम्हें फिर से बौनों की याद कैसे आ गई?”

“नहीं बस ऐसे ही! कभी-कभी मेरा मन कहता है कि बौने भी होते हैं।”

“तुम्हारा मन तो न जाने क्या-क्या कहता है।”

“अरे बताओ भी! वे बौने क्या करते थे?”

“इतना पुराना सपना, भला मुझे क्या याद रहेगा। हां, वे खेतों में काम करते थे, किसी किसान का सभी काम करते थे।”

“अच्छा! अच्छा!!”

“लेकिन तुम इतना इंटरेस्ट क्यों ले रहे हो, बौनों के सपने के बारे में?”

“यार! सच बात तो यह है कि ऐसे ही कल मेरी आपा से बात हो रही थी। तभी सपनों का जिक्र आया तो मैंने आपा से कहा कि मेरे एक दोस्त को सपने में दो छोटे-छोटे बौने दिखाई देते हैं, तो उसने पूछा कि क्या सचमुच? फिर उसने बताया कि उसे भी कुछ दिन पहले बौनों का सपना आया था। फिर कहा कि अपने दोस्त से पूछ कर आना कि बौने क्या-क्या करते थे। इसीलिए मैंने तुम से पूछा है।”

युवराज कुछ-कुछ बात समझने लगा। उसने शमीम से कहा, “मैं तुम्हारी आपा से मिलना चाहता हूं। उसे कोई एतराज तो नहीं होगा।”

“ठीक है, मैं आपा से पूछ कर बताऊंगा।”

फिर दोनों क्लास में चले गए।

घर आकर शमीम ने आपा को जो भी बात युवराज के साथ हुई थी बताई। आपा बोलीं, “तब तो मैं शर्त लगा कर कह सकती हूं कि युवराज के घर तीकू, एकू के दो भाई हैं। ये दोनों भी तो पहले किसान का काम करते थे। यही तो एकू ने मुझे बताया था।”

“मुझे भी यही लगता है।”

“हमें युवराज से अब खुल कर बात करनी चाहिए। वह भी शायद यही चाहता है कि सभी भाई मिल जाएं। कल तू उससे कहना कि आपा उसके फार्म हाउस पर तो नहीं आएंगी, परंतु मैट्रो रेस्टोरेंट में हम लोग साढ़े चार बजे मिल सकते हैं। वहीं पर पूरी बात होगी।”

“ठीक है आपा! मैं युवराज के साथ ठीक साढ़े चार बजे मैट्रो में आ जाऊंगा। आप भी स्कूल से वहीं आ जाना।”

अगले दिन शमीम ने युवराज से कहा, “आपा भी तुमसे मिलना चाहती हैं। उन्होंने करीब साढ़े चार बजे मैट्रो में बुलाया है। क्या तुम चलोगे?”

“हां! हां!! क्यों नहीं! मुझे भी जल्दी घर जाकर क्या करना है?”

शाम को साढ़े चार बजे दोनों दोस्त मैट्रो के एक कैबिन में बैठ गए। थोड़ी देर बाद आपा भी वहां आ गईं। शमीम ने आपा को कैबिन में बुला लिया।

“युवराज! ये मेरी आपा रुखसाना हैं और आपा! यह मेरा दोस्त युवराज है।”

“तुमसे मिल कर अच्छा लगा युवराज!”

“मुझे भी।”

तभी वेटर ऑर्डर लेने आ गया।

“क्या खाओगे तुम लोग? बोलो युवराज!”

“जो आप ठीक समझें।”

“अच्छा, तो ऐसा करो, तीन कोल्ड ड्रिंक और तीन पैटिज ले आना, ताजा और अच्छा।”

“यहां ताजा ही बनती है रोज।”

“ठीक है, जाओ।”

फिर आपा बोली, “युवराज! देखो, मुझे भी बौनों का सपना आया है, और मेरे सपने में भी बौने किसानों का काम करते थे। गाय-बैलों की मालिश भी करते थे और किसान की चारपाई के नीचे सो जाते थे। इसका क्या मतलब हुआ?”

“अच्छा, अच्छा आपा! तो आपके घर में भी बौने भाई हैं।”

“आपके घर भी! मतलब तुम्हारे घर में भी बौने हैं?”

“हां आपा! आपने ठीक सोचा। मेरे घर भी दो बौने भाई भूले-भटके आ गए थे। तभी से वे मेरे साथ रहते हैं। मैं भी आप की तरह उनके भाइयों को ढूंढ रहा हूं और सभी भाइयों को मिलवाना चाहता हूं।”

“और हां, इस तरह कि उनके बारे में किसी को पता भी न चले।”

“यही बात है।”

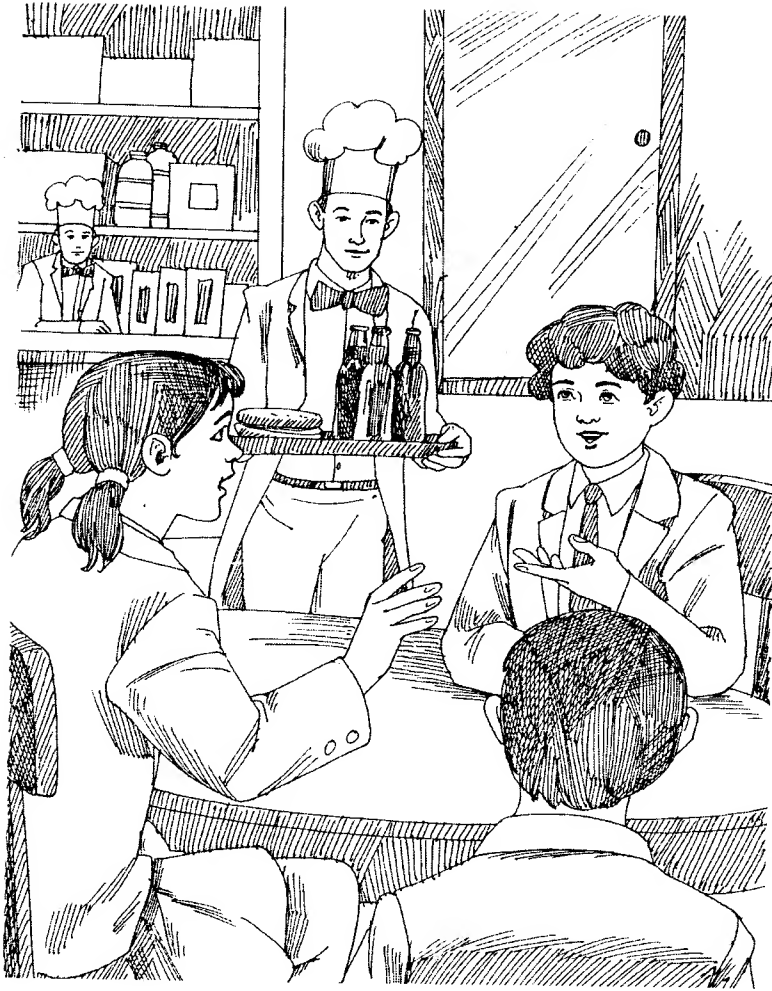
“लो देखो, एक-एक करके दो हमने मिलवा दिए, अब दो तुम्हारे घर मिल गए। चलो चार हो गए। बाकी भी मिल ही जाएंगे, अगर हम सब मिल कर पता लगाएं।”

“वह तो ठीक है, परंतु मेरे पांचू और सातू को कितना अच्छा लगेगा, जब मैं उनको इन दो भाइयों के मिलने की खबर सुनाऊंगा।”

तभी वेटर कोल्ड ड्रिंक और पैटिज ले आया।

“अच्छा, यह तो बताओ तुम्हारे फार्म हाउस में कौन-कौन है। क्या औरों को भी तुम्हारे पांचू, सातू के बारे में पता है?”

“आपा! मेरे मम्मी-पापा तो तीन महीने के लिए मेरी मौसी के



घर कनाडा गए हुए हैं। फार्म पर माली और मेरा काम करने के लिए किसनू है। इसके अलावा दो कुत्ते भी हैं।”

“क्या कहा? दो कुत्ते भी हैं? तो क्या दोनों पांचू और सातू को कुछ नहीं कहते।”

“नहीं, कुत्तों को मैंने पांचू, सातू का दोस्त बना दिया है। मैंने

पांचू, सातू के हाथ से उन्हें केक, बिस्कुट खिलवाए, फिर उन्हें प्यार से दोनों कुत्तों के पास ले गया। पहले तो पांचू, सातू की डर के मारे जान ही निकल गई, परंतु धीरे-धीरे वे आपस में दोस्त बन गए। अब तो एक-दूसरे के साथ खेलते भी हैं।”

“परंतु जब वे रात को तुम्हारे घर आए होंगे, तब भी तुम्हारे कुत्तों ने उन्हें कुछ नहीं कहा?”

“तब तो भोंक-भोंक कर उन्होंने मुसीबत कर दी थी। दरअसल रात को मैं कुत्तों को बाहर बरामदे में बांध देता हूं। रात को गेट की दरार से दोनों भाई घुस कर जैसे ही दरवाजे के पास पहुंचे, कुत्तों को उनकी भनक लग गई। वे भौंकने लगे। मेरी नींद खुली तो मैंने भीतर से आवाज देकर उन्हें चुप रहने के लिए डांटा, परंतु वे कहां चुप होने वाले थे! आखिर उठ कर मैंने दरवाजा खोला और बाहर की बत्ती जलाई तो देखा कि कोने में दोनों बौने भाई सहमे हुए एक-दूसरे से सटे खड़े हैं।”

“तो फिर?”

“पहले तो मेरी समझ में ही नहीं आया कि ये नन्हे-नन्हे जीव क्या हैं। तभी इनमें से एक ने कहा, “हम मुसीबत के मारे छोटे बच्चे हैं और यहां पनाह लेना चाहते हैं।”

“मैंने आगे बढ़ कर उन्हें उठा लिया। कुत्तों को चुप कराने की कोशिश की और उनको अंदर ले आया। मैंने हैरानी से उनसे पूछा, “तुम लोग कौन हो और कैसे यहां पहुंचे?”

तब उन्होंने अपनी पूरी बात मुझे बताई और बोले, “हम लोग आपका सभी काम अच्छी तरह से जो भी हमसे बन पड़ेगा करेंगे।”

“अच्छा! अच्छा!! वे ही पुराने डायलॉग बोले होंगे इन्होंने।”

“तो क्या सभी यही कहते हैं?”

“हां यही! अच्छा किसनू और माली भी इनके बारे में जानते होंगे?”

“हां, वे भी पांचू, सातू के दोस्त हैं, परंतु मैंने दोनों को कसम दे रखी है, कि वे किसी को भी इनके बारे में नहीं बताएंगे। अब तो मेरे फार्म हाउस की चार दिवारी में, सभी मस्ती में जहां चाहें वहां घूमते रहते हैं, और हां मेरे फार्म के सभी चूहों को भी इन्होंने भगा दिया है।”

यह सुन कर सभी मुस्करा दिए।

“तो अब यह बताओ, चारों को कब और कहां मिलवाया जाए।”

“आपा! मेरे घर तो कोई और है ही नहीं। आप सब लोग इतवार को पिकनिक करने के लिए मेरे घर क्यों नहीं आते? इसी बहाने ये चारों भाई भी मिल लेंगे।”

“इतवार तो बहुत दूर है, परंतु चलो यह ही सही! मैं रीमा, राधा और सुकन्या सभी को बता दूंगी।”

“ये सब लोग कौन हैं? युवराज ने पूछा।”

“भाई! ये सभी बौने भाइयों की दोस्त हैं। एक बौना रीमा के घर आया था। खैर तुम सभी से मिल ही लोगे।”

“तो चला जाए?”

“हां! हां!! चलो।”

जब रीमा, राधा और सुकन्या को एकू, तीकू के दो और भाइयों के मिलने की खबर मिली, तो वे सभी बेसब्री से इतवार का इंतजार करने लगीं।

इतवार को सवेरे दस बजे रीमा, राधा और सुकन्या, रुखसाना के घर पहुंची। फिर अम्मी से पिकनिक के बारे में बता कर शमीम

को साथ लेकर वे सभी युवराज के फार्म हाउस चल पड़े। रीमा ने तीकू को और रुखसाना ने एकू को अपनी जेब में डाल लिया।

ग्यारह बजे वे सभी युवराज के फार्म हाउस में थे। युवराज भी सभी का इंतजार कर रहा था, उसने किसनू को पहले ही बता दिया था कि इतवार को उसके दोस्त पिकनिक पर आएंगे। सभी के लिए खाने की कुछ अच्छी ‘डिशेज’ बना लेना।

वहां पहुंचने पर रुखसाना ने राधा, रीमा और सुकन्या का परिचय युवराज से करवाया। फिर सभी ड्रॉइंग रूम में आ गए। रीमा और रुखसाना ने अपनी-अपनी जेब से तीकू और एकू को निकाल कर कालीन पर खड़ा कर दिया। वे दोनों हैरानी से इधर-उधर देखने लगे। दरअसल उन्हें सिर्फ यह ही बताया गया था कि कहीं पिकनिक पर जाना है, परंतु उनके दो और भाइयों के मिलने के बारे में उन्हें नहीं बताया गया था। रीमा, राधा और रुखसाना सभी उनको सरप्राइज देना चाहती थीं।

तभी साथ वाले कमरे से निकल कर पांचू, सातू भी वहां आ गए। दोनों टीमों पहले तो एक-दूसरे को हैरानी से देखती रहीं। फिर सभी चीख कर बारी-बारी एक-दूसरे के गले मिले। खुशी के मारे सभी का गला रुंध गया था।

फिर रीमा ने कहा, “भाइयों का मिलन!”

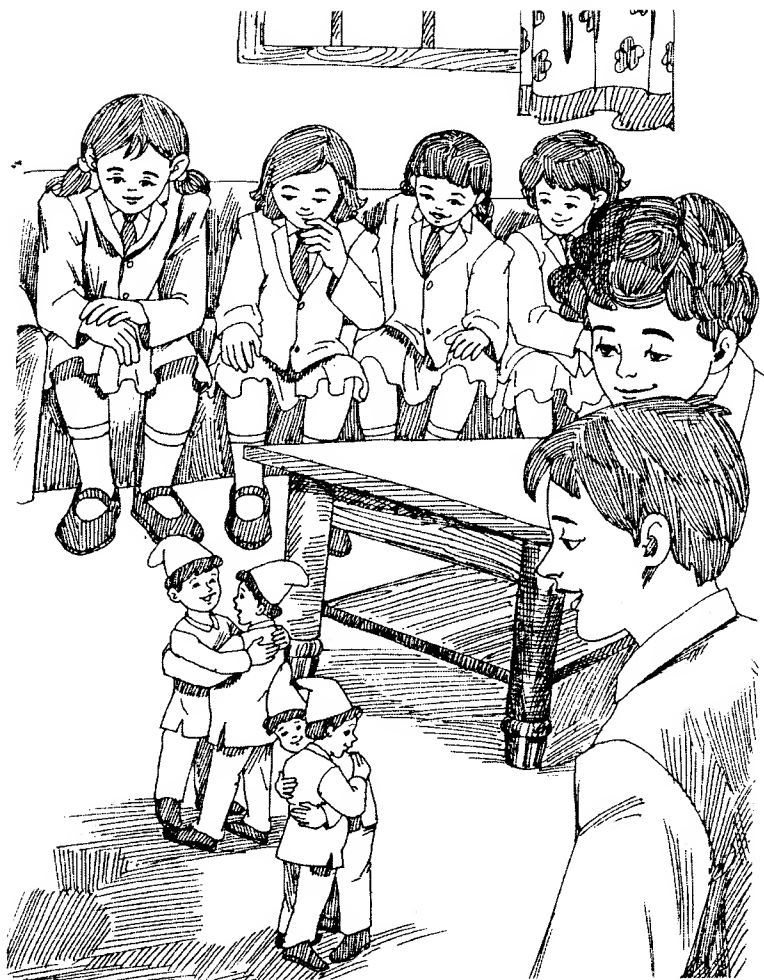
“जिंदाबाद!” सब ने कहा।”

“तेरह भाई!”

सभी के साथ बौने भाई भी बोले—

“मिल के रहेंगे!”

सभी चार भाइयों के मिलने से खुश थे। शमीम बोला, “यार! कुदरत के खेल भी निराले हैं। सभी एक जैसे हैं।”



“वाकई कमाल हो गया!”

फिर सभी उनके बारे में बातें करने लगे। चारों भाई भी एक-दूसरे को आपबीती सुनाने लगे, और बाकी भाइयों के बारे में अंदाज लगाने लगे, कि वे कहां हो सकते हैं। तभी दोनों कुत्ते भी अंदर आ गए। उन्हें देख कर तीकू और एकू चीखने लगे। युवराज

ने पास आकर उन्हें पुचकारा और तीकू, एकू से कहा, “ये तुम्हारे पांचू, सातू के दोस्त हैं। अभी तुम्हारी दोस्ती भी इनसे करवा देता हूं। उसने एकू, तीकू को जरा-सा केक का टुकड़ा दिया और कुत्तों को खिलाने के लिए कहा।

युवराज ने दोनों को एक-एक हाथ में उठा लिया और कुत्तों को केक खिलवाया। कुत्तों ने केक खाकर उनका मुंह भी चाट लिया—

“छी! छी!!” एकू, तीकू बोले।

सभी हंसने लगे। इस तरह सभी बौने भाइयों की कुत्तों से भी दोस्ती हो गई।

फिर सभी बाहर आ गए। बौने भाई आपस में खेलने लगे। कभी-कभी कुत्ते भी उनके साथ खेलते। सभी लोग युवराज का बगीचा और सब्जियों की क्यारियां देखने लगे।

“वाह! कितना अच्छा बगीचा रखा है तुम्हारे माली ने! घास का तो नामोनिशान भी नहीं है! कितने हैल्दी हैं सभी पौधे!”

“हमारा माली तो जरा सुस्त ही है, परंतु ये दोनों भाई पांचू और सातू बहुत मेहनती हैं। इन्होंने ही बगीचे की सारी घास खोद-खोद कर निकाली है। चूहों को भी भगा दिया है।”

तभी किसनू ने आवाज लगाई, “खाना तैयार है!”

सभी खाने की मेज पर आ गए। काफी लंबा-चौड़ा डाइनिंग टेबल था। चारों बौने भाइयों के लिए भी एक तरफ छोटी प्लेटों में खाना डाल कर उन्हें टेबल पर ही बैठा दिया गया।

“किसनू खाना बहुत बढ़िया बनाते हो! मजा आ गया!”

“साहब, गाजर के हलुवे के लिए भी जगह छोड़ना। ढेर-सा बनाया है। युवराज साहब की पसंद का है।”

“स्वीट डिश का खाना तो अलग ही होता है, पेट में।”

“चल जरा सूखी सब्जी तो और ला।”

“अभी लाया।”

सभी ने डट कर खाना खाया, फिर गाजर के हलुवे का मजा लिया। इसके बाद युवराज ने एक बड़ी चॉकलेट के टुकड़े करके सभी को दिए। छोटे-छोटे टुकड़े बौने भाइयों को मिले।

“वाह! आज तो बहुत मजेदार दावत रही।” एक बौना भाई बोला।

“हम भाई मिले हैं तो दावत मजेदार ही होगी।” दूसरा बोला।

इसके बाद बौने भाई तो बाहर चले गए और ये सभी लोग ड्रॉइंग रूम में बैठ कर सलाह-मशविरा करने लगे कि अब और भाइयों को कैसे ढूँढा जाए।

सुकन्या ने कहा, “कुछ गोलमाल भाषा में एक ऐसा ‘ऐड’ देना चाहिए न्यूज पेपर में कि जिसे वही समझ सके, जिसके पास बौने भाई हों।”

“लो सुनो, बौने भाई तो सिर्फ बच्चों के पास ही महफूज रहते रह रहे हैं, और हम जैसे बच्चे अखबार कहां पढ़ते हैं, कि ऐड देखें! हम लोगों में से कौन अखबार पढ़ता है?”

“मैं पढ़ता हूँ,” शमीम बोला, “परंतु सिर्फ खेल का पन्ना!”

“फिर तो ‘ऐड’ देना बेकार ही रहेगा।”

“ठीक कहा तुमने! युवराज! फिर क्या किया जाए?”

“मेरा ख्याल है, कुत्तों को वहीं ले जाया जाए जहां इन बौने भाइयों का वह एक्सीडेंट हुआ था। अरे भाई! सड़क पर जहां नहर का पुल है, जैसा कि मुझे पांचू ने बताया, उसी जगह से ये लोग लुढ़के थे। उधर ही कुत्तों को ले जाकर आस-पास के घरों के दरवाजों को दिखाया जाए। शायद ये कुत्ते कुछ और बौनों की खुशबू सूंघ लें और हमें और बौनों का पता चल जाए।”

“हां! हां!! ये ठीक रहेगा।” शमीम बोला। “कल ही मैं और युवराज बौने भाइयों को ढूँढने उस पुल के पास चलते हैं।”

“और स्कूल कौन जाएगा?” रुखसाना ने पूछा।

“आपा! कल हम स्कूल की छुट्टी कर लेंगे। घर से तो स्कूल के लिए ही चलेंगे, परंतु मैं युवराज के घर आ जाऊंगा। बस एक दिन छुट्टी करने दो!”



“चलो, ठीक है! कुछ अच्छा काम करने के लिए ही छुट्टी मार रहे हो। मटरगश्ती तो नहीं करोगे ना?”

“नहीं! नहीं!! तुम्हारी कसम आपा!”

“चलो, तब मैं अम्मी से कुछ नहीं कहूंगी।”

“तो यह तय रहा कि कल हम दोनों अगले मिशन पर जाएंगे। क्यों युवराज!”

“बिलकुल!”

“अच्छा, अब बौने भाइयों का रहना कहां ठीक रहेगा?”

“अभी तो जैसे हैं, वैसे ही ठीक हैं। बाद की बाद में देख लेंगे।”

“भाई! मेरी बुआ जब जाएंगी, तो तीकू को मैं तभी अपने घर ले जाऊंगी।” रीमा ने कहा।

“चलो, अभी तो तीकू मेरे साथ जाएगा।” रुखसाना ने कहा।

“देखो, मेरे यहां तो चारों के रहने में भी कोई दिक्कत नहीं है। बाकी आप लोगों की मर्जी।” युवराज बोला।

“नहीं! नहीं!! अभी तो तीकू, एकू मेरे साथ ही जाएंगे।”

तीकू, एकू को रुखसाना और शमीम ने ले लिया। सभी अपने-अपने घर चल दिए।

अगले दिन करीब साढ़े दस बजे शमीम युवराज के घर पहुंच गया। फिर दोनों ने तैयार होकर कुछ खाना-पीना भी साथ ले लिया और कुत्तों को लेकर नहर की पुलिया की तरफ चल दिए।

वहां पहुंच कर पुलिया के नीचे की ढलान का निरीक्षण किया गया और अंदाज लगाया गया कि कहां से बौने भाई बह कर गए होंगे, फिर वे कुत्तों को लेकर पास वाली बस्ती में चल दिए।

वहां सभी बड़ी-बड़ी कोठियों की कतारें एक छोटी सड़क के दोनों ओर थीं। सभी के बाहर बड़े ‘लॉन’ या बगीचे थे। गेट भी बड़े-बड़े थे। युवराज और शमीम सभी कोठियों के गेट के पास कुत्तों को ले जाकर उनकी गतिविधियां देखते रहे। सभी कोठियों में कहीं भी कुत्तों ने कोई खास प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। हां, कहीं-कहीं कोठियों में रहने वाले कुत्ते अंदर से भोंकते थे और युवराज के कुत्ते बाहर से उनका जवाब देते थे।

दोनों निराश हो चले थे। फिर दोनों ने एक पेड़ के नीचे बैठ कर साथ लाया हुआ खाना खाया, पानी पिया और कुत्तों को भी खिलाया। कुत्तों को थोड़ी देर के लिए खुला छोड़ दिया गया और दोनों घास पर लेट गए। कुत्ते इधर-उधर सूंघते रहे। थोड़ी देर में दोनों उठ कर कुत्तों के साथ दूसरी तरफ चल पड़े, जिधर बस चार, पांच कोठियां ही थीं।

“चलो, वहां भी आजमा लेते हैं।”

तभी एक कोठी के गेट पर रुक कर दोनों कुत्ते भौंकने लगे। गेट पर अंदर से ताला लगा हुआ था। गेट के अंदर से किसी और कुत्ते के भौंकने की आवाज भी नहीं आई। युवराज ने कुत्तों को शांत किया और दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा, कि क्या किया जाए।

तभी शमीम ने घंटी बजा दी। थोड़ी ही देर बाद एक बूढ़े साहब बाहर निकल आए। “अरे कौन है? किसके कुत्ते हैं? दिन में भी... जरा भी ऊंघने नहीं देते।”

“हम हैं!” युवराज बोला।

“हम कौन?”

“अंकल! हम लोग डॉ. खरे की कोठी ढूँढ रहे हैं।”



उन्होंने पहले एक कोठी में डॉ. खरे की नेम प्लेट पढ़ ली थी।

“क्या आप बता सकते हैं, कि वे किधर रहते हैं?”

“अरे भाई! डॉ. खरे तो उस तरफ रहते हैं। तुम लोग इधर कहां आ गए!”

“अच्छा, हमें प्यास भी लगी है। थोड़ा पानी चाहिए। क्या हम अंदर आ सकते हैं?”

“तुम लोग तो अंदर आ सकते हो, परंतु कुत्तों को बाहर ही बांधना पड़ेगा।”

“ठीक है, अंकल!”

युवराज ने दोनों कुत्तों को जब बाहर ही बांध दिया, तब गेट खुला और दोनों अंदर चले गए।

“आओ, अंदर आओ। पीने के लिए पानी चाहिए ना?”

“हां! हां!! अंकल! यह बोतल भरनी है।”

“ठीक है, लाओ।”

दोनों ड्रॉइंग रूम में बैठ गए। अंकल किचन से पानी की बोतल भर कर ले आए।

“थोड़ा पानी पीएंगे भी अंकल!”

तभी बैड रूम से आवाज आई, “कौन आया है?” यह कहते-कहते एक वृद्धा बाहर आ गई। दोनों खड़े हो गए।

“अरे, बैठो-बैठो बेटा!”

“आंटी क्या आप दोनों ही इतने बड़े घर में रहते हैं?”

तभी अंकल दो गिलास भर कर पानी के ले आए। दोनों ने गिलास ले लिए।

“हां बेटा! हम दोनों ही हैं। हमारा बेटा तो विदेश में है, बेटी शादी करके मुंबई में रहती है। बस हम दोनों बूढ़े-बुढ़िया यहां रहते

हैं। बेटा! हर महीने पैसे भेज देता है। वैसे इनको भी पेंशन मिलती है। पैसों की तो कोई किल्लत नहीं है। बस अकेलापन खलता है।”

“तो खाना कौन बनाता है?”

“सुबह दो-तीन घंटे के लिए एक लड़की आती है। वह ही जरा सफाई करती है, फिर दोनों टाइम का खाना बना जाती है।”

“परंतु आप लोगों का बगीचा तो बहुत साफ-सुथरा है! क्या कोई माली भी है?”

“नहीं तो, माली तो नहीं है। बस इन्हें बागवानी का शौक है। ये ही लगे रहते हैं।”

“परंतु इतना साफ-सुथरा बगीचा है आपका! खरपतवार का तो नाम भी नहीं है!”

“हां-हां ये ही करते हैं।”

तभी शमीम उठ कर दीवारों पर टंगी हुई पुरानी पारिवारिक तस्वीरें देखता हुआ बैड रूम की तरफ चल दिया।

युवराज ने दोनों को बातों में लगाए रखा। शमीम ने बैडरूम में इधर-उधर नजर घुमाई। पहले तो कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर उसने एकदम से बैड रूम की अलमारी खोल दी। देखा तो दो बौने भाई अलमारी के नीचे वाले खाने में दुबके हुए बैठे थे। उसने चीख कर युवराज को आवाज दी। “जल्दी इधर आओ देखो तो यहां।”

युवराज के पीछे-पीछे दोनों बूढ़े भी कमरे में आ गए। युवराज ने बौने भाइयों को देखा तो बोला, “अंकल! सच्ची बात तो यह है कि हम लोग इन्हीं को ढूंढने यहां आए थे। हमारे पास इनके चार भाई और हैं।”

“अच्छा! परंतु ये तो बहुत अच्छे हैं! हम इन्हें नहीं ले जाने देंगे। ये तो हमारे बच्चों जैसे हैं।”



“नहीं! नहीं!! अंकल! आपकी मर्जी और इन भाइयों की मर्जी के बिना हम इन्हें कहीं नहीं ले जाएंगे।”

“हम तो आपका इतना साफ-सुथरा बगीचा देख कर ही समझ गए थे कि यह इन्हीं भाइयों ने किया होगा।” शमीम बोला।

“अरे बेटा! ये तो हमारी बहुत सेवा करते हैं। सारा घर करीने

से रखते हैं। कभी-कभी मेरे और इनके सिर की मालिश भी कर देते हैं। ये हमारा बहुत ख्याल रखते हैं। इन्हीं की वजह से हमें अपने बच्चों के यहां न होने की कमी खलती नहीं है। इनके कहने पर ही हमने इन्हें छुपा कर रखा है और किसी को भी इनके बारे में नहीं बताया।”

“अंकल! हमारे पास भी जो बौने भाई हैं, हमने भी उनके बारे में किसी को नहीं बताया है। हम लोग तो बस यह चाहते हैं कि ये सभी खुश रहें और सभी भाई एक-दूसरे से मिल जाएं।”

“ठीक है बेटा! यह तो बहुत पुण्य का काम है, परंतु हमारा मन इनको छोड़ने का नहीं हो रहा है।” आंटी बोलीं।

“तो ठीक है, हम सभी भाइयों को आप के घर ही ले आते हैं, परंतु आपको सभी को गोद लेना पड़ेगा।” शमीम ने मजाक में कहा।

“हां! हां!! गोद ले लेंगे।” आंटी बोलीं।

“सोच लो आंटी! फिर तो आप को अपनी जायदाद का हिस्सा भी देना पड़ेगा!” शमीम ने फिर हंस कर कहा। यह सुन कर सभी हंस पड़े। फिर आंटी जरा सीरियस हो गई।

“अरे मैं तो मजाक कर रहा था आंटी!”

“तो अंकल! आप इजाजत दें तो हम इनको इनके भाइयों से मिलवाने ले जाएं? दो दिन बाद ही छोड़ जाएंगे। हां, इनके नाम क्या-क्या हैं?”

“इनके दोऊ और चारू नाम हैं। हमारा मन तो नहीं मानता इनको एक दिन के लिए भी छोड़ने का! क्यों दोऊ! चारू! इनके साथ जाना चाहोगे?”

“नहीं दादू! हम लोग तो आपकी सेवा करना और आपके साथ

ही रहना चाहते हैं, परंतु हम अपने भाइयों से भी जरूर मिलना चाहेंगे। हाय! कितने अच्छे दिन थे, जब हम सभी भाई मिल-जुल कर, गौरी मां के घर रहते थे। वहां का रूखा-सूखा खाकर भी उनके प्यार और सभी भाइयों के मिल कर रहने में कितना सुख था!”

“तो बेटा! जाओ। दो दिन के लिए इनके साथ हो आओ। मुझे यकीन है, तुम लोग अपने दादू-दादी से मिलने वापस जरूर आओगे। क्यों क्या कहती हो कमला?”

दादी कमला की आंखें भीग आईं। “अरे, हम अपना ही सुख देखते रहेंगे या इन बच्चों के बारे में भी सोचेंगे? आप जानो, अपने भाई-बांधवों से मिल कर कितना अच्छा लगता है! जाने दो इन्हें।”

“ठीक है बेटा! ले जाओ इनको।”

दोऊ और चारू ने आगे बढ़ कर दादा-दादी के पांव छुए। उनकी देखा-देखी शमीम और युवराज ने भी उनके पांव छुए और एक-एक भाई को जेब में रख कर बाहर चल दिए।

बाहर आकर उन्होंने कुत्तों को खोला और सभी चल पड़े। रास्ते में एक जगह एकांत में रुक कर वे कुछ देर के लिए आराम करने बैठ गए। कुत्तों को जरा दूर बांध दिया गया। फिर उन्होंने जेब से दोनों बौने भाइयों को बाहर निकाल कर जमीन पर छोड़ दिया। शमीम ने उनसे पूछा, “तुम लोग वहां पहुंचे कैसे?”

चारू बोला, “मैं नहर में जरा-सा दूर ही बह कर दूसरे किनारे पर लगा। बड़ी मुश्किल से नहर की चढ़ाई चढ़ कर बाहर आया, फिर मैं और भाइयों को आवाजें देने लगा कि आस-पास कोई और होगा तो वहां आ जाएगा। जरा देर में दोऊ भी आवाजें देता हुआ मेरी तरफ आ गया। हम दोनों मिले तो कुछ तसल्ली हुई। फिर हम लोग देर तक और भाइयों को आवाजें देकर इधर-उधर दूढ़ते रहे,



परंतु हमें कोई भी और भाई नहीं मिला। कुछ दूर ही स्ट्रीट लाइटें दिखाई दे रही थीं। हम लोग उधर ही चल पड़े।”

“अच्छा, फिर?”

“वहां बड़ी कोठियों की लाइनें थीं। हमने दो-चार कोठियों के गेट देखे। फिर एक कोठी के गेट के नीचे से होकर अंदर चले गए।

जरा-सा खटका हुआ कि अंदर से एक कुत्ता भौंकने लगा। हम लोगों को वहां रहना ठीक नहीं लगा और हम वापस बाहर आ गए। फिर दूसरी तरफ की कोठियों में से एक में घुस कर वहां का जायजा लेने लगे। उस कोठी के पीछे एक आउट हाउस था। उसमें तीन-चार छोटे बच्चे और उनके मां-बाप सो रहे थे। वे शायद उस कोठी में काम करते होंगे। हमने आपस में सलाह की, कि वहां रहना भी ठीक नहीं होगा। उस कोठी में तो काम करने वालों के ही इतने बच्चे हैं। उनसे छुप कर हम लोग कब तक रह पाएंगे। हम लोग फिर बाहर आ गए।”

“यह तो बहुत समझदारी का काम किया तुम लोगों ने! अच्छा फिर?”

“फिर हम दो-तीन कोठियां छोड़ कर इन दादा-दादी वाली कोठी में घुसे। यहां आउट हाउस खाली था। रात हम उसी में ठहर गए। सवेरे हमने देखा कि कोठी के बरामदे में दो बुजुर्ग दादा-दादी जैसे लोग बैठे थे और चाय पी रहे थे। दोऊ ने कहा, ‘लगता है हम लोग ठीक जगह पर आ गए हैं।’ तब मैंने दादू को आवाज लगाई। दादू ने इधर-उधर देखा और दादी से पूछा कि उसने भी कोई महीन-सी आवाज सुनी क्या? तभी दोऊ ने कहा, ‘हम यहां नीचे हैं।’

उन दोनों ने नीचे देखा तो हैरानी से हमें देखते ही रह गए। वे कुछ बोल ही नहीं पाए। मैंने उनसे कहा, ‘दादू! हम दोनों मुसीबत के मारे हैं। नहर में बह कर किनारे लगे और भटक कर इधर आ गए हैं। आप हमारी रक्षा करें और हमें अपने साथ रहने दें। हम लोग आपका जो भी काम हमसे बन पड़ेगा करते रहेंगे।’

तब आंटी बोलीं, “आओ! आओ!! पास आ जाओ!”

हम लोग जरा उनके पास गए तो उन्होंने हमें उठा लिया, “अरे! ये तो नन्हे-नन्हे बच्चे ही हैं! सभी नैन-नक्श छोटे बच्चों जैसे हैं! बोलते कितना मीठा हैं! ये तो हमारे साथ ही रहेंगे। क्यों? क्या कहते हो?”

“हां! हां!! ठीक है। हम लोगों का भी मन लगा रहेगा।”

तभी दोऊ ने उनसे कहा, “दादू! आपको हमें अपने पास छुपा कर रखना होगा। अगर और लोगों को हमारे बारे में पता चल गया तो यहां भीड़ लग जाएगी। फिर न जाने हमारा क्या हो।”

“हां! हां!! ठीक कहते हैं ये दोनों,” दादी बोली। “नहीं बेटा! तुम लोग हमारे साथ ही रहोगे। हम लोग तुम्हारे बारे में किसी को कुछ नहीं बताएंगे, परंतु तुम्हें भी छुप कर रहना होगा। अच्छा, तुम लोग खाते-पीते क्या हो?”

“वही जो आप लोग खाते हैं।”

“तो यह चाय और रस्क खा लोगे?”

“क्यों नहीं दादी! हमें तो बहुत भूख लगी है।”

“अरे जाओ भीतर से कुछ ढूंढ लाओ, जिनमें इन्हें चाय दे दें।” उन्होंने दादू से कहा।

दादू भीतर गए और शायद सोचते रहे कि क्या लाएं। आखिर पानी की बोतलों के दो ढक्कन ले आए। उन्हीं में हमें चाय दी गई और रस्क के छोटे टुकड़े भी दिए।

हम लोगों ने चाय पी और उसमें डुबो कर रस्क खाया। फिर चारू ने जरा और चाय मांगी। उन्होंने और चाय दी। वे लोग अपनी चाय पीना तो भूल ही गए थे। बस हमें चाय पीते और रस्क खाते देखते रहे।”

“अच्छा, फिर?”

फिर दादू ने हमारी पूरी कहानी पूछी। मैंने भोलू दादा और गौरी मां से लेकर तब तक की पूरी कहानी उन्हें सुनाई। दादी तो हमारी कहानी सुन कर द्रवित हो उठीं। ‘हाय! इन लोगों के और भाई कहां होंगे! ईश्वर उन्हें सही सलामत रखे!’ फिर उन्होंने हमारे नाम पूछे। हम दोनों ने अपने-अपने नाम बताए। तब वे हमें अंदर ले गईं और बैड रूम की अलमारी में हमारे रहने के लिए जगह बना दी। बाथरूम भी दिखाया। वहां उन्होंने एक थाली में पानी भर कर हमारे नहाने-धोने की व्यवस्था कर दी। इस तरह हम लोग वहीं रहने लगे।”

“तुम लोगों के लिए वहां रहना ही अच्छा रहा।”

फिर वे लोग युवराज के घर की तरफ चल दिए। वे लोग शाम तक युवराज के घर पहुंच गए। शमीम ने अपनी जेब के बौने को युवराज के हवाले किया और उससे विदा लेकर बाहर से ही अपने घर चल दिया।

युवराज घर के भीतर आ गया और उसने आवाज देकर पांचू, सातू को बुलाया, “अच्छा बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूं?”

“बरफी!” पांचू बोला।

“नहीं चॉकलेट!” सातू ने कहा।

“नहीं भाई! इससे भी मीठी और बढ़िया चीज! बूझो तो जानूं!”

दोनों सोचने लगे। तभी दोऊ और चारू कोट की जेबों से उछल-उछल कर अपने भाइयों को देखने की कोशिश करने लगे। पांचू की नजर कोट की जेब पर गई, “अच्छा! अच्छा!! हमारे भाई आए हैं।”

“हां, शाबाश!”

और युवराज ने दोऊ और चारू को जेब से निकाल कर गलीचे पर खड़ा कर दिया।

सभी भाई गलबहियां डाल कर नाचने लगे और गाने लगे—

“युवराज अंकल कितने अच्छे!

उन्हें प्यार करते हम बच्चे।”



वे सभी देर तक गाते और नाचते रहे। युवराज को भी उन्हें खुश देख कर अच्छा लगा।

शमीम ने घर जाकर रुखसाना को सारा किस्सा बताया तो रुखसाना ने कहा, “देखो, अभी एकू, तीकू को मत बताना कि उनके दो और भाई युवराज के घर आ गए हैं, वरना वे रात भर सो नहीं सकेंगे। वैसे भी हम उन्हें सरप्राइज देंगे।”

फिर रुखसाना ने टेलीफोन करके रीमा, राधा और सुकन्या को एकू, तीकू के दो और भाइयों के मिलने का पूरा किस्सा बता दिया।

सभी के जोश का क्या ठिकाना था! उन्होंने अगले रोज ही एकू, तीकू को युवराज के घर ले जाने का प्रोग्राम बनाया। “उनको नये भाइयों, दोऊ और चारू से मिल कर कितना अच्छा लगेगा। फिर सभी को मिलवा कर जैसा कि बूढ़े अंकल आंटी से वादा किया गया था, दोऊ और चारू को वापस उनके पास भिजवाना भी तो होगा।” रुखसाना ने कहा।

“और क्या?” रीमा ने जवाब दिया।

फिर उनमें इधर-उधर की बातें होती रहीं।

अगले दिन शाम को सभी रीमा, राधा, सुकन्या रुखसाना और शमीम, युवराज के फार्म हाउस पर पहुंचे। युवराज ने पहले ही चारों भाइयों, पांचू, सातू, दोऊ, चारू को दूसरे कमरे में भेज दिया था।

रुखसाना ने अपने कोट की जेब से एकू और तीकू को निकाला और बोली, “अच्छा दोनों आंखें बंद करो। तुम लोगों को एक जादू दिखाया जाएगा।”

दोनों ने आंखें बंद कर लीं। तभी युवराज ने इशारा किया और चारों भाई निकल कर उधर आ गए।

“चलो, आंखें खोलो।”

“अरे वाह! दोऊ, चारू भी मिल गए हैं!” तीकू बोला।

एकू, तीकू दोनों दोऊ और चारू के गले मिले। सभी खुशी के मारे नाचने लगे। थोड़ी देर बाद थक कर सभी बैठ गए। पांचू, सातू बोले, ‘अच्छा हम आप लोगों को गाना सुनाते हैं, जो हमने बनाया है।’

“हां! हां!! सुनाओ।”

“सुकन्या दीदी, राधा दीदी

अच्छी दीदी रीमा

इतना प्यार करें हम उनको

नहीं है जिसकी सीमा।”

“वाह! भाई वाह!! क्या बढ़िया गाना बनाया है।” सभी ने ताली बजाई।

तभी रुखसाना बोली, “अच्छा! अच्छा!! राधा, रीमा, सुकन्या सभी अच्छी हैं। खराब तो रुखसाना दीदी हैं! हैं ना?”

“नहीं! नहीं!! रुखसाना दीदी का भी गाना हमने बनाया है। सुनो दीदी! आपको क्या करना है—

“कितनी अच्छी, कितनी प्यारी

आपा हैं रुखसाना

इनके पीछे-पीछे गाएं

हम सब मिल कर गाना।”

“अरे वाह! अब तो रुखसाना आपा आपको गाना, गाना है और सभी आपके पीछे-पीछे गाएंगे।”

तभी युवराज बोला, “ठीक है भाई! दीदियां, आपा सब अच्छी हैं। हम लोग तो तुम्हारे कुछ भी नहीं हैं।”

तो दादा आप अपना गाना भी सुनो—

“यूवी दादा, कितने अच्छे  
अच्छे शमीम भाई  
दोनों आज खिलाएं सबको  
बढ़िया कोई मिठाई।”

“अरे वाह! कमाल कर दिया इन छोटुओं ने तो। अब तो पहले रुखसाना आपा को गाना, गाना है, फिर शमीम और युवराज सबको मिठाई खिलाएंगे।”

“खिलाएंगे, खिलाएंगे, खिलाएंगे।” सभी चिल्लाए, सिवाय शमीम और युवराज के।

“गाएंगी, गाएंगी, गाएंगी।” युवराज और शमीम बोले।

“ठीक है, ठीक है! चलो बच्चो! मैं गाना गाती हूं। पीछे-पीछे सब गाएंगे। अच्छा, सोच लूं कौन-सा गाना गाऊं! हां—

“उठे सबके कदम, देखो रम पम-पम  
अजी! ऐसे गीत गाया करो  
कभी खुशी, कभी गम टारा रम पम-पम  
हंसो और हंसाया करो।”

सभी ने आपा की लाइनों को दोहराया। फिर तो गाने का ऐसा समा बंधा, कि सभी देर तक गाते रहे।

गाने के बाद रुखसाना बोली, “भाई! मिठाई नहीं, युवराज अंकल चॉकलेट खिलाएंगे।”

“हां, यह ठीक रहेगा! मेरे पास तो चॉकलेट का पूरा स्टॉक रहता है।”



युवराज अपने बैड रूम से चॉकलेट का डिब्बा ले आया। सभी को एक-एक चॉकलेट मिली। बौने भाइयों को भी छोटे-छोटे टुकड़े मिले। तभी किसनू सभी के लिए गर्म-गर्म पकौड़े बना कर ले आया। सभी चटनी के साथ पकौड़े खाते रहे और बातें करते रहे।

उधर बौने भाई दूसरे कमरे में जाकर अपना सुख-दुःख और



आप बीती सुनाते रहे। थोड़ी देर बाद बौने भाई छुपन-छुपाई का खेल खेलने लगे। खेलते-खेलते उस कमरे में भी आकर जगह-जगह छुपने लगे, जहां ये सभी बैठे थे।

सभी उनका खेल भी देखते रहे और बातें भी करते रहे। तभी तीकू और एकू में कहा-सुनी हो गई, “तुम चींटिंग करते हो। वहां से देख रहे थे, कि मैं कहां छुप रहा हूँ?”

“नहीं, मैंने नहीं देखा। मैंने तुम्हें वैसे ही ढूंढा है।”

“चल हट, झूठा कहीं का!”

“तू झूठा, तेरी दीदी झूठी!”

“तेरी दीदी झूठी!”

“मेरी दीदी को झूठी कहता है?”

दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए।

“अरे! अरे! यह क्या हो रहा है? हमने तो समझा था कि तुम भाई सिर्फ आपस में प्यार से खेलते हो, परंतु तुम तो लड़ते भी हो।”

“नहीं दीदी! यह मुझे कुछ भी कह ले, परंतु मेरी दीदी तक क्यों पहुंचा?”

“तू भी मेरी दीदी तक क्यों पहुंचा?”

“अच्छा! अच्छा!! दोनों अच्छे बच्चे एक-दूसरे को ‘सौरी’ कहो!”

“मैं नहीं कहूंगा पहले। इसकी गलती है।”

दूसरा बोला, “अच्छा ‘सौरी’।”

“अब तुम भी ‘सौरी’ कहो उससे।”

“सौरी।”

“हां सभी बच्चे बहुत अच्छे हैं। हमें तो आज पता चला कि तुम लोग भी लड़ते हो।”

सभी हंस पड़े। अच्छा, अब सभी बाहर जाकर खेलो। हम कुछ बात कर लें।

युवराज बोला, “नहर के पास वाले करीब-करीब सभी घर हमने देख लिए हैं। मुझे लगता है दोऊ और चारू के अलावा वहां और कोई बौना भाई नहीं है।”

“तो बाकी भाइयों को कैसे ढूंढें?”

“हो सकता है, वे लोग एक्सीडेंट की जगह से बहुत दूर नहर में बह गए हों।”

“हां, हो तो सकता है।” शमीम बोला।

“तो फिर कल कुत्तों को लेकर नहर के किनारे-किनारे चलते हुए बौने भाइयों को ढूंढते हैं। शायद आगे कहीं मिल जाएं।”

“आगे तो जंगल आ जाता है।”

“हां, हां! मुझे पता है, परंतु बौने भाई बह कर उधर दूर भी जा सकते हैं। हो सकता है कहीं जंगल में फंसे हों? एक बार ढूंढने के लिए तो उधर जाना ही चाहिए।”

“चलो, ठीक है। मैं कल सवेरे फिर आ जाऊंगा।” शमीम बोला।

अगले रोज सवेरे दस बजे शमीम युवराज के घर पहुंच गया। फिर दोनों ने कुछ खाने-पीने का सामान साथ बांधा, कुत्तों को साथ लिया और नहर के किनारे-किनारे कच्चे रास्ते पर बहाव की तरफ चल पड़े। कुत्ते भी साथ-साथ, इधर-उधर सूंघते हुए चलते रहे। करीब दो घंटे चलने के बाद भी किसी बौने भाई का कोई सुराग नहीं मिला।

शमीम ने निराशा भरे स्वर में कहा, “नहीं भाई! इतनी दूर बह

कर नहीं आ सकते वे लोग! हमें वापस चलना चाहिए।”

“यार! नहर के पानी का बहाव तेज है। ये छोटे-छोटे जीव और आगे क्यों नहीं बह सकते? चल, बस पंद्रह-बीस मिनट और आगे चल कर देख लेते हैं।”

“अच्छा, चलते हैं, परंतु जरा सुस्ता तो लें!”

दोनों नहर के किनारे गिरे हुए एक बड़े लट्ठे पर बैठ गए। कुछ नाश्ता-पानी किया गया। कुत्तों को भी पानी दिखाया गया।

“चलो, चलें!”

वे फिर आगे चल पड़े। अभी दस कदम चले ही थे, कि उनके आगे से एक सांप सरकता हुआ निकल गया। दोनों ठिठक कर खड़े रह गए।

“नहीं भाई! आगे जंगल घना होता जा रहा है। अब वापस ही चलें।” शमीम बोला।

“तुम भी यार! एक सांप के गुजरने से डर गए।”

वे फिर आगे चल दिए। करीब दस मिनट आगे चलने के बाद उन्हें रेलवे लाइन दिखाई दी। रेलवे लाइन की पुलिया पर जैसे ही वे लोग पहुंचे, कुत्ते रेत में कुछ सूंघने लगे। तभी शमीम बोला, “अरे देखो तो युवराज! रेत पर छोटे-छोटे पांवों के निशान हैं। जरा ध्यान से देखो।”

दोनों ने झुक कर पैरों के निशान देखे, “हां! हां!! ये निशान तो बौने भाइयों के पैरों के लगते हैं।”

“फिर तो वे इधर आस-पास ही होंगे।”

कुत्ते भी पैरों के निशान सूंघ कर एक तरफ चलने की कोशिश करने लगे।

“कुत्तों के पीछे-पीछे रेलवे लाइन से जरा हट कर दोनों चलने



लगे। कुत्ते जंगल के अंदर एक खोखले मोटे पेड़ के पास जाकर रुक गए और उसी तरफ भौंकने लगे।”

“भाई! यहीं आस-पास ही होने चाहिए बौने। जरा पेड़ के खोखल में तो देखो।”

युवराज ने खोखल में देखा, परंतु कुछ भी दिखाई नहीं दिया। हां, ब्रैड का एक रैपर जरूर मिला उसे।

“यहां तो कुछ भी नहीं है, परंतु यह ब्रैड का रैपर कहां से आया?”

“हटो, मैं देखता हूं।”

शमीम ने भी खोखल में देखा। खोखल के ऊपर की तरफ अंधेरा था। कुछ भी दिखाई नहीं दिया, परंतु कुत्ते उसी तरफ भौंकते रहे।

“तुम्हारे पास टॉर्च हो, तो खोखल में डाल कर देखें।”

“टॉर्च भला मैं दिन में क्यों लाता, परंतु इस ब्रैड के रैपर को देख कर मुझे लगता है कि बौने भाई खोखल के ऊपर की तरफ छुपे होंगे।

युवराज ने आवाज लगाई, “देखो बौने भाइयो! हम लोग तुम्हारे दोस्त हैं। तुम लोगों को तुम्हारे भाइयों से मिलवाना चाहते हैं। इसीलिए तुम लोगों को ढूंढते हुए इतनी दूर आए हैं।”

कोई आवाज वापस नहीं आई। तब शमीम बोला, “हमें पता है कि तुम लोग तेरह भाई हो और पहले एक किसान के घर काम करते थे। तुम्हारे जो भाई हमारे घर में हैं, उन्होंने ही हमें यह बताया है।”

तभी खोखल से एक महीन-सी आवाज आई, “ठीक है, हम नीचे आते हैं, परंतु ये कुत्ते कहां से आ गए। हमें कुत्तों से डर लगता है। पहले इनको दूर ले जाएं।”

युवराज ने कहा, “ठीक है।”

उसने कुत्तों को दूर ले जाकर एक छोटे पेड़ से बांध दिया। थोड़ी देर बाद दो बौने भाई बुरी हालत में बाहर निकल आए। बाहर सूरज की रोशनी से उनकी आंखें चुंधिया रही थीं। उन्होंने आंखों पर हाथ रख लिया। कुछ देर बाद जब उनकी आंखें ठीक

हुई, तो एक बोला, “आप लोग कौन हैं? हमें कैसे ढूंढने आए हैं?”

युवराज ने उन्हें सांतवना दी, “हम लोग तुम्हारे दोस्त हैं, तभी तो तुम लोगों को जंगल में इतनी दूर ढूंढने आए हैं। तुम्हारे भाई हम लोगों के घरों में हैं। तुम लोग डरो नहीं।”

शमीम ने अपने खाने के सामान से बिस्कुट निकाल कर उन्हें दिए। वे छोटे-छोटे टुकड़े करके खाने लगे। फिर शमीम ने पूछा, “पानी पियोगे?” उन्होंने सिर हिला कर ‘हां’ कहा। शमीम ने बोतल के ढक्कन में पानी भर कर दोनों को पिलाया, तब जाकर वे कुछ आश्वस्त हुए।

“अच्छा तुम लोग इतने दिनों तक इस जंगल में कैसे रह लिए? खाने-पीने का क्या किया? मुझे लगता है, करीब एक महीना हो गया है, तुम्हारा वह एक्सीडेंट हुए।”

वे कुछ नहीं बोले तो शमीम ने पूछा, “तुम लोगों के नाम क्या-क्या हैं?”

“मेरा नाम आठू और इसका नाम दस्तू है।”

“शाबाश, और बताओ अपने बारे में।”

“हम लोग तो उम्मीद ही छोड़ बैठे थे कि कोई आप जैसा भाई आकर हमें बचाएगा, परंतु आप लोग तो हमारे लिए भगवान बन कर आ गए।”

“परंतु तुमने बताया नहीं कि इतने दिन इस सुनसान जंगल में तुम लोग जीवित कैसे रहे?”

“हम लोग धारा में बहते चले गए। फिर जब रेल की पुलिया पर नहर का पानी कुछ अटका तो हम लोग छिटक कर बाहर रेत पर गिर पड़े। थोड़ी देर तो वहीं पड़े रहे। फिर नाक से मुंह से पेट का पानी कुछ बाहर निकला तो धीरे-धीरे उठे। चारों तरफ अंधेरा

था। क्या करें? कहाँ जाएं? कुछ समझ नहीं आ रहा था। फिर बाहर आकर सूखी जगह पर बैठ गए। कुछ देर बाद धड़-धड़ करती गाड़ी गुजरी। हम लोगों का डर के मारे बुरा हाल हो गया। फिर सब कुछ शांत हो गया।”

“अच्छा, फिर?”

“रात हम लोगों ने वहीं गुजारी। जब जरा उजाला हुआ, तब



पता चला कि हम लोग जंगल में फंसे हैं। हिम्मत करके उठे और कोई सुरक्षित जगह ढूँढने लगे। भूख के मारे बुरा हाल था, परंतु खाएं क्या? तभी थोड़ी दूर से एक सियार गुजरा। डर के मारे हमारी घिग्गी बंध गई, परंतु उसने हमें देखा नहीं और अपनी राह चला गया।”

“तो फिर?”

“फिर आगे बढ़े तो यह पेड़ मिल गया, जिसमें जमीन से लगा बड़ा-सा खोखल था। हमने उसी में अपना ठिकाना बनाना ठीक समझा। पहले तो नीचे ही घास-फूस इकट्ठी करके डेरा-सा बनाया, परंतु फिर लगा कि यहां तो कोई भी बड़ा जानवर आकर हमें खा सकता है। इसलिए पेड़ के खोखल में ऊपर चढ़ने की हम दोनों ने कोशिश की। चढ़ने का रास्ता मिल गया और हम लोगों ने जरा ऊपर ही अपना ठिकाना बना लिया। फिर हम लोग बाहर खाने की तलाश में निकले, परंतु जंगल में क्या मिलता? एक बेरी की झाड़ी से कुछ कच्चे-पक्के बेर खाए, परंतु उनसे भूख क्या मिटती है? तभी हमें कुछ आदमियों के बातें करने की आवाजें आईं। वे लोग एक छोटी चार पहियों की गाड़ी पर आए थे, जो पटरी पर दौड़ती है, जिस पर चढ़ कर वे लोग पटरी की मरम्मत करते हैं। उन्होंने गाड़ी नहर के किनारे पर रोकी। हम लोग छुपते हुए उनके पास पहुंच गए। वे पांच-छह लोग थे। उन्होंने नहर के पानी से हाथ-मुंह धोए और साथ लाया हुआ कुछ खाना खाया और नहर से पानी पीया। फिर सारा सामान नहर के पास रख कर वे लोग पटरी की मरम्मत करने जरा दूर चले गए।”

“अच्छा, तो फिर?”

“हम लोग इसी मौके की तलाश में थे। उनके सामान से हमें

एक 'ब्रेड' और एक नमकीन का पैकेट मिला। हम दोनों ने घसीट कर पहले तो ब्रेड अपने कोटर में रख ली, फिर नमकीन का पैकेट भी घसीट कर ले आए। कुछ केले भी थे। दो केले भी हम लोग ले आए। फिर हमने जहां से घसीटा था, वे निशान मिटा कर उस पर पत्ते आदि डाल दिए कि उन आदमियों को कुछ पता न चले। इस तरह पंद्रह-बीस दिन के खाने का इंतजाम तो हो ही गया। पानी तो साथ बह ही रहा था। हम लोग अकसर नहर पर जाकर नहाते और पानी पी लिया करते थे।”

“तुम लोग उन आदमियों के साथ गए क्यों नहीं?”

“छह आदमियों के सामने जाते तो पता नहीं वे हमारे साथ क्या सलूक करते। हमें डर था कि सभी को हमारे बारे में पता चल गया तो हम लोगों का भेद रहना मुश्किल होगा। हम तो अपने ऐसे दोस्तों को चाहते थे, जो हमारा राज छुपा कर रख सकें।”

“हां, ठीक है। फिर?”

“फिर क्या? बस उसी खाने से और जंगल के नन्हे फलों और मीठी जड़ों से अपना काम चलाते रहे। जंगल में कई छोटे-छोटे जानवरों से भेंट भी हुई, परंतु हम तो भाग कर छुप जाते थे।”

“और कोई झड़प नहीं हुई?”

एक बार एक जंगली बिल्ली ने हमें देख लिया। हम भागे तो वह भी हमारे पीछे भागी। हम पकड़े ही जाने वाले थे, कि दस्सू को एक खरगोश का बिल मिल गया। वह उसमें घुस गया, बिल्ली उसके पीछे बिल तक गई। मुझे भी मौका मिल गया और मैं भी दूसरी तरफ के बिल में घुसा। शायद वह उसी बिल का दूसरा मुंह था। बिल्ली थोड़ी देर बिल के मुंह पर बैठी रही, फिर निराश होकर चली गई। हमारी जान में जान आई।

“तुम लोग तो बहुत होशियार निकले।”

“जंगल में होशियारी आ ही जाती है! ऐसे ही अकसर चूहे भी तंग करते थे और हमारा खाना खाने आ जाते थे। पहले तो एक मोटा चूहा आया। बड़ी मुश्किल से हम उसे भगा पाए, फिर हम लोगों ने कांटे वाली झाड़ी से दो भाले जैसे औजार बना लिए, जो अभी भी अंदर रखे हैं। उन्हीं से हम लोग चूहों को दूर भगाते रहे।”

तभी दस्सू बोला, “हां, इसने तो एक चूहे की आंख ही फोड़ दी थी।”

“अच्छा! तुम लोग तो बहुत बहादुर हो! कोई और नहीं मिला तुम्हें?”

“अभी पांच-छह दिन पहले ही एक दीदी और एक भैया, मोटरसाइकिल पर आए थे। वे लोग वहीं पुलिया के पास बैठे रहे होंगे, परंतु जब हमें उनका पता चला तो वे लोग वापस जाने के लिए तैयार थे। हम लोग भाग कर उन तक गए। उन्हें आवाज भी दी, परंतु अपनी बातों में उन्होंने हमारी आवाज सुनी ही नहीं और चले गए, लेकिन उनका आधा खाया हुआ चिप्स का पैकेट हमें मिल गया। पिछले दिनों वे ही खाते रहे।”

“अच्छा, तभी हमे वहां पर ब्रेड का रैपर और चिप्स का खाली पैकेट मिला। तुम लोगों ने तो पूरी ब्रेड ही खत्म कर दी!”

“और क्या करते?”

“अच्छा, अब चलें।”

“हां, हां! चलिए।”

शमीम ने एक को और युवराज ने दूसरे बौने भाई को अपने कोट की जेब में डाल लिया, और कुत्तों सहित वापस चल दिए। शाम को युवराज ने घर पहुंच कर सभी भाइयों को आठू और दस्सू

से मिलवाया। उनके फटे हाल मैले-कुचैले कपड़े और उनका बुरा हाल देख कर सभी को दुःख हुआ, परंतु सभी आपस में मिल कर खुश थे। सभी एक-एक करके उनसे गले मिले। फिर वे लोग अपनी-अपनी बातें एक-दूसरे को सुनाने लगे। शमीम ने फोन करके सभी को दो और बौने भाइयों के मिलने के बारे में बताया। इस तरह अब आठ भाई मिल चुके थे।



अगले दिन फिर से युवराज के फार्म पर मीटिंग रखी गई। सभी ड्रॉइंग रूम में बैठ कर सोच-विचार करने लगे कि आगे क्या किया जाए। तब सुकन्या बोली, “यह जरूरी नहीं है कि बौने भाई सिर्फ बच्चों के पास ही मिल सकते हैं। अब उन दोऊ, चारू को देखो। वे दो बूढ़ों के पास मिले।”

“हां, सुकन्या! परंतु तुम कहना क्या चाहती हो?”

“भाई! मैं तो फिर वही सुझाव देती हूं कि एक ऐसा ‘ऐड’ अखबार में देना चाहिए कि जिसे पढ़ कर बस वही जवाब दे, जिसके पास बौने भाई हों।”

“परंतु ‘ऐड’ कैसा होगा?”

सुकन्या ने सोच कर कहा, “देखो, कुछ ऐसा लिखना चाहिए, ‘तेरह सालों के अनुभवी वैद्य जी का क्लीनिक, जहां बहुत बौनेपन का शर्तिया इलाज होता है। संपर्क करें, सो एंड सो’।”

“तेरह सालों से तुम्हारा क्या मतलब है?”

“अरे भाई! तेरह ही तो वे बौने भाई हैं! समझने वाला समझ जाएगा।”

“ठीक है।” रीमा बोली, “वैसे तो तेरह साल का अनुभव अधिक नहीं है, परंतु चलेगा! तो कौन ‘ऐड’ देगा और उसमें टेलीफोन नं. किसका रहेगा?”

युवराज ने कहा, “यह काम मैं कर दूंगा। मैं ‘ऐड’ भी दे दूंगा और अपना टेलीफोन नं. भी, परंतु क्लीनिक की जगह अगर चिकित्सालय लिखा जाए तो कैसा रहेगा।”

“हां, यह ही ठीक रहेगा।”

“तो इस तरह लिखा जाए—

‘तेरह सालों के अनुभवी वैद्य जी का चिकित्सालय,

बहुत ज्यादा बौनेपन का शर्तिया इलाज,  
संपर्क करें, टेलीफोन नं. 2514682.

शाम पांच बजे से सात बजे तक'  
क्यों ठीक रहेगा ना?"

“हां, बिलकुल ठीक!”

अगले दिन ही युवराज ने पहले तो स्थानीय अखबार में यह  
'ऐड' दिया, फिर दोऊ और चारू को अंकल और आंटी के घर  
पहुंचाने के लिए उन्हें फोन किया।

“हैलो अंकल! मैं युवराज बोल रहा हूं।”

“हां भाई! हां! कैसे हैं हमारे दोनों बच्चे, दोऊ और चारू?”

“अंकल वे दोनों अपने भाइयों के साथ बहुत खुश हैं। अगर  
आप की इजाजत हो, तो उन्हें कुछ दिन के लिए और यहां रख लें।”

“अरे भाई! हम लोग उन्हें बहुत मिस कर रहे हैं, परंतु ठीक है!  
अगर उन्हें वहां अपने भाइयों के साथ रहना अच्छा लग रहा है, तो  
जैसा तुम ठीक समझो, करो।”

“अंकल! उन्हें अपने भाइयों के साथ रहने का कुछ और समय  
मिलना ही चाहिए।”

“चलो, ठीक है। दो-चार दिन और वहीं रख लो।”

“मेरी तरफ से और उनकी तरफ से बहुत-बहुत शुक्रिया।  
अंकल और आंटी को प्रणाम!”

“ठीक है। खुश रहो।”

यह भी अच्छा रहा। युवराज ने मन ही मन सोचा।

एकू, तीकू को रुखसाना अपने घर ले गई थी। 'ऐड' लोकल  
अखबार में शनिवार, इतवार और सोमवार को आता रहा। युवराज

तीनों दिन पांच से सात बजे तक शाम को फोन का इंतजार करता  
रहा, परंतु कोई फोन नहीं आया।

मंगलवार को साढ़े पांच बजे एक टेलीफोन आया। किसी आंटी  
की आवाज थी। “क्या आप 2514682 से बोल रहे हैं?”

“हां, हां!” युवराज ने कहा।

“बच्चे! मैं तुम से नहीं वैद्य जी से बात करना चाहती हूं।”

“वैद्य जी तो किसी मरीज को देखने बाहर गए हैं। आप मुझे  
अपना काम बता सकती हैं। मैं वैद्य जी को बता दूंगा।”

“नहीं, काम तो उन्हीं से था।”

“क्या बौनेपन का इलाज करवाना चाहती हैं?”

“हां! हां!! परंतु अपना नहीं किसी और का इलाज करवाना  
है।”

“तो आप मुझे अपना पता और टेलीफोन नं. दे दें। मैं वैद्य जी  
को बता दूंगा।”

“ठीक है! लिखें मेरा पता—12/2 मोती नगर, टेलीफोन नं.  
2532525 है।”

“ठीक है आंटी! मैं वैद्य जी को बता दूंगा।”

मोती नगर! वह सोचने लगा। अरे, मोती नगर में ही तो रीमा  
रहती है! उसी के घर के आस-पास से ही फोन आया होगा। तब  
तो ठीक है! यह बौना भाई भी उधर ही पहुंचा होगा। उसने रीमा  
को फोन लगाया—

“हैलो रीमा!”

“हां युवराज! क्या बात है?”

“अच्छा, तुम्हारा घर मोती नगर में ही है ना?”

“हां! हां!! मोती नगर ही है।”



“तुम्हारे घर का नं. क्या है?”

“12/8 मोती नगर।”

“अच्छा 12/2 में कौन रहता है? क्या तुम बता सकती हो?”

“क्यों क्या बात है?”

“12/2 से किसी आंटी जी का फोन आया था। वे वैद्य जी को पूछ रही थीं, बौनेपन के इलाज के लिए।”



“अच्छा! अच्छा!! तो कुछ ‘रिसपांस’ आया है, ‘ऐड’ का।”

“हां।”

“12/2, अच्छा याद करती हूं...हां याद आया। उसमें तो शायद सरला आंटी रहती हैं। हां! हां!! वही रहती हैं। उनकी एक बेटी भी है, जो उनके साथ रहती है। उसके पापा ‘मर्चेट नेवी’ में काम करते हैं। साल में आठ महीने तो बाहर ही रहते हैं।”

“ठीक है, मुझे सारी ‘हिस्ट्री’ नहीं चाहिए, परंतु हां एक और बौना भाई उन्हीं के यहां पहुंचा होगा। तभी उन्होंने फोन किया है। अब कैसे ‘प्लान’ बनाया जाए?”

“मैं क्या बताऊं? तुम कहो तो मैं उनके घर हो आऊं।”

“नहीं, तुम मत जाना। कल मैं और शमीम ही दिन में जाकर उनसे मिलेंगे। फिर देखते हैं, क्या होता है?”

“ठीक है, जैसा तुम ठीक समझो।” फिर बोली कल सवेरे बुआ जी वापस चली गई हैं। मैं शाम को तीकू को अपने घर ले आऊंगी।”

“ठीक है, तुम रुखसाना से बात कर लो।”

रीमा उसी शाम को तीकू को अपने घर ले आई।

अगले दिन सवेरे करीब ग्यारह बजे युवराज और शमीम सरला आंटी के घर पहुंचे। युवराज ने शमीम से कहा, “तुम बाहर ठहरो, मैं भीतर जाकर आंटी से मिलता हूं।”

उसने काल बैल बजाई।

“कौन?”

“मैं हूं! वैद्य जी के घर से आया हूं।”

“आ जाओ अंदर।”

“अरे! तुम तो उनके बेटे लगते हो। मुझे तो वैद्य जी से मिलना था।”

“हां वैद्य जी ने ही मुझे भेजा है। किसका इलाज करवाना है?”

“वह यहां नहीं है।”

“अच्छा, उसका कद क्या होगा?”

“यही कोई दो फुट। कितना कद बढ़ सकता है?”

“यह तो वैद्य जी ही बताएंगे, परंतु वे तो बहुत छोटे बौनों का इलाज करते हैं।”

“कितने छोटे?”

“यही कोई सात-आठ इंच के।”

“तुमने कभी सात-आठ इंच के आदमी देखे भी हैं?”

“क्यों नहीं? वैद्य जी ने कितनों ही का इलाज किया है।”

तभी आंटी हंस पड़ीं, “सच बताओ, क्या तुम्हारे घर भी कोई बौना, यही कोई सात-आठ इंच का आया है?”

“हां, आया है।”

“अच्छा! तो तुम्हारे घर में हमारे छेकू का भाई होगा। तभी तुमने ऐसा ‘ऐड’ अखबार में दिया है।”

“हां आंटी! आपने ठीक समझा।”

“अरे, मेरे घर भी छोटा-सा छेकू आ गया था, जो हम दोनों मां-बेटी को बहुत प्यारा है। हम भी तो उसके भाइयों को दूँढना चाह रहे थे, परंतु हमें समझ ही नहीं आ रहा था, कि बगैर किसी और को जानकारी दिए, उसे कैसे दूँढें? भला हो तुम्हारा!”

“आंटी! मेरा एक दोस्त बाहर खड़ा है। आप कहें तो उसे बुला लूं।”

“हां! हां!! क्यों नहीं! उसे बाहर क्यों खड़ा कर आए?”

युवराज ने शमीम को भीतर बुला लिया। तभी आंटी ने छेकू को बुलाया। दूसरे कमरे से एक और छोटा-सा बौना भाई निकल कर आ गया।

“अरे भाई छेकू! हम तुम्हारे भाइयों का पता लाए हैं।”

“हां! हां!! मैं आप लोगों की बातें सुन रहा था, परंतु कितने भाई हैं आपके घर?”

“अच्छा अंदाज लगाओ कितने होंगे?”



“दो, नहीं तीन।”

“गलत, पूरे आठ भाई हैं हमारे पास! क्या तुम उनसे मिलना चाहोगे?”

“क्यों नहीं? परंतु...हां मम्मी जी और दीदी कहें तभी।”

“क्यों नहीं बेटा! अगर मैंने तुम्हें तुम्हारे भाइयों से मिलाना न होता, तो टेलीफोन क्यों करती?”

“तो क्या आंटी! हम इसे ले जा सकते हैं?”

“नहीं, अभी नहीं! इसकी पम्मी दीदी स्कूल से आ जाए। तभी मैं इसे भेजूंगी। शायद यह भी दीदी से मिले बगैर न जाना चाहे। क्यों छेकू?”

“ठीक है, मम्मी जी!”

“अच्छा, तुम लोग क्या पियोगे, ठंडा या चाय?” आंटी ने उनसे पूछा।

“नहीं आंटी! अभी कुछ नहीं। फिर कभी।”

“फिर कभी कहां आने वाले हो तुम लोग! मैं तुम लोगों के लिए नींबू पानी लाती हूं।”

“नहीं आंटी! क्यों तकलीफ करती हैं?”

“भाई! तुम लोग इन नन्हे-नन्हे निरीह बच्चों के लिए इतना कुछ कर रहे हो! ऐसे निस्वार्थ भाव से उनकी हर तरह से मदद करना चाहते हो! उनको इसलिए किसी भी कीमत पर और लोगों से छुपा कर रखना चाहते हो, कि इन बौने भाइयों पर कोई मुसीबत न आए! मैं तुम लोगों की ऐसी ऊंची भावनाओं की बहुत कद्र करती हूं। इसलिए तुम्हारे लिए कुछ भी करना मुझे अच्छा लगेगा। मेरी पम्मी भी इस नन्हे छेकू से इसी तरह बहुत स्नेह करती है।”

यह कह कर आंटी किचन में चली गई।

शमीम और युवराज को आंटी की ऐसी बातें सुन कर अच्छा लगा।

तभी छेकू बोला, “आप लोग पम्मी दीदी से नहीं मिले। वे तो कब से इसी फिफ्र में थीं, कि कैसे मुझे मेरे और भाइयों से मिलवाएं! आप लोगों के बारे में जान कर वे बहुत खुश होंगी।”

कुछ देर में आंटी, किचन से एक ट्रे में दो गिलास नींबू पानी और प्लेट में कुछ मिठाई लेकर आ गई।

“अच्छा, लो मुंह मीठा करो। हमारे छेकू के इतने और भाइयों के मिलने की खुशी में!”

दोनों ने एक-एक मिठाई का टुकड़ा और नींबू पानी का गिलास ले लिया। “और आंटी आप?”

“नहीं मेरा गला खराब है। इसलिए ठंडा नहीं लूंगी, परंतु तुम लोगों के साथ मुंह मीठा जरूर करूंगी।”

आंटी ने मिठाई के एक पीस से छोटा-सा टुकड़ा छेकू को दिया। बाकी खुद खा लिया।

“अच्छा, शुक्रिया आंटी! हमें इजाजत दें। हम लोग कल आएंगे और इसे ले जाएंगे, परंतु शायद 12/8 वाली रीमा आज आए। आप उसे जानती हैं। उसके घर भी एक बौना भाई आ गया था। रात को ही शायद वह आपके पास आए।”

“हां! हां!! जानती हूं मैं रीमा को! पम्मी की सहेली है। यहीं दो कदम पर तो रहती है!”

“तो ठीक है, हम लोग चलते हैं।”

दोनों चल दिए।

रात को सात बजे ही रीमा ने आंटी के घर की कॉल बैल बजाई। पम्मी ने ही दरवाजा खोला, “आओ! आओ रीमा! मैं तुम्हारा ही

इंतजार कर रही थी।”

दोनों भीतर आ गई, “अच्छा, जरा जल्दी से हमारे तीकू के भाई के दर्शन तो कराओ।” रीमा बोली। फिर उसने अपनी कोट की जेब से तीकू को निकाल लिया और उसे नीचे खड़ा कर दिया।

“वाह! भाई वाह! यह तो बिल्कुल हमारे छेकू जैसा है।” पम्मी ने आवाज लगाई, “छेकू! देखो तो कौन आया है हमारे घर?”

तभी आंटी छेकू को लेकर ड्रॉइंग रूम में आ गई। “ईश्वर की माया भी अद्भुत है! दोनों बिल्कुल एक जैसे हैं।”

उन्होंने छेकू को भी नीचे रख दिया। दोनों भाई गले से लिपट गए। दोनों की आंखें भर आईं। सभी यह दृश्य देख कर द्रवित हो गए। फिर थोड़ी देर में सब सामान्य हो गया।

“अच्छा रीमा! तुम इन सबको पहचानती कैसे हो और इनके नाम किसने रखे?”

तभी तीकू बोल उठा, “जब हम किसान दादा के घर थे, तो उनकी बीवी, गौरी मां ने हमारे नाम रखे और पहचान के लिए सभी की कमीजों की जेब पर अलग-अलग रंग के धागों से निशान बना दिए थे। वैसे हम लोग तो सभी के नाम जानते हैं और पहचानते भी हैं।”

रीमा बोली, “अब हम भी इनको कुछ न कुछ शक्ल से पहचान गए हैं, क्योंकि चाहे कितने भी छोटे हों ये लोग, परंतु कुछ न कुछ रंग, नैन-नक्श का फर्क तो है ही। आवाज भी सभी की कुछ अलग है और कपड़े भी हर किसी के अलग हैं।”

“हां, ध्यान से देखा जाए तो पहचान हो सकती है।” पम्मी ने कहा। फिर बोली, “रीमा! तुम नहीं जानती कि मुझे कितनी खुशी हो रही है, अपने छेकू को उसके भाइयों से मिलाने में! तुम लोगों ने

बहुत अच्छा काम किया है। खैर अब इसे दूसरे और भाइयों से भी मिलवाना है।”

“ठीक है, परंतु अभी तो देर हो रही है। तीकू को लेकर चलती हूं। कल-परसों ही इसे और भाइयों से मिलवाने युवराज के घर चलेंगे।”

“मेरी मानो तो तीकू को आज यहीं रहने दो। दोनों भाई पुरानी बातें करके खुश होते रहेंगे।”



“चलो, यही ठीक है। क्यों तीकू! यहीं रहोगे रात को?”

“हां दीदी! हम दोनों साथ सोएंगे और खूब बातें करेंगे! फिर आप नजदीक ही तो हैं।”

“अच्छा, बाय आंटी! पम्मी! मैं चलती हूं।”

रात को आंटी और पम्मी देर तक दोनों भाइयों से बातें करती रहीं। आंटी ने तीकू से पूछा, “तुम रीमा के घर कैसे पहुंचे?”

तीकू ने सारा किस्सा बताया। फिर उन्होंने युवराज और शमीम के बारे में पूछा। तीकू सब बताता रहा। छेकू बोला, “मैं भी युवराज भैया के घर जाऊंगा। सभी से मिलूंगा। वाह! यह तो मेरा सपना सच हो गया!”

तभी एकाएक तीकू ने पूछा, “आंटी! पम्मी दीदी के पापा कहां हैं?”

तीकू के ऐसा सवाल पूछने पर दोनों हैरान रह गईं।

“तुम्हें पता है, हर बच्चे के मम्मी-पापा होते हैं?”

“हां! हां!! हमको गौरी मां ने बताया था, कि उनके तो कोई बच्चा नहीं है, परंतु और घरों में बच्चे होते हैं। उनके मम्मी-पापा भी हर घर में होते हैं, तभी उनके बच्चे होते हैं।”

“अरे, तुमको तो बहुत कुछ पता है! पम्मी के पापा दूर समुंदर में गए हैं। वहां वे अपने साथियों के साथ बहुत बड़ा पानी का जहाज चलाते हैं।”

“समुंदर क्या होता है? और पानी का जहाज क्या है?” तीकू ने पूछा।

“अरे, तुम्हें कैसे समझाऊं? समुंदर में दूर-दूर तक जहां भी नजर जाती है, पानी ही पानी होता है। बहुत गहरा पानी! जितनी

पूरी जमीन है, उससे भी ज्यादा पानी होता है। जैसे जमीन पर गाड़ियां चलती हैं, वैसे ही पानी में जहाज चलते हैं। वे कई तरह का सामान दूर-दूर तक ले जाते हैं। आदमियों को भी एक देश से दूसरे देश ले जाते हैं।”

“देश! ये देश क्या होते हैं?”

“अरे बच्चे! क्या बताऊं, देश क्या होते हैं! ईश्वर ने तो पूरी धरती एक ही बनाई थी। कहीं कोई लकीर नहीं खींची थी, परंतु हमारे जैसे आदमियों ने जमीन को बांट कर अपने-अपने गुटों के लिए कब्जा कर लिया, जमीन के उन्हीं हिस्सों को देश का नाम दिया हम लोगों ने। हर देश की सरहद तै कर दी गई और उसके अंदर बस उसी के लोगों की गर्जी या हकूमत चलती है। हर देश के लोग अपने देश को दूसरे से बेहतर और सच्चा मानते हैं। हर देश ज्यादातर अपने बारे में, अपनी तरक्की के बारे में, अपने देशवासियों के आराम और उनकी खुशहाली के बारे में ही सोचता है, चाहे इसके लिए दूसरे देश के लोगों को निचोड़ना ही क्यों न पड़े। खैर तुम ज्यादा समझ नहीं पाओगे।

“हां, ये तो बहुत ऊंची बातें हैं। मेरी समझ में नहीं आतीं, परंतु फिर तो ये सभी देश अपनी सरहद में आराम से रहते होंगे?”

“अरे कहां आराम से? ये देश आपस में लड़ते-झगड़ते भी रहते हैं। एक-दूसरे को जान व माल का नुकसान भी पहुंचाते रहते हैं। जाने कैसे-कैसे मारने और नुकसान पहुंचाने के बम आदि बना लिए हैं, परंतु शायद अपने मतलब के लिए कुछ देश दूसरे देशों की मदद भी करते हैं और दोस्ती का दम भी भरते हैं। ये सब राजनीति की बातें हैं। तुम नहीं समझोगे। चलो जाने दो, अब नींद आ रही है।”

आंटी और पम्मी बत्ती बुझा कर लेट गईं। पम्मी हैरान थी कि

ये छोटे-छोटे जीव कैसी-कैसी बातें सोचते हैं। वह देर तक उनके बारे में सोचती रहीं।

इधर तीकू और छेकू की खुसर-पुसर भी चलती रही।

अगले दिन फोन पर यही तय हुआ कि सभी को इतवार के दिन युवराज के फार्म हाउस पर मिलना है। वहीं सभी बौने भाई मिल लेंगे और बाकी भाइयों को ढूंढने की योजना भी बनाई जाएगी। इस बीच अगर और कोई फोन काल आ गई तो सब को इत्तला कर दी जाएगी।”

इतवार को दस और ग्यारह बजे के बीच सभी सहेलियां और शमीम बौने भाइयों को लेकर युवराज के फार्म हाउस पहुंच गए। रीमा के साथ पम्मी भी आई थी। सब बौने भाई छेकू से मिल कर खुश हो गए और बाहर खेलने चले गए।

रीमा ने पम्मी का सभी से परिचय करवाया।

युवराज ने कहा, “बौने भाइयों को ढूंढने के ‘क्लब’ में पम्मी का स्वागत है।” सभी हंसने लगे। फिर संजीदा बातें होने लगीं, कि बाकी चार भाइयों को कैसे ढूंढा जाए।

शमीम बोला, “मुझे एक और ‘आइडिया’ सूझा है। हमारी धोबिन आस-पास के कई घरों में कपड़े देने जाती है। जैसे हमारे घर एक बौना भाई पहुंचा है, हो सकता है कि कोई और बौना भाई भी कहीं आस-पास हो। हम उसके द्वारा पता लगाने की कोशिश कर सकते हैं कि कोई और बौना भाई इधर तो नहीं है।”

“वह कैसे?”

“देखो, मैं धोबिन से कहूंगा, कि मेरी सफेद कमीज के कॉलर के पीछे, जहां ये लोग सभी घरों के निशान बनाते हैं, वहां बौने भाई

लिखवा दे या उन्हीं की स्याही से खुद ही लिख दूंगा। फिर वह कमीज धोबिन हर एक के घर में बारी-बारी देगी।”

“तो फिर?”

“पहले देकर आएगी, फिर थोड़ी देर में वापस उसी घर जाएगी और कहेगी कि गलती से शमीम की कमीज उनके कपड़ों में आ गई है। वे कपड़े लाएंगे, तो उनमें से शमीम की कमीज का निशान



दिखा कर, जिस पर बौने भाई लिखा होगा, कहेगी कि देखो यह कमीज शमीम की है। यह उन्हीं के कपड़ों का निशान है। अगर किसी घर में कोई बौना होगा तो वह उस निशान के बारे में पूछेगा, वरना कहेगा कि हां! हां!! ठीक है, ले जाओ! और उस पर वह कोई खास ध्यान नहीं देगा।”

“धोबिन यह सब क्यों करेगी?”

“अरे भाई! इसके लिए उसे पैसे मिलेंगे।”

“मुझे तो स्कीम से ज्यादा उम्मीद नजर नहीं आती, परंतु यह करने में कोई हर्ज भी नहीं है। कोई मिल गया तो ठीक, कम-से-कम एक और कोशिश तो हो जाएगी।” युवराज ने कहा।

रुखसाना बोली, “ठीक है शमीम! तुम इस पर काम करो, तब तक हम कुछ और भी सोचते हैं।”

युवराज ने फिर कहा, “देखो, नहर के इस पार ही हमने सभी भाइयों को ढूंढा है। हो सकता है, कोई भाई दूसरी तरफ बह कर गया हो या यह भी हो सकता है कि वह नहर में बहा ही न हो। उस पार ही अंधेरे में टटोलता हुआ किसी और के घर चला गया हो। हम लोगों को अब उस पार भी ढूंढना चाहिए।”

“हां! हां!! युवराज का कहना ठीक ही है।” रुखसाना ने कहा।

“तो ऐसा क्यों नहीं करते कि शमीम और युवराज फिर-से कुत्तों को लेकर नहर के दूसरे पार जाएं और सभी घरों को कुत्तों को दिखाएं। शायद इससे कुछ पता चल जाए।”

“अरे नहीं, नहर के उस पार तो छोटे काश्तकारों और गांव में काम करने वालों के छोटे-छोटे घर हैं, जो दूर-दूर हैं। अधिकांश घरों में देसी कुत्ते भी होते हैं। बाहर भी देसी कुत्ते घूमते रहते हैं। वे कुत्ते तो हमारे कुत्तों को देखते ही भौंक-भौंक कर आसमान सिर पर उठा

लेंगे। उधर भला हमारे कुत्तों की क्या चलेगी?”

“फिर क्या करें?”

“अच्छा, ऐसा करते हैं...।” शमीम बोला, “मैं और युवराज खुद ही उस पार जाकर बौने भाइयों की खोज खबर करते हैं। शाम तक आ जाएंगे हम! तुम सभी यहीं मौजमस्ती करो। क्यों युवराज?”

“ठीक है, परंतु हम वहां उनको ढूंढेंगे कैसे?”

“देखो, एक आइडिया है। बौने भाई जिस घर में भी रहते हैं, उसके बगीचे या खेत की पूरी घास अच्छी तरह साफ कर देते हैं। उस तरफ तो सभी लोगों के खेत या बगीचे हैं। हम लोग सभी खेत और बगीचे देखते जाएंगे। जिस बगीचे या खेत में आस-पास के खेतों के मुकाबले बहुत कम घास होगी या बिल्कुल भी घास नहीं होगी, वहीं बौने भाइयों के मिलने की उम्मीद रहेगी।”

“ठीक है! चलो फिर, मैं और तुम चलते हैं।”

शमीम और युवराज चल दिए। नहर के पार पहुंच कर वे एक-एक बगीचा, एक-एक खेत देखते रहे। इस तरह डेढ़ घंटे से भी ज्यादा समय हो गया, परंतु उन्हें कोई भी खेत या बगीचा ऐसा नहीं मिला जिसमें बिल्कुल घास न हो।

जरा सुस्ताने के लिए वे गांव की एक छोटी-सी चाय की दुकान पर चले गए, कि वहां बैठ कर चाय-नाश्ता ही कर लिया जाए और इसी बहाने लोगों से बातचीत भी हो जाए। शायद बौने भाइयों का कुछ सुराग मिले।

वहां बेंचों पर और लोग भी बैठे आपस में गपशप कर रहे थे। ये दोनों उनकी बातें सुनने लगे। तभी दो और आदमी आए,

“भाई! हमारे लिए भी दो चाय जल्दी से बना दो। हमें जल्दी ही बाबा जी के प्रवचन शुरू होने के पहले ही वहां पहुंचना है।” फिर उनमें से एक बोला, “यार! मैं कब से बाबा जी की कुटिया में प्रवचन सुनने के लिए जाता रहा हूं और हमेशा ही पहले पहुंच कर बाबा जी की कुटिया की साफ-सफाई कर देता था। बाबा जी ठहरे मस्तमौला! हमेशा सभी चीजें इधर-उधर बिखरी रहती थीं, परंतु अब कई दिनों से देख रहा हूं, कि बाबा की सभी चीजें, किताबें



और उनका छोटा-मोटा सामान करीने से रखा होता है। बाबा को तो मैंने कभी ऐसा करते हुए नहीं देखा! न जाने कौन मेरे वहां पहुंचने से पहले ही पूरी कुटिया को साफ-सुथरी कर देता है! मजाल है, कि कोई कागज का टुकड़ा या तिनका भी इधर-उधर पड़ा हो!”

दूसरा बोला, “हां! हां!! मैंने भी यह गौर किया है।”

शमीम और युवराज उनकी बातें गौर से सुनते रहे और दोनों ने एक-दूसरे की तरफ अर्थपूर्ण नजरों से देखा।

“भैया। कहां है बाबा जी की कुटिया? क्या हम लोग भी उनका प्रवचन सुन सकते हैं?”

“क्यों नहीं? उनके द्वार तो सभी के लिए खुले हैं। रोज तीन से चार बजे तक शाम को उनका प्रवचन होता है, प्रश्न भी पूछे जाते हैं, फिर कीर्तन होता है। हम लोग वहीं चल रहे हैं।”

“तो हम लोग भी आपके साथ चलते हैं।”

“हां! हां!! जरा चाय पी लें! फिर चलते हैं।”

दोनों ने गुपचुप बात की, कि हो न हो बाबा जी की कुटिया में ऐसे चुपचाप सफाई करने वाला कोई बौना भाई ही होगा।

जब सभी बाबा जी की कुटिया में पहुंचे तो बाबा जी गद्दी पर विराजमान थे। ऐसे ही गपशप चल रही थी। प्रवचन शुरू होने में अभी थोड़ी देर थी। धीरे-धीरे और लोग भी आने लगे।

शमीम और युवराज ने कुटिया के चारों तरफ देखा। वहां की छोटी-सी बगिया वास्तव में साफ-सुथरी थी। “देखो, शमीम! ये बगिया कितनी साफ है! मुझे लगता है कि कोई न कोई बौना भाई यहां जरूर होगा!”

शमीम ने भी ‘हां’ में सिर हिलाया। कुछ देर में ही प्रवचन शुरू हो गया। दोनों प्रवचन सुनने लगे। उन्हें अच्छा ही लग रहा था।



फिर प्रवचन के बाद कुछ प्रश्न पूछे गए। इसके बाद करीब आधे घंटे का भजन-कीर्तन चला। साथ-साथ ही भक्तों द्वारा लाए गए फल, मिठाई आदि का प्रसाद भी सबको बांटा गया। फिर धीरे-धीरे लोग चले गए, लेकिन शमीम और युवराज वहीं डटे रहे। बाबा जी ने उनसे पूछा, “क्यों बच्चो! तुम लोगों को घर नहीं जाना है क्या?”

“बाबा! घर भी जाएंगे, परंतु आप से एकांत में बात करनी है।”

“ठीक है! आओ भीतर। ऐसी भी क्या बात है?”

वे दोनों बाबा जी की कुटिया में आ गए। कुटिया में हर चीज करीने से रखी हुई थी। फर्श भी साफ था।

“हां, अब कहो।” बाबा बोले।

युवराज ने सीधी बात करना ही ठीक समझा, “बाबा! हम किसी बौने भाई की तलाश में यहां आए हैं।”

“अच्छा! अच्छा!! यह बात है! हां भाई! एक बौना बच्चा यहां आया तो था।”

“कहां है वह?”

“बताता हूं, पहले तुम लोग अपने बारे में बताओ, क्योंकि मैंने उससे वादा किया है कि उसके बारे में किसी और को नहीं बताऊंगा, सिवाय उसके जिसे उसके भाइयों की जानकारी हो।”

“हां बाबा! हम लोग इसीलिए आप से एकांत में बात करना चाहते थे। हमारे सभी साथियों के पास अभी तक नौ बौने भाई हैं और हम चाहते हैं कि सभी तरह भाइयों को ढूंढ कर एक बार तो मिलवा दें! फिर जैसा ये लोग चाहेंगे, वैसा ही किया जाएगा। हां, सभी बौने भाई चाहते हैं कि उनके बारे में और लोगों को पता न चले।”

“हां, यही बात है। भाई! जब से यह बौना बच्चा, जिस का

नाम बारहू है, मेरी कुटिया में आया है, मुझे उससे स्नेह हो गया है। वह मुझे कोई कष्ट नहीं देता है। वह अपना सारा काम खुद करता है, बल्कि मेरा काम भी कर देता है। मेरी बगिया की सारी घास उसी ने साफ की है।”

“हां बाबा! ये सभी भाई बहुत मेहनती और अच्छे हैं।”

बाबा ने हां में सिर हिलाया और बारहू को आवाज दी। बारहू एक कोने में पड़े बक्से से निकल आया। उसने छोटी-सी धोती बांधी हुई थी। ऊपर कुरता था और माथे पर तिलक भी लगाया हुआ था। बिल्कुल छोटे बाबा जी जैसा दिख रहा था।

उसकी ऐसी पोशाक देख कर युवराज बोला, “अरे! ये तो बिल्कुल छोटे बाबा जी हैं।”

सभी हंसने लगे। बारहू बोला, “आप लोग तो मेरे लिए बहुत बड़ी खुशखबरी लाए हैं। मैं बक्से में आप की बातें सुन रहा था। कहां हैं मेरे और भाई?”

“वैसे तो वे अलग-अलग घरों में रहते हैं, परंतु आज शाम तक मेरे घर में ही हैं।” युवराज बोला।

“तो बाबा! क्या मैं अपने भाइयों से मिलने जाऊं?”

“अगर ईश्वर की यही इच्छा है, तो जरूर मिलने जाओ बेटा! परंतु वापस बाबा के पास भी कभी-कभी जरूर आना। मेरा मन तुमसे मिल कर प्रसन्न होगा।”

“तो क्या हम इसे ले जाएं?” शमीम ने पूछा।

“जैसी उसकी और आप लोगों की इच्छा!”

“युवराज ने बारहू को उठा कर अपने कोट की जेब में रख लिया। फिर बाबा जी को धन्यवाद तथा नमस्कार कहा।

“सब का कल्याण हो!” बाबा बोले। फिर दोनों चल दिए।



घर पहुंचे तो सभी उत्सुकता से इन दोनों का इंतजार कर रहे थे। इस बीच बौने भाई भी ड्रॉइंग रूम में आ गए।

“क्या हुआ?” रुखसाना ने उत्सुकता से पूछा।

“मिशन कामयाब रहा!”

यह कह कर युवराज ने अपनी जेब से बारहू को निकाल कर

नीचे रख दिया। सभी उसकी छोटी-सी धोती, कुरता और तिलक देख कर अपनी हंसी नहीं रोक पाए। सभी भाइयों ने उसे घेर लिया। पहले तो सभी गले मिले, फिर उसे बीच में खड़ा करके सभी भाई नाचने लगे,

“छोटे-छोटे बाबा आए,  
सबके दिल में आन समाए।”

“बाबा जी! बाबा जी!!

प्रसाद दो बाबा जी!”

सभी को उनका नाच-गाना तो अच्छा लगा, परंतु लड़कियों को अपने घर जाने की जल्दी थी। यह तय हुआ कि कम-से-कम उस रात सभी भाइयों को युवराज के घर ही रहने दिया जाए। यह सुन कर सभी भाई खुश हो गए। फिर सब लोग एक-दूसरे से विदा लेकर अपने-अपने घर चल दिए। उस शाम को युवराज के घर बौने भाइयों का रात देर तक जश्न होना था। युवराज ने किसनू से कहा कि सभी के लिए कोई अच्छी-सी ‘स्वीट डिश’ बना दे। किसनू ने बढ़िया चॉकलेट वाली केक पुडिंग सबके लिए बनाई, परंतु छोटे बाबा बोले, “भाई! मैं तो अंडे वाली चीज नहीं खाऊंगा।”

किसनू उसका ऐसा बाबा जी जैसा व्यवहार देख कर मुस्करा दिया, परंतु उसके दूसरे बौने भाई उसकी ऐसी धर्मनिष्ठा देख कर बहुत प्रभावित हुए।

दो दिन बाद शमीम ने युवराज को फोन किया, “भाई! हो न हो...मुझे लगता है कि बाकी बौने भाई भी नहर के पार ही कहीं होंगे। धोबिन वाली स्कीम तो फेल हो गई। किसी भी आसपड़ोस वाले ने मेरी कमीज के निशान पर कोई ध्यान नहीं दिया।”

“तो क्या करना चाहिए?”

“हम लोगों को जल्द ही उन्हें ढूँढने के लिए फिर-से उस पार जाना चाहिए। रखसाना आपा का भी यही ख्याल है।”

“ठीक है, कल स्कूल से छुट्टी ले लेंगे। तुम मेरे घर जल्दी ही आ जाना! बाकी तीनों भाइयों को ढूँढने के लिए नहर के पार ही चलेंगे।”

“ठीक!”

“अगले दिन ग्यारह बजे शमीम युवराज के घर पहुंच गया। बौने भाई बाहर खेल रहे थे। सभी बहुत मस्ती के मूड में थे, परंतु साथ-साथ बगीचे का काम भी कर रहे थे। उन्होंने युवराज के बगीचे को चमकता हुआ चमन बना दिया था। शमीम ने बौने भाइयों को हैलो कहा तो उनमें से एक बौना बोला—

“हैलो, हैलो, हैलो  
लड्डू पेड़ा खा लो”

दूसरा बोला—

“शमीम भाई आए  
मगर न कुछ भी लाए।”

शमीम उनके शरारत भरे गाने सुन कर मुस्करा दिया। वह रास्ते में खाने के लिए मूंगफली लेकर आया था। उसने जेब से पैकेट निकाला और बोला—

“शमीम भाई आए  
मूंगफली लाए।”

सभी बौने भाई खुश होकर गाने लगे—

“शमीम भाई आए, मूंगफली लाए।”

शमीम ने पूरा पैकेट ही उन्हें दे दिया। सभी पैकेट पर झपट पड़े। वे लोग दोनों हाथों से एक-एक मूंगफली पकड़ कर दांतों से कुतर

कर, उनमें से दाने निकाल कर मजे से खाने लगे। शमीम को उनका ऐसे मूंगफली खाना बहुत मजेदार लगा। तभी एक बौना भाई दूसरों से बोला, “शमीम भाई और युवराज भाई के लिए भी तो मूंगफली छोड़ो! तुम लोग तो भुक्खड़ों की तरह सारी मूंगफली पर झपट पड़े।”

“नहीं, नहीं! तुम्हीं लोग सब खाओ। मैं और युवराज नहर के पार वाले गांव में तुम्हारे और भाइयों को ढूँढने जा रहे हैं। रास्ते में और मूंगफली ले लेंगे।”

एक और बौना भाई बोला—

“शमीम भाई अच्छे  
ढूँढ लाएंगे बच्चे।”

शमीम हंसता हुआ अंदर युवराज के कमरे में चला गया।

शमीम और युवराज नहर पार करके दूसरे गांव पहुंचे। अब फिर से उन्होंने खेतों को अच्छी तरह देखना-जांचना शुरू किया, कि किस खेत में खरपतवार आदि अच्छी तरह निकाली गई है। काफी देर भटकने के बाद आखिर उन्हें पगडंडी के किनारे एक खेत मिल ही गया, जिसमें खरपतवार बहुत ही कम थे। दोनों ने उस खेत को अच्छी तरह घूम-घूम कर देखा। “देखो, शमीम! इस पूरे खेत में खरपतवार बिलकुल नहीं है। उस खेत के पत्तों में कीड़ों के सुराख भी नहीं हैं। यह खेत अलग ही चमक रहा है, जब कि आस-पास वाले खेतों में अच्छी-खासी खरपतवार है। उधर काम करने वाले लोगों से पूछो, कि यह खेत किसका है?”

शमीम उन काम करने वाले लोगों के पास पहुंचा और उनमें से एक से उसने पूछा, “भाई जी! क्या आप बता सकते हैं कि वह खेत किसका है?”

“क्यों, कुछ खास काम है बाबू?”

“खास तो नहीं, परंतु वह खेत बिल्कुल साफ-सुथरा और बाकी खेतों से कुछ अलग-सा दिखाई रहा है। हम इसके मालिक से पूछना चाहते हैं कि कैसे उसने अपना खेत ऐसा साफ रखा है।”

“हां! हां!! ठीक कहा बाबू! हम लोग भी उसका खेत देख कर हैरान होते हैं। दिन में वह कुछ काम भी नहीं करता है। न जाने



कैसे रातों-रात उसका खेत साफ-सुथरा हो जाता है! खरपतवार, कीड़े-मकौड़े बिल्कुल नहीं होते।”

तभी उसके साथ काम करने वाला बोला, “वह खेत, गांव के नुक्कड़ वाले घर में रहने वाले काशी नाथ का हैं।”

“गांव के किस तरफ?”

“पूरब की ओर कोने वाला अकेला घर उसी का है। गांव में किसी से भी काशी नाथ का घर पूछ लें।”

“ठीक है भैया! शुक्रिया!”

दोनों गांव की तरफ चल दिए। वहां पूछ कर सीधे काशी नाथ के घर पहुंचे। घर का दरवाजा बंद था। उन्होंने जरा दरार से झांक कर भीतर देखा तो आंगन में गेहूं बिछा हुआ दिखाई दिया, जिसमें बौने भाई कुछ काम कर रहे थे।

“अरे, ये बौने भाई तो गेहूं साफ कर रहे हैं!”

“हां! हां!! परंतु देखो तो उनके गले में पट्टे बंधे हैं, जैसे उन्हें बांध कर रखा जाता हो।”

तभी एक औरत भीतर से निकल कर आंगन में आई, “अरे कामचोरों! जल्दी-जल्दी काम करो। मुझे कल सवेरे ही गेहूं पिसवाने जाना है, वरना रात को खाना नहीं मिलेगा।”

यह सुन कर शमीम और युवराज सन्न रह गए। इस घर से तो उन्हें छुड़ाना मुश्किल लग रहा था। शमीम बोला, “जो इनसे जबरदस्ती नौकरों का काम करवा रहे हैं, वे भला क्यों आराम से इन्हें हमारे हवाले कर देंगे?”

“और क्या!” युवराज ने कहा।

वे दरवाजा खटखटाने वाले ही थे, कि भीतर से कुत्ते के भौंकने की आवाज आई। कुत्ते ने शायद उनकी उपस्थिति भांप ली थी।

वह भौंकता ही जा रहा था।

“कौन है उधर?” वह औरत चिल्लाई।

शमीम और युवराज ने वहां से खिसक जाना ही ठीक समझा। कुछ दूर आकर दोनों ने सलाह की, कि अगले दिन ही वहां आकर जब कोई घर पर न हो, तभी चुपके से बौने भाइयों को ले जाना ठीक रहेगा।

वे वापस आ गए। “शमीम! कल सवेरे फिर चलेंगे। घर में तभी घुसेंगे जब कोई घर में नहीं होगा। कुत्ते का भी कुछ इंतजाम करना होगा।”

“हां, यही ठीक रहेगा, परंतु उनके बारे में अभी किसी को कुछ बताना मत। उनका हाल सुन कर सबको दुःख होगा।”

“ठीक है!”

अगले दिन सवेरे साढ़े नौ बजे ही शमीम और युवराज काशी नाथ के घर के पास पहुंच गए। काशी नाथ तो शायद कहीं बाहर गया हुआ था, परंतु उसकी बीवी भीतर ही थी। उस दिन वे कुत्ते के लिए भी पूरा इंतजाम करके आए थे। वे दोनों कुछ दूर टहलते हुए काशी नाथ की बीवी के बाहर जाने का इंतजार करने लगे। उन्हें पता चल गया था कि घर में काशी नाथ और उसकी बीवी के अलावा और कोई नहीं रहता है। उनकी बेटी की शादी हो गई थी और वह अपने ससुराल में रहती थी।

उन्हें ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। कुछ देर बाद ही काशी नाथ की बीवी सिर पर गेहूं का कट्टा लिए हुए निकली। कुत्ते को उसने भीतर ठेल दिया और बाहर ताला लगा कर गेहूं पिसवाने चल दी।

दोनों दोस्त पास आ गए। कुत्ता फिर भौंकने लगा। उन्होंने एक गोشت का टुकड़ा भीतर फेंका। कुत्ता उसे खाने में जुट गया। वे जल्दी से एक पोल का सहारा लेकर आंगन में कूद गए। उन्होंने कुत्ते को और हड्डी तथा मांस के टुकड़े दिए। कुत्ता उन्हें खाने में मगन हो गया।

इधर तीनों बौने भाई जो और गेहूं साफ कर रहे थे, इन लोगों को हैरानी से देखते रहे।

“अरे बच्चो! हम लोग तुम्हारे दोस्त हैं। तुम्हारे और भाई हमारे साथ रहते हैं। सभी बहुत खुश हैं, परंतु हमने देखा कि ये लोग तुम लोगों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते।”

“अपनी-अपनी किस्मत है!”

“तुम लोग हमारे साथ चलो। जल्दी!”

“परंतु हमें कैसे पता चले कि हमारे भाई आप लोगों के साथ रहते हैं?”

“देखो, उन्होंने हमें बताया है कि तुम लोग तेरह भाई हो और सबके नाम एकू, दोकू, तीकू, चारू आदि हैं।”

“बस! बस!! हमें पता चल गया है कि हमारे भाई आप लोगों के पास ही हैं। चलिए, हम चलते हैं।”

युवराज ने दो बौनों को अपनी जेब में रखा और एक बौने को शमीम ने तथा उन्होंने कुत्ते को एक केक का टुकड़ा और खाने के लिए डाल दिया। फिर वे आंगन की दीवार फांद कर बाहर आ गए। वे तेज कदमों से अपने घर की तरफ चल दिए।

काफी दूर जाने पर वे एक एकांत स्थान पर रुके और बौने भाइयों को जेबों से बाहर निकाल कर खड़ा कर दिया। फिर उनके गले के पट्टे काट कर खोल दिए, ताकि उनके भाई उनकी ऐसी

बुरी हालत देख कर दुःखी न हों।

पट्टे खुलने पर बौने भाइयों ने मुस्करा कर आजादी की सांस ली और अपने गले पर हाथ फेरा।

युवराज ने प्यार से उनकी तरफ देख कर पूछा, “अच्छा, तुम लोगों के नाम क्या हैं?”

उनमें से एक बोला, “मेरा नाम नोंवू है, इसका नाम ग्यारहू है और उसका नाम तेरहू है।”

“और मेरा नाम युवराज और इनका नाम शमीम भाई है।”

“आप लोग कितने अच्छे हैं!”

शमीम ने फिर पूछा, “तुम तीनों एक साथ वहां कैसे पहुंच गए? क्या तुम लोग नहर में बह कर नहीं गए थे?”

“नहीं!” उनमें से एक बोला। “दरअसल हम लोग नहर के पानी में गिरे ही नहीं, बल्कि वहीं किनारे पर ही बिखर गए। हम लोग घबरा कर अंधेरे में एक-दूसरे को आवाजें देने लगे। बाकी लोगों का तो कोई जवाब नहीं आया, परंतु हम तीनों टटोल-टटोल कर एक-दूसरे से मिल गए। थोड़ी देर वहीं और भाइयों का इंतजार करने के बाद हम लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर इधर गांव की तरफ कच्चे रास्ते पर चल पड़े। जैसे ही गांव नजदीक आया, कुत्तों के भौंकने की आवाजें आने लगीं, हम डर के मारे एक झाड़ी में छुप कर बैठ गए।”

“फिर?”

“फिर जब कुत्तों की आवाजें कम हुईं, तो जरा और धीरे-धीरे, बगैर आवाज किए आगे चले। कुछ घरों को ही पार किया था कि तभी फिर एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आई। हम सब एक घर की नाली से होकर अंदर चले गए। वहां देखा तो बरामदे में चार

बड़े लोग और चार बच्चे सो रहे थे। हमने सलाह की, कि उस घर में रहना ठीक नहीं होगा। वहां तो बहुत-से लोग हैं। वहां छुप कर रहना नामुमकिन-सा है। हम लोग उसी नाली से बाहर आ गए। फिर हमें गांव के एक तरफ एक अकेला-सा घर दिखाई दिया। हम लोगों ने एक-दूसरे की तरफ देखा, फिर हम उस घर की नाली से होकर अंदर चले गए। उस घर में हमें सिर्फ दो ही जने सोते हुए दिखाई दिए। हमें यह घर रहने के लिए ठीक लगा।”

“अच्छा फिर?”

“वहां आंगन में भूसे की बोरियां लगी हुई थीं। उन्हीं में छुप कर हम लोगों ने रात गुजारी, परंतु सवेरे ही उस घर का कुत्ता उन बोरियों की तरफ देख कर भौंकने लगा। मालिक निकल कर बाहर आ गया। उसने एक बोरी हटाई तो हम तीनों छुपे हुए उसे दिखाई दिए। वह हैरान रह गया। उसने कुत्ते को चुप कराया और हमें उठा लिया। ‘अरे! ये इतने छोटे-छोटे बौने कहां से आ गए?’ उसने अपनी बीवी से कहा।

बीवी ने भी बाहर आकर देखा और बोली, ‘ये तो कैसे अजूबे हैं! ऐसे जीव देखने की तो बात क्या, मैंने कभी सुने भी नहीं!’

“तो क्या करें इनका?”

“इन्हें बेच कर अच्छे पैसे मिल सकते हैं।”

“नहीं! नहीं!! हमें बेचना नहीं! हम लोग पहले भी एक किसान के घर में रहते थे। उसके घर का, खेतों का जो भी काम हम से बन पड़ता था, हम मेहनत से करते थे। आप का भी सारा काम हम करेंगे। बस आप हमें अपने घर में रहने दें और हमारे बारे में किसी को न बताएं।” तेरहू बोला।

“तुम लोग तो इतने छोटे-छोटे हो! क्या काम करोगे?”



“हम आपके घर और अनाज भंडार के चूहे भगा देंगे। खेतों से घास निकाल देंगे। आपको हानिकारक कीड़ों से मुक्त करा देंगे। आपका अनाज साफ कर देंगे। गाय-बैलों की मालिश करके उन्हें खुश करेंगे। और भी जो काम आप कहेंगे, हम मन लगा कर करेंगे।”

“ठीक है, अभी इन्हें रख लेते हैं। अगर इन्होंने ठीक काम नहीं किया तो इन्हें बेच देंगे।” उस की बीवी बोली।

“तुम कहती हो, तो इन्हें अभी यहां रहने ही देते हैं।”

इस तरह हम तीनों वहीं रहते रहे और उनका काम मेहनत से करते रहे। उन्हें लगा कि कहीं रात के अंधेरे में हम लोग भाग न जाएं, इसलिए रात को हमें पट्टों से बांध दिया जाता, क्योंकि दिन के उजाले में तो हम बाहर निकलने से रहे।”

“कैसे-कैसे अजीब लोग होते हैं?” युवराज बोला।

दोपहर तक युवराज और शमीम फार्म हाउस पहुंच गए। जब बौने भाइयों को पता चला कि उनके चाकी तीन भाई भी आ गए हैं, तो वहां एक उत्सव जैसा माहौल हो गया। सभी भाई मिल कर खुशी से नाचने गाने लगे। किसनू ने सबके लिए दाल-भात, खीर-पूरी और रायता बनाया। उस दिन उन्होंने पहले की तरह पत्तों में खाने का आग्रह किया।

किसनू पत्ते तोड़ लाया। सभी ने जमीन पर बैठ कर मजे से खीर, पूरी, रायता, दाल-भात आदि खाया और सभी पुराने दिनों की बातें करने लगे।

तभी तीकू ने तेरहू से पूछा, “मैंने सुना है कि जिस घर में तुम लोग थे, उस घर के लोग तुम लोगों को पट्टे पहना कर, बांध कर रखते थे और तुम लोगों से जबरदस्ती काम भी करवाते थे।”

“खैर, काम से तो हम लोग घबराते नहीं हैं, परंतु उन लोगों का हमारे साथ बर्ताव अच्छा नहीं था। उनको हम लोगों पर विश्वास भी नहीं था। इसीलिए रात को हमें वहां पट्टों से बांध कर रखा जाता था, कि रात को हम लोग कहीं भाग न जाएं।”

“तो तुम लोगों ने सब कुछ चुपचाप सह लिया?”

“और क्या करते? परंतु ग्यारहू ने उनके ऐसे बर्ताव पर अपनी तरह से खीज उतारी।”

“अच्छा! क्या किया ग्यारहू ने?”

“एक दिन उस किसान की बीवी का व्रत था। उसने किसान के लिए दाल-भात बना कर पत्तीली में रख दिए और खुद नहाने के लिए चली गई। तभी ग्यारहू ने दाल-भात में ढेर सारा नमक डाल कर अच्छी तरह मिला दिया। फिर हम लोग मियां-बीवी के बीच होने वाले तमाशे की सोच कर मजा लेने लगे। दोपहर को जब किसान खाना खाने के लिए बैठा, तो एक ग्रास ही मुंह में डालने पर थू-थू करने लगा, ‘अरी, इतना नमक डाल दिया है दाल में!’”

“नहीं तो, मैंने तो ठीक ही नमक डाला था।”

“अच्छा, चखो तो जरा!”

“मैं कैसे चख सकती हूं? मेरा तो आज व्रत है।”

“अच्छा, तुम्हारा व्रत है तो तुमने चाहा कि मैं भी कुछ न खाऊं? क्यों, इसीलिए इतना नमक डाल दिया है दाल में? वरना गलती से भी इतना ज्यादा नमक नहीं पड़ सकता है।”

“तुम भी कैसी बातें करते हो? पड़ गया होगा जरा ज्यादा!”

“जरा ज्यादा? यह तो तुमने जान बूझ कर जहर जैसा दाल-भात बना दिया है! तुम नहीं चाहती कि मैं भी खाना खाऊं, क्योंकि तुमने भी आज खाना नहीं खाना है।”

“नहीं खाना तो मत खाओ! तुम्हें तो मेरे हाथ की बनाई हुई कोई भी चीज अच्छी नहीं लगती है।”

फिर दोनों में देर तक चख-चख चलती रही। हम सब छुप-छुप कर उनकी ऐसी लड़ाई का मजा लेते रहे।”

“परंतु तुमने तो सारा दाल-भात बरबाद कर दिया।”

“बरबाद क्यों? वह दाल-भात उन्होंने गाय को खिला दिया! गाय ने तो नमक वाला दाल-भात बड़े चाव से खाया।”

“और नौवू ने जो किया वह भी सुनो।” तेरहू बोला।

“हां, क्या किया उसने?”

“एक दिन हम लोगों को पुराना गेहूं जिसमें घुन ही घुन थे, साफ करने के लिए दिया गया। हम लोगों से कहा गया कि गेहूं में से कचरे के साथ-साथ घुन भी बीनने हैं।”

“अच्छा फिर?”

“अरे भाई! चलते हुए घुन बीनना कोई आसान काम थोड़े ही था। कितने घुन तो हमारे ऊपर भी चढ़ जाते और हमें अजीब-सी सुरसुरी होती। फिर नौवू ने कागज के एक छोटे-से लिफाफे में बहुत सारे जिंदा घुन बंद कर लिए।”

“तो क्या किया उनका?”

“शाम को सब की नजर बचा कर उसने वे घुन किसान और उसकी बीवी की चारपाई पर छोड़ दिए। रात को जब किसान और उसकी बीवी सोने के लिए गए तो थोड़ी देर बाद ही घुन उनके ऊपर चढ़ने लगे। कुछ तो उनके कपड़ों में भी घुस गए। वे सभी जगह खुजलाते हुए उठ कर बैठ गए। हम वह सब देख कर चुपके-चुपके हंसते रहे। फिर उन्होंने अपने पूरे बिस्तर बाहर लाकर अच्छी तरह झाड़े, परंतु फिर भी कुछ घुन उनमें रह ही गए।

अगले दिन किसान की बीवी ने उससे कहा, “देखो जी! पिछले साल के जो दो बोरी गेहूं रह गए थे, उनमें बहुत घुन हो गए हैं। पूरे घर में फैलते ही जा रहे हैं। रात को तो तुम ने देख ही लिया था कि वे हमारे बिस्तरों में भी आ गए थे।”



“तो फिर क्या करूं?”

“दोनों बोरियों को बैलगाड़ी पर ले जाकर जानवरों का दाना बनाने वाले को बेच आओ। घर में तो उस गेहूं के घुन हमारा रहना दूभर कर देंगे।”

“अच्छा, ठीक है।”

दोपहर को ही किसान उन बोरियों को बैलगाड़ी पर लाद कर ले गया। इस तरह हम लोगों की उस घुन बीनने के बेढब काम से जान छूटी।

यह सुन कर सभी बौने भाई देर तक हंसते रहे और नोंवू की ऐसी तरकीब पर उसकी तारीफ करते रहे।

अगले दिन युवराज ने इन तीनों भाइयों की भी कुत्तों से दोस्ती करवा दी। पूरी मित्र मंडली को सभी भाइयों के मिलने की खबर पहले ही करवा दी गई थी।

अगली शाम को ही पूरी मित्र मंडली— रीमा, राधा, सुकन्या, पम्मी, रुखसाना, शमीम आदि सभी युवराज के फार्म हाउस पर पहुंच गए। सभी बौने भाइयों के मिलने की खुशी में उस दिन खूब नाच-गाना और हुल्लड़ हुआ। फिर सभी ने बैठ कर यह तय किया कि इन बौने भाइयों को जब तक वे चाहें युवराज के घर एक साथ रहने देना चाहिए। उसके बाद जो भी जिसके घर जाना चाहे चला जाए। सभी ने इतवार को फिर युवराज के घर आने का प्रोग्राम बनाया कि फुरसत में एक अच्छी पार्टी हो जाए। इस तरह सभी बौने भाई युवराज के घर ही रह गए।

शनिवार को ही तीकू ने युवराज से कहा, “आप लोगों ने हम सभी भाइयों को मिलवा दिया। आप सब कितने अच्छे हैं! हम लोग

हमेशा आप सभी से प्यार करते रहेंगे, लेकिन अब हम लोगों को गहरी नींद आ रही है। शायद हमारा ‘हाइबरनेशन पीरियड’ आ गया है।”

“हाइबरनेशन पीरियड! यह क्या होता है?” युवराज ने पूछा।

“हमें तो इतना ही पता है, कि हम सभी को एक साथ गहरी नींद आ जाती है और हम सब एक लंबे समय के लिए, शायद तीन-चार महीने के लिए सो जाते हैं। उसमें पता नहीं हमारी सांसें



चलती भी हैं या नहीं, परंतु फिर किसी और जगह हम नये सिरे से जीना शुरू करते हैं।

यह सुन कर युवराज चकित रह गया। उसने घबरा कर पूछा, “तुम लोग हम से क्या चाहते हो?”

“हम सब के लिए आप लोग कल ही एक बड़ी-सी लौकी मंगवा कर उसके भीतर से बीज निकाल कर हमें उसमें बैठा कर उसको बंद कर दें। फिर उसे दूर किसी किसान के खेत में गाड़ दें। ईश्वर ने चाहा तो फिर हमारे उस लौकी से बड़ा-सा पौधा निकलेगा और शायद किसी और जगह पर हमारी जिंदगी का एक और चक्र शुरू हो जाए।”

युवराज हैरान-सा उसकी ऐसी विचित्र बातें सुनता रहा।

तभी पांचू बोला, “देखें, हम लोग फिर कहां पहुंचते हैं? और दुनिया हमारे साथ क्या सलूक करती है, परंतु इस जीवन चक्र में जैसा वक्त आप लोगों के साथ गुजरा, वैसा अच्छा वक्त शायद ही फिर हम लोगों को कभी मिले।”

सातू ने कहा, “आप सभी ने हम को जितना प्यार दिया, हमारा ध्यान रखा, इतने झंझटों के बावजूद हम सब को एक बार फिर-से मिलाने के लिए आप लोगों ने जो किया, वह शायद ही कोई और करता!”

दस्तू बोला, “हम सभी को यह भी बहुत अच्छा लगा कि आप लोगों ने हमारा राज किसी और को जानने नहीं दिया; वह भी सिर्फ इसलिए कि हम लोगों को कोई तकलीफ न हो।”

युवराज बौने भाइयों की ऐसी बातें सुन कर भावुक हो गया। वह बोला, “हम सभी ने जो भी किया, अपनी मर्जी से किया। तुम लोग हम सब को बहुत अच्छे और प्यारे लगे। तुम्हारे साथ हमें एक

नई तरह की खुशी मिली। अच्छा, मैं सभी को तुम लोगों की ऐसी नींद में जाने के बारे में बताता हूं।”

युवराज ने सभी को फोन करके पूरी बात बताई। सभी ने कहा कि जैसा ये बौने भाई कह रहे हैं, उनके लिए वैसा ही करना चाहिए। अगले दिन सभी उनसे विदा लेने युवराज के फार्म हाउस पर पहुंच जाएंगे। सभी की रात उदासी में और जीवन के अद्भुत करिश्मों पर सोचते हुए आंखों में गुजरी।

अगले दिन सभी जल्द ही युवराज के फार्म हाउस पर पहुंच गए। सभी के मन भारी थे, परंतु किया क्या जा सकता था! शायद सृष्टि के नियम ऐसे ही होते हैं।

सभी ने एक-एक करके सभी बौने भाइयों को चूम कर प्यार किया। सभी बौने भाइयों ने भी सभी को चूम कर उन्हें विदाई दी। बौने भाइयों की आंखें बंद होती जा रही थीं।

शमीम को बाजार भेज दिया गया, कि वह दूढ़ कर एक बड़ा-सा कद्दू ले आए। किसनू ने खाना खाने के लिए सभी को बुलाया, परंतु उस दिन किसी का भी मन खाने के लिए नहीं हुआ, क्योंकि बौने भाइयों ने भी उस दिन पूर्ण व्रत रखा हुआ था।

शमीम एक बड़ी-सी लौकी रिकशा पर रख कर ले आया। युवराज और शमीम ने मिल कर लौकी को ऊपर से थोड़ा-सा काट कर भीतर के सारे बीज निकाल दिए।

बौने भाई गहरी नींद में जा रहे थे। उनकी सांस भी धीमी होती जा रही थी। सबने सलाह की, कि उनको उसी वक्त लौकी में बंद कर देना चाहिए।

तभी बहुत धीमी आवाज में एक बौने भाई ने कहा, “लौकी में रखने से पहले हमारे सारे कपड़े उतार देना। हम लोग प्राकृतिक

अवस्था में ही अगले चक्र में जाना चाहेंगे।”

युवराज और शमीम ने सभी बौने भाइयों के कपड़े उतार कर उन्हें एक-एक करके लौकी में रख दिया। फिर ऊपर से लौकी को अच्छी तरह से बंद कर दिया गया।

सभी जमीन पर बैठ कर बौने भाइयों की सद्गति के लिए प्रार्थना करने लगे और सुबकने लगे। शाम होने से पहले ही शमीम और युवराज ने लौकी को एक बड़े झोले में डाल दिया।

शाम के पांच बजे शमीम ने सभी लड़कियों से कहा कि वे अपने-अपने घर जाएं। वह और युवराज थोड़ी देर में ही लौकी को लेकर चल पड़ेंगे और जहां भी ठीक लगेगा, कोई अच्छा-सा खेत देख कर लौकी को गाड़ देंगे। आगे ऊपर वाले की इच्छा।

सभी लड़कियां सुबकती हुई अपने-अपने घर चल दीं।

शमीम और युवराज भी अंधेरा होने पर बारी-बारी से झोला उठाते हुए खेतों की तरफ चलते रहे। तीन-चार घंटे चलने के बाद रात को करीब ग्यारह बजे वे लोग एक खेत में घुसे। वहां उन्होंने एक खुरपी से जो वे साथ लाए थे, बड़ा-सा गड़ढा बनाया। फिर उन्होंने आराम से वह लौकी उसमें रख कर उसको अच्छी तरह मिट्टी से ढंक दिया। कुछ देर वहीं बैठ कर दोनों ने उन बौने भाइयों की सलामती के लिए प्रार्थना की। फिर वे भारी कदमों से वापस आ गए। उस रात शमीम युवराज के घर ही सोया।

अगले दिन युवराज ने उन बूढ़े अंकल को फोन पर बौने भाइयों के इस प्रकार ‘हाइबरनेशन’ में चले जाने के बारे में विस्तार से बताया। वे भी उनके लिए प्रार्थना करने लगे और बोले, “प्रकृति के नियम अटल हैं, परंतु मुझे इस बात की तसल्ली है कि तुम सब



लोगों ने उनकी भलाई के लिए जो भी मुमकिन था, वह सब किया। यह अच्छा ही हुआ कि तुम उन दोनों को हमारे घर से उनके भाइयों के पास ले गए। कभी वक्त हो, तो तुम सभी अपने अंकल-आंटी से मिलने जरूर आना।” यह कह कर वे सिसकने लगे और उन्होंने टेलीफोन रख दिया।

“हालांकि हम सबने कसम खाई थी, कि बौने भाइयों की बात हम साथियों में ही रहेगी, किसी और को कुछ भी नहीं बताया जाएगा, परंतु अब उन बौने भाइयों से बिछड़ने के पूरे दो साल बाद मैंने वह कसम तोड़ दी और उन बौने भाइयों की जितनी भी कहानी मुझे पता थी, अपने पहचान के एक लेखक को सुनाई और उनसे आग्रह किया कि हर घटना को सिलसिलेवार लिख दें। उन्होंने ही इस पूरी कहानी को ऐसा रूप दिया है।

क्या करूं, मुझसे रहा ही नहीं गया! कसम तोड़ने की सजा जो भी मेरे साथी मुझे देंगे, मैं वह भुगतने को तैयार हूं।”

बौने भाइयों की शुभचिंतक—

‘रीमा’